चाणक्य

[ऐतिहासिक बीर रसात्मक महाकाव्य]

रचयिता

स्व० दीनानाथ पाठक "बन्धु"

प्रकाशक

मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन

हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

Mithila Research Society

Book source Ishnath Jha Degitized by Vijay Deo Jha

चाणक्य

[ऐतिहासिक वीर रसात्मक महाकाव्य]

स्व० दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

प्रकाशक

मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन,

हनुमानगंज, मिश्रटोला

दरभंगा ।

★ कापी राइट— श्री उपेन्द्र पाठक
दुनही, बखरी बाजार, मुंगेर

★ सम्पादक— पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

★ नवीन संस्करण— जनवरी, १९८५

★ प्राप्ति स्थान— श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'
मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन,
हनुमानगंज, मिश्रटोला
दरभंगा।

★ मूल्य : नौ रुपैया मात्र।

मुद्रक :— कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगा।

पुरोवचन

हितोपदेशकार एक ठाम कहने छथि—

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले
काव्यामृतरसास्वादः सुजनैः सह संगमः

संसार तत्त्वतः विषवृक्ष थिक जाहि ठाम जन्मक चरम परिणति मृत्यु अर्थात् सृष्टिक चरम परिणति प्रलय होइत अछि। जन्मसँ मरणक मध्यजे अवधि अछि ताहिमे रोग-शोक, परिताप, बन्धन, व्यसन, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनायासे एहि शरीरमे प्रवेश कऽ जाइछ, किन्तु गुण समूहक प्राप्तिक हेतु तपः साधना सँह करय पड़ैत छैक। मनुष्यमे स्वतः सद्गुणक समावेश असम्भवे रहैत छैक। तेँ एहि विषवृक्षमे जाहि दू रसपूर्ण फलक कल्पना कयल गेल ताहिमे प्रथम थिक काव्य रूपी अमृतक आस्वादन।

ई अमृत वस्तुतः की थीक ? काव्य मीमांसाकार भारतीय वाङ्मयकेँ दू भागमे विभक्त करैत छथि—शास्त्रं काव्यञ्चेति वाङ्मयं द्विधा। शास्त्र ओ काव्य एहि दूनूमे काव्यकेँ आर बेसी महत्त्व प्राप्त छैक। कारण सत्यं शिवं सुन्दरम् केर समष्टि-रूपे काव्य थिक, जकरा ब्रह्मानन्द सहोदर कहल गेलैक अछि। एहि काव्यक विवेचन अति प्राचीनकालसँ भारतीय मनीषी लोकनि करैत आबि रहल छथि।

एक ठाम कहल गेल अछि—साहित्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः। तात्पर्य जे मनुष्यक हेतु साहित्य, संगीत ओ कला तीनू अनिवार्य वस्तु थिक। तत्त्वतः काव्यमे एहि तीनूक समावेश बूझक चाही। साहित्य व्यापक अर्थमे प्रयुक्त होइछ आ एकरे अन्तर्गत काव्य ओकर एक अंग थिक। साहित्यक जे दू स्वरूप अछि गद्य ओ पद्य ताहिमे छन्दोबद्ध पद्य आ छन्दक बन्धनसँ मुक्त गद्य कहबैत अछि। पद्य जखन तालवद्ध भऽ स्वरक आरोह-अवरोह द्वारा झंकृत कयल जाइछ त संगीत कहबैत अछि।

प्राकृतिक समस्त वस्तुमे एहन कोनो वस्तु नहि अछि जकर उपादेयता नहि होइक अथवा जाहिमे गुणक सत्ता नहि होइक। ई बात भिन्न थिक जे हमरा सभक अल्पबुद्धिमे समस्त पदार्थक गुण बुझबाक शक्ति नहि हो, किन्तु तेँ कोनो वस्तुकेँ गुणहीन बूझब अपने अल्पज्ञताक द्योतक होयत। तेँ सभक उपयोगिता कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य छैक। उपयोगिताक अतिरिक्त एक वस्तु ओहिमे आरो छैक जकरा सौन्दर्य-क नामेँ अभिहित कयल जाइत छैक। एही सौन्दर्यक उपभोग वा उपयोग वा अनुकरण

द्वारा जे अनुभूति होइत छैक ताहि भावक अभिव्यक्ति कलाक रूप धारण करैछ। से कला दू भागमे विभक्त अछि। एक थिक उपयोगी कला आ दोसर थिक ललित कला। विवेचनामे स्पष्टताक हेतु ललित कलाकेँ सेहो दू भागमे विभक्त कयल गेल अछि। एकमे कोनो मूर्त आधारक आवश्यकता होइत छैक आ दोसरमे मूर्त आधारक ओतेक प्रयोजन नहि। एहि मूर्त आधारक मात्राक अनुपातसँ ललित कलामे उत्तम, मध्यम ओ अधमक निरूपण कयल जाइछ। एही विवेचनाक अनुसारेँ काव्यकलाकेँ उच्चतम स्थान प्राप्त छैक। एहिमे केवल अर्थक रमणीयता अथवा वाक्यक रसात्मकता रहैत छैक। एतावता ई सिद्ध अछि जे काव्य—साहित्य, संगीत ओ कला तीनूक समष्टि थिक। अतः एकमात्र काव्यक मर्मक ज्ञाता भेला उत्तर साक्षात्पशुः पुच्छविषाणा हीन: जे भर्तृहरि कहने छथि ताहिसँ लोक मुक्त भऽ जाइत अछि आ ताही कारणेँ काव्यामृत रसास्वादकेँ संसार रूपी विषवृक्षमे रसवान फल कहल गेल अछि।

यद्यपि एहि काव्यक सर्वसम्मत परिभाषा तँ नहि भऽ सकल अछि आ ने सम्भव अछि, तथापि संस्कृत आलोचक लोकनिमे मम्मटक 'काव्य प्रकाश', दण्डीक 'काव्यादर्श', विश्वनाथक 'साहित्यदर्पण' तथा पण्डितराज जगन्नाथक 'रस गंगाधर' प्रामाणिक ग्रन्थमे विशेष मानल जाइत छनि। काव्यप्रकाशकार काव्यक स्वरूप निर्वचन—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणवनलंकृती पुनः क्वापि। अर्थात् जाहि शब्द तथा अर्थमे दोष नहि होइक, गुण तथा अलंकार होइक, कतहु कतहु अलंकार नहियो होइक से काव्य थिक, एहि रूपेँ कयलनि अछि। साहित्य दर्पणकार वाक्यं रसात्मकं काव्यम् अर्थात् रस 'जकर आत्मा छैक एहन जे वाक्य से काव्य थिक' कहने छथि आ रसगंगाधर-कार 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् अर्थात् 'रमणीय अर्थकेँ जे प्रतिपादित करय एहन शब्द काव्य कहबैत अछि।' एवं प्रकारेँ तीनू परिभाषाक गंभीरता बुझबाक हेतु दोष, गुण, अलंकार अथवा रस अथवा अर्थक रमणीयताक तऽहमे जायब आवश्यक अछि। आचार्य दण्डी तँ रीतिरात्माकाव्यस्य अर्थात् 'रीतिए काव्यक आत्मा थिक' सेहो मानैत छथि। किन्तु एतेक विस्तारमे नहि जाय संक्षेपमे सेहो मानव लाघव होयत करैत अछि ओ तेँ काव्य द्वारा जे 'सत्यं-शिवं सुन्दरम्' समष्टि रूपेँ काव्यक विधान करैत अछि ओ तेँ काव्य द्वारा लोकोत्तर आनन्दक प्राप्ति होइत छैक।

एहि काव्यक अनेक भेदमे एक भेद महाकाव्यक थिक महाकाव्य लक्षण अग्निपुराणक ३३७म अध्यायमे 'काव्यादि लक्षण' कहि वर्णन कयल गेल अछि। अग्निपुराणक अनुसार—

सर्गबन्धो महाकाव्यमारब्धं संस्कृतेनयत्
तादात्म्यमजहत्तत्र तत्समं नाति दुष्यति
इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्
मन्त्रदूत प्रयाणाजि नियतं नाति विस्तरम्

शक्वर्याऽतिजगत्याऽतिशक्वर्या त्रिस्टुभा तथा
पुष्पिताग्रादिभिर्वक्त्राभिर्जनैश्चारुभिः समैः
मुक्ता तु भिन्नवृत्तान्ता नातिसंक्षिप्तसगकम
अति शक्वरिकाष्टम्यामेक संकीर्णकैः परः
मात्रयाऽप्यपरः सर्गःप्राशस्त्येषु च पश्चिमः
कल्पोऽति निन्दितस्तस्मिन विशेषानादरः सताम
नगरार्णव शैलर्त चन्द्रार्काश्रमपादपैः
उद्यानसलिल - क्रीड़ा मधुपान रतोत्सवैः
दूती वचन विन्यासैरसती चरितादभुतैः
तमसा मरुताऽप्यन्यैविभावैरति निर्भरैः
सर्व वृत्ति प्रवृत्तं च सर्वभाव प्रभावितम
सर्वरीति रसैः स्पृष्ट पुष्ट गुण विभूषणैः
अतएव महाकाव्यं तत्कर्त्ता च महाकविः
वाग्वैदग्ध्य प्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्
पृथक् प्रयत्न निर्वर्त्य वाग्विक्रमणिरसादवपुः
चतुर्वर्ग फलं विश्वव्याख्यातं नायकाख्यया

एहि विवरणक अनुसार महाकाव्य सर्गबन्ध रचना थिक जाहिमे विभिन्न वृत्तान्त होइक आ से विस्तृत रूपक । शक्वरी, अतिशक्वरी, जगती, अतिजगती, त्रिष्टुप पुष्पिताग्रादि जातिक छन्दक प्रयोग होइत अछि । नगर, वन, पर्वत, चन्द्र, सूर्य, वृक्ष, आश्रम, उपवन, जलक्रीड़ा, मधुपान, उत्सव आदि वर्णन सँ युक्त होइछ तथा समस्त-रीति, वृत्ति एवं रसक समावेश होइछ । यद्यपि उक्त वैचित्र्य रहैत अछि, तथापि प्राण रूपमे रस व्याप्त रहैत अछि । विश्वविख्यात नायकक कथासँ अर्थ - धर्म-काम - मोक्ष चतुर्वर्गक प्राप्ति देखाओल जाइछ । महाकाव्यक आरंभ संस्कृतेसँ कयल जाइछ, तद्भव तथा तत्सम प्राकृतक प्रयोग उत्तम नहि बुझबाक चाही । एहि विवरणसँ महाकाव्यमे आयल नायक, कथावस्तु, छन्द, रस आदिक वैशिष्ट्यक स्पस्टीकरण भऽ जाइछ, किन्तु महाकाव्यक आरम्भ संस्कृते सँ हो ई युग विशेषक हेतु ग्राह्य भऽ सकैछ, एहिसँ महाकाव्यक व्यापकता अथवा विशेषता स्पष्ट नहि होइछ ।

काव्यादर्शकार१ आचार्य दण्डी जे महाकाव्यक लक्षण देलनि अछि ताहिमे अग्नि पुराणमे कहल लक्षणक समानता रहितो किछु नवीनताक समावेश सेहो कयलनि

१ काव्यादर्श, प्रथम परिच्छेद, १४-१९ छन्द

अछि। दण्डी छन्द सम्बन्धी विशेषता, रसक प्रधानता तथा संस्कृतेमे महाकाव्यक आरम्भकेँ आवश्यक नहिं मानैत छथि। दण्डीक मतेँ प्रारम्भमे आशीर्वचन, स्तुति अथवा कथावस्तुक संकेत होयबाक चाही सर्गहि महाकाव्यकेँ विविध वृत्तान्तसँ युक्त तथा लोक रंजक हैबाक चाहीतथा प्रस्तुतकाव्यमे कल्पान्तर स्थायित्व होयबाक चाही। एतावता दण्डी किछु प्रगतिशील देखबामे आबि रहल छथि।

विश्वनाथ अपन साहित्य दर्पणमे एहूसँ विकसित लक्षण देलनि अछि--

सद्वंशः क्षत्रियोवापि धीरोदात्त गुणान्वितः
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा
शृंगार-वीर-शान्तानामेकोऽगी रस इष्यते
अंगानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटक सन्धयः
इतिहासोद्भवं वृत्तम् अन्यद्वा सज्जनाश्रयम्
चत्वारः तस्य वर्गास्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्
आदौ नमस्कियाशीर्वा वस्तु निर्देश एव वी
कचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुण कीर्त्तनम्
एकवृत्तमयैः पद्यै रवासानेऽन्य वृत्तकैः
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिकाः इह
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते
सर्गान्ते भावि सर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्
सन्ध्या सूर्येन्दु रजनी प्रदोषध्वान्त वासराः
प्रातर्मध्याह्न मृगया शैलर्तु वन सागराः
संभोग विप्रलम्भौ च मुनि स्वर्ग पुराध्वराः
रण प्रयाणोपयम मन्त्र पुत्रोदयादयः
वर्णनीया यथायोग्यं सांगोपांगा अमी इह
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्यवा
नामास्य सर्गोपादेय कथया सर्गनामतु
अस्मिन्नार्षे पुनः सर्गा भवनत्याख्यान संज्ञकाः
प्राकृतैर्निर्मिते तस्मिन्सर्गा आश्वास संज्ञकाः
छन्दसा स्कन्धकेनैतत् क्वचिद्गलितकैरपि

अपभ्रंशे निबद्धेऽस्मिन् सर्गो कुडवकाभिधाः
तथापभ्रंश योग्यानिच्छन्दांसि विविधान्यपि

एहि विवरणमे महाकाव्यक प्रत्येक अंगक स्पष्ट धारणा निरूपित कयल गेल अछि। कथावस्तु एवं ओकर संघटन, नायक, रस, छन्द वर्णन; नाम, उद्देश्य आदि एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ।

सर्गक सम्बन्धमे ईशान संहितामे कहल गेल अछि

अष्टसर्गान्नतुन्यूनं त्रिंशत्सर्गाच्चनाधिकम्
महाकाव्यं प्रयोक्तव्यं महापुरुष कीर्तियुक्

अर्थात् महाकाव्य कोनो महापुरुषक कीर्त्तिवर्णनमे आठ सर्गसँ कम नहि तथा तीस सर्गसँ अधिक नहि हो।

मैथिली साहित्यक इतिहास सहस्राब्दीक सीमाकेँ स्पर्श करैत अछि। जाहिमे ज्योतिरीश्वरक बर्णरत्नाकर सदृश गद्य ग्रन्थ एवं महाकवि बिद्यापतिक सहस्रक संख्यामे गीतक दर्शन सेहो होइत अछि। एतबे नहि नाटकक परम्परा सेहो अक्षुण्ण देखबामे अबैत अछि जाहिमे भने गद्य मैथिलीमे नहि हो, किन्तु नाटकक कथानककेँ आगाँ बढ़बैत नाटकक अभिन्न अंगक रूपमे मैथिली पद्यक अव्याहत प्रयोग देखबामे अबैत अछि। ई क्रम कवीश्वरचन्दा झा पर्यन्त आयल अछि, किन्तु महाकाव्यक प्रणयन दिस प्रवृत होइत कवीश्वरसँ पूर्व क्यो दृष्टिगोचर नहि होइत छथि। एहिमे प्राय: आरब्ध संस्कृतेन यत् अग्नि पुराणक वचने बाधक रहल हो। अथवा ईहो कहल जा सकैछ जे मैथिल कोकिलक काकली वंगक सार्द्र भूमिसँ लऽ व्रजनिकुंज धरि तेना अनुगुंजित कऽ देलकजे ओहि माधुरीक आगाँ मिथिलाक सहकारवनमे महाकाव्यक कोनो ततेक आवश्यकता नहि बूझल गेल? जे किछु कारण रहल हो, एतबाधरि स्पष्टे अछिजे महाकाव्यक रूपमे कबीश्वर चन्दाझाक रामायणे मैथिलीमे प्रथम महाकाव्य थिक।

एहि युगधरि लोकभाषाक महत्त्व स्पष्ट होमय लागल छल, हिन्दीक क्षेत्रमे भारतेन्दु हिन्दीकेँ महिमामण्डित करबाक हेतु दृढ़व्रत भऽ गेल छलाह तँ मैथिलीओ क्षेत्रमे महाकवि लालदास रामेश्वरचरित रामायण एवं मुंशी रघुनन्दनदास 'सुभद्रा-हरण', कविशेखर बदरीनाथझा 'एकावली परिणय', कविवर सीतारामझा 'अम्बचरित' पं० जीवनाथझा 'रावणवध', ओ प्रो० श्रीतन्त्रनाथझा 'कीचकवध' तथा पं० गौरीशंकरझा मेघनादवधक अनुवाद प्रस्तुत कऽ मैथिलीमे महाकाव्यक एक शृंखला बान्हि देलनि। एकर अतिरिक्त कवि चूड़ामणि पं० श्रीकाशीकान्तमिश्र 'मधुप' रचित 'राधा - विरह' प्रकाशित एवं 'विद्यापति' तथा पं० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' रचित—

'संजीवनी' एवं 'दत्तवती' श्रीमथुरानन्दचौधरी 'माथुर' कृत 'काननकन्या' महाकाव्य एखन अप्रकाशित अछि ।

यद्यपि युग जहिना-जहिना आगाँ बढ़ल गेल अछि, भौतिकता मानव जीवनकेँ तहिना तहिना ग्रस्त कयने गेल अछि । भौतिक उन्नति जहिना-जहिना मनुष्यक हेतु अधिकसँ अधिक सुविधा वढ़वैत गेल अछि मानव जीवनक व्यस्तता तहिना-तहिना बढ़ल गेल अछि । तेँ बहुतोक मत छनि जे आब लोककेँ ओतेक साक्षण कहाँ जे महाकाव्य पढ़ि सकत, रचनाकतँ गप्पे छोड़ू, किन्तु एहि आशंकाक पृष्ठभूमिमे महाकाव्यक रचना बन्द भऽ जायतसे कल्पना नहि करक चाही । तखन हँऽ आबजे कविताक विकृत रूप समक्ष आबि रहल अछि, यदि महाकाव्योक रचना ओही आधारपर होमय लागिजाय तँ ने जानि भविष्य की होयत । तखन ई आशा कयल जा सकैछ जे कविता एक बौद्धिक व्यायाम रहि जायत आ सम्भव अछि जे ई विधा कदाच गद्यमे समाहित भऽ जाय । 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' जे कहल गेल अछि, से कविअपन कसौटी पर कसाय लगताह । अस्तु ।

प्रस्तुत महाकाव्य 'चाणक्य'केँ महाकाव्यक कसौटीपर कसला उत्तर एकर महाकाव्यत्व सिद्ध अछि। यद्यपि महाकाव्यक लक्षणमे जतबा कहल गेल अछि, तकर सम्पूर्णक पूर्त्ति तँ कम्मे ठाम भेटत । युगक अनुकूल एहि लक्षणोमे बहुतोरास संक्षिप्तीकरण भेल अछि, कविता तँ आब छन्दोक बन्धनसँ मुक्त अछि, अपितु ई कहक चाही जे छन्दोबद्ध कविता लिखनिहारकेँ प्राचीनतावादी कहाय उपेक्षा, तिरस्कार अथवा उपहासक भागी सेहो बनय पड़ैत छनि, तथापि हमरा मतेँ वनस्पति कतबो विशुद्ध हो, ओ घृतक समता कहिओ नहि कऽ सकत । किन्तु जतबा संशोधन अथवा संक्षिप्तीकरण भेल अछि ततबाकेँ दृष्टिमे रखैत एहि महाकाव्यपर विचार करक चाही ।

कवि सर्व प्रथम रवि शब्दक प्रयोग करैत छथि जे वैदिक युगक सर्व प्रथम उपास्यदेव थिकाह, जे एक एहन ज्योति पुञ्ज थिकाह जनिका चतुर्दिकई समस्त सृष्टि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नचैत अपन अस्तित्व रखने अछि । दोसर अनल शब्दक प्रयोग करैत छथि जे प्रत्यक्ष देवता थिकाह आ सब यज्ञक अधिष्ठाता । यैह शब्द मंगलसूचक थिक। ब्राह्मण जाहि काव्यक नायक होथि हुनका हेतु सूर्य एवं अग्निस बढ़ि आन के भऽ सकैत छथिन ?

एहि महाकाव्यक नायक चाणक्य थिकाह जे इतिहासप्रसिद्ध तँ छथिहे संगहि नीति शास्त्रक अद्वितीय विद्वान् पुनि परम त्यागी, जे धीरोदात्त नायकक प्रथम गुण कहल गेल अछि, कृती छथिहे त्यागी एहने जे सम्पूर्ण आर्यावर्त्तक साम्राज्यसँ अनाचार, भ्रष्टाचारकेँ उध्वस्त कऽ एक पराक्रमशील, प्रतिभा सम्पन्न युवककेँ राज सिंहासनपर अभिषिक्त कऽ स्वयं —

कटितटमे कौपीन, काँखतर कृष्णासार मृगछाला
करमे दर्भ, कमण्डलु राजित, गर रुद्राक्षक माला
जटा - जूट, चन्दनसँ चर्चित भाल स्वयंप्रभ वेष
एखन चलल छथि जन्मभूमिमे बितबय जीवन शेष (एगारहमसर्ग)

अष्ट सर्गान्नतुन्यनम् केर अनुसार ई महाकाव्य एगारह सर्गमे लिखल गेल अछि। छन्दक विविधता तँ अधिक सर्गमे अछिए किन्तु सर्गान्तमे भिन्न छन्द सब सर्गमे नहि अछि। एहिसँ अतिरिक्त कविजतयएकदिस संस्कृतोक छन्दक प्रयोग कयलनि अछि ततय नवीनतम छन्दकेँ सेहो नहि छोड़लनि। वार्णिक ओ मात्रिक दूनू छन्दक प्रयोग भेल अछि। द्वितीय सर्गमे जे आश्रमक वर्णन भेज अछि ताहि ठाम प्रकृतिक अनुपम बर्णन दृष्टि-गोचर होइछ। चतुर्थ सर्गमे जे उद्यान एवं सरोवरक वर्णन अछि तकर एक आध अंशक रसास्वादन कयल जाय---

'जलमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौन्दर्य अपार
सुखमेखग खगमे कलकलरव, कलरवमे मुद मोदप्रचार
सरमे कमल कमलपर मधुकर, मधुकरमे कलमद गुञ्जार
तरुमे दल, दलपर कोकिल कुल, कोकिलकुल कलनाद उचार'

नन्दक औद्धत्य एवं ओकर नाशक संकल्प, पुनि विदेशीक आक्रमण आ ओहि आक्रमणसँ देशक रक्षाक हेतु संघटन, अन्तमे नन्दवंशक उच्छेद कऽ चन्द्रगुप्तकेँ अभिषिक्त करैत सेल्यूकसक कन्यासँ बिबाहक अनुमति दैत छथिन आ अपने जन्मभूमि मिथिलाक हेतु प्रस्थान करैत छथि। यैहथिक एहि महाकाव्यक कथावस्तु। ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे वर्त्तमानक सजीव चित्र अंकित करैत, राष्ट्र निर्माणक दिशा निर्देशक दिस इंगित करैत ओज ओ प्रसादगुणसँ परिपूर्ण, प्रवाहमय भाषामे रचित ई महाकाव्य मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे अनुपम योग देबक अछि, एतबा निश्शंसय।

सबसँ विशेषता जे एहि महाकाव्यक अछि से थिक एकर स्वतन्त्रता-प्राप्तिक बाद देशपर संभावित संकटक दिस ध्यानाकर्षण। कविकेँ भविष्य-द्रष्टा कहल गेलनि अछि। से प्रस्तुत महाकाव्य पढ़ला उत्तर प्रत्यक्ष भऽ जायत। आधुनिक युगमे प्रत्येक वस्तुक मान्यतामे परिवर्त्तन भेल अछि अथवा विकास कहलजाय ताहि प्ररिप्रेक्ष्यमेएहि महाकाव्यकेँ देखला उत्तर बुझना जाइत अछि जे एहिसँ पूर्व मैथिलीमे प्रकाशित महाकाव्यसब परम्पराक बन्धनकेँ नांघि कऽ आधुनिक विकसित स्वरूपमे जनता जनार्दनक सम्मुख उपस्थित होयबाक साहस नहि कऽ पौलक अछि।

स्वतन्त्र भारत जनतन्त्र पद्धतिपर चलि रहल अछि जकरा समाजसँ घनिष्ठ सम्बन्ध छैक अर्थात् समाजे द्वारा जनतन्त्रक संचालनक हेतु कोनो नेताकेँ अधिकार समर्पित कयल जाइत छनि। चाणक्यक कवि नेताक परिभाषा दैत छथि–

'कालकूट-घट पीबि, सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्यलोकसँ देवलोक धरि नेता ओ कहबैछ
विष-ज्वाला-परिपूर्ण नाग फन चढ़ि जे नाँचि सकैछ
सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जननेता कहबैछ'

राजतन्त्रमे राजाक पुत्र राज्यक उत्तराधिकारी होइत छलैक आ ओकरे द्वारा प्रजा शासित होइत छल .किन्तु लोक तन्त्रमे—

शासक होइछ न जन्मजात क्यो: नहि अदृष्ट फल भोगी
राजनीति—दृढ़—पथ—अनुगामी सततकर्मरत योगी
जनतासँ विश्वास प्राप्त नर शासन—सूत्र सम्हारय
जनहित कारक-कार्य-व्यूहसँ जनमर्यादा पालय (दसमसर्ग)

राजनीतिक अधिकारी के थिक ? कवि परिभाषा दैत छथि—

कालायस कर्कश अतिशय मृदु, कुटिल करेज जकर हो
राजनीतिकेर अधिकारी ओ पौरुष जकर प्रखर हो (दसमसर्ग)

पौरुषपूर्ण पुरुषक द्वारा राजनीतिक संचालन संभव होइत अछि। किन्तु राज्याधिकार प्राप्त भऽ गेला उत्तर यदि निश्चिन्त भऽ कोनो राष्ट्र सूति रहत तँ ओकर स्वतन्त्रता सुरक्षित नहि रहि पौतैक। कारण—

राजनीति-तरु शोणित-जल सँ सिंचित होइछ सदिखन
बलिदानक उर्वरक प्राप्तकय फड़य फुलाय विलक्षण (दसमसर्ग)

चीनी ओ पाकिस्तानी आक्रमणसँ पहिलुक लिखल एहि महाकाव्यकेँ एहि दूनू युद्धक पृष्ठ भूमिमे देखू—

हो ठाढ़ घेरि घर जखन युद्ध केर दानव
अछि उचित कि घरमे बैसि विकलमन कानव ?
नहि विजय-पराजय, पाप-पुण्य नर हेरय
बनि प्रतिकारक अंगार शत्रुसँ खेलय। (दसमसर्ग)

जखन राष्ट्र एहि नीतिक अनुसरण कयलक तखन—

डूबि गेल गाम गाम वीरताक रंगमे
माँतल नर-नारी सभ राष्ट्र-प्रेमभंगमे (षष्ठ सर्ग)

तखन पत्नी पतिसँ, माता-पिता पुत्रसँ, बहिन भायसँ आग्रह करैत छैक—

युद्ध जीति आयबतँ आरती उतारि लेब ... ।
काटि लाउ वीर पुत्र ! शत्रु माथ हेरी हेरी ... ।
वीरताक पाठ शत्रु शिष्यकेँ पढ़ाउबाउ (षष्ठ सर्ग)

विज्ञान मानव जातिक हेतु समस्त दुख-दुविधाक अन्त कऽ अनन्त सुख-सुविधा प्रदान करबाक आश्वासन दैत रहल अछि, किन्तु परिणति जे देखबामे आबि रहल अछि से कविक अन्तरमे एक प्रश्न उपस्थित करैत छनि—

आग्नेय अस्त्र मानवकेर त्राण करत की ?
अछि रिक्त प्रेम केर कोष सुपूर्ण भरत की ?

आ पुनः उत्तर भेटैत छनि कविकेँ—

विज्ञान जतेक बढ़त आगू संसारक
भय जैत ततेक निकटतम तट संहारक (षष्ठ सर्ग)

जतय कतहु महाकाव्यक स्वरूप-निर्वचन भेल अछि ताहिमे विधेय अवश्य कहल गेल किन्तु निषेध नहि । एतावता ई बुझबाक थिकजे युग एवं परिस्थितिक परिवर्त्तनक संग-संग जे स्वाभाविक विकास संभावित अछि ताहि बिकास पर अंकुश नहि लगाओल गेल अछि ।

यदि प्राचीन महाकाव्यमे नगर, समुद्र, वन, पर्वत आदि वर्णन आवश्यक बूझल गेल तँ आजुक महाकाव्यमे लोकमे जे नवीन चेतना, नवजागरण एवं विज्ञानक उपलब्धि सब भेल अछि तकर वर्णन किएक नहि समाविष्ट हो ? अपितु ई कहल जा सकैछ जे नवीन लक्षण यदि महाकाव्यक बनत तँ यैह सब वर्णन एक अनिवार्य अंग मानल जायत ।

अतः आधुनिक महाकाव्यमे प्राचीन बन्धनमे जकड़ल रहलासँ अधिक आवश्यक तत्व आधुनिक जीवनक नवनव उत्कर्षक समावेश बूझल जयबाक चाही ।

एतेक कहलाक उपरान्त बन्धु जीसँ हमरा परिचय कोना भेल सेहो कहि देब हम आवश्यके बुझैत छी । १९६१क दिसम्बर । आठ बजे राति, शीत लहरीक प्रकोप । घरक भूर–भार, खिड़की-फड़की सब मुनने, बन्द कयने बैसल छलहुँ भीतर साहित्यक दूचारि बन्धु बैसल, बीचमे 'स्टोव' जरैत, आगि तपबाक हेतु । चाह बनि चुकल छल, तावत बाहरसँ ध्वनि आयल—अमरजीक डेरा एहे छऽनि' । यद्यपि शोर कयनिहार चारि पाँच हाक मारने छलाह, किन्तु गप्पक रस आ स्टोवक सनसनाहटिमे हुनक हाक पहुँचि नहि पबैत छलनि

बैसल लोकमे कनेक भूकम्प भेल, ओहि डोलमडोलमे जनिका सबसँ लग पड़लनि से केबाड़ीक बिलैया फोलि देलथिन । एक व्यक्ति प्रवेश कयलनि । पाँच फूट किछु-

इञ्च नाम, गोरनार देह, बेस ठाढ़ नाक, घनगर भौहुँ, छगरा आँखि खुटिआयल दाढ़ी अवस्थाक धूमिलरेखा मुखमण्डलपर एकदम स्पष्ट।

—हम मुँगेर जिला रहैत छी, दुनही एक बस्ती छैक, ओहीठाम हमर जन्म भेल अछि। मिडिल स्कूलमे शिक्षक छी। हम अपन नाम 'बन्धु' रखने छी आ पिता हमर नाम दीनानाथ पाठक रखने छथि। वस्तुतः एहि दृष्टिएँ हम दीन अनाथ छी। हमरा अपनेक एक गोट हिन्दीक कविता आर्य्यावर्तमे पढ़ल छल—"भले न कोई रहे हमारा, मैं तो अपनाहो जाता हूँ" एही भावनाक अनुसार हमहुँ सभक बन्धु बनल छी। सुनलहुँ जे अपने मातृभाषाक एकान्त सेवी छी तेँ हम चल अयलहुँ अपनेक दर्शनार्थ। हमहूँ टूटल फूटल शब्दमे एक ऐतिहासिक पुरुषपर एकटा काव्य लिखलहुँ अछि। अपने जखन समय दी, किछु अंश अपनेकेँ सुनाबी। जँ काजक होइक तँ ओकरा प्रकाशमे अनबाक युक्ति धरा देल जाय, नहि जँ प्रकाशित करवाक योग्य नहि होइक तँ निरर्थक ई राखि कोन फल ?

हम हुनक सब कथन मन्त्र-मुग्ध भेल सुनैत रहलहुँ! ओ अपन असमर्थता, एहि महाकाव्यक प्रकाशनार्थ कयलगेल उद्योग एवं कठिनता सभक वर्णनक क्रममे कतेक संस्कृतक श्लोक, मैथिली-हिन्दीक कविताक पंक्ति'कोट'करैत चल गेलाह तकर संख्या नहि आँकल जा सकैछ। हम कहलियनि - मैथिलीमे पाठकक बड़ अभाब अछि, साहित्यकार पाठक सेहो आङुरेपर गनल छथि। हमरा अहाँ सनक पाठकसँ परिचय प्राप्त कऽ बड़ प्रसन्नता अछि। एकटा एमहर हमर श्रीमन्तपाठक छथि, ओमहर पाठक एण्ड सन्स आर तेसर पाठक अहाँ अयलहुँ अछि। एहिना जँ दुइयोहजार सजग पाठक मैथिलीकेँ भेटि जाथिन्ह तँ एकरा प्रगतिकेँ क्यो रोकि नहि सकैत छथिन। अच्छा ई कहू जे ई काव्य खण्डकाव्य थिक की प्रबन्ध काव्य ?'

हम एगारह सर्गमे लिखने छी, अनेक छन्दक प्रयोग भेलैक अछि, नायक थिकाह चाणक्य। तखन एकरा जे काव्य कहल जाइक।

पहिने तँ घबड़यलहुँ जे ई एगारह सर्गक महाकाव्य सुनबाक समय बाहर करब कतेक कठिन होयत ? ताहूमे ई एकदम अपरिचित, एकदम नवीन लेखक बूझि पड़ैत छथि, अकर-दकर दड़रने होयताह ! अस्तु, एखन स्थाली-पुलाक न्यायेन दू चारि पद सुनि लैत छियनि सन्तोषार्थ, तखन बादमे देखल जयतैक। एतबा मनहि मन सोचि कहलियनि—अच्छा' समय तँ बादमे बाहर करब, एखन दूचारि पद सुनाउ।'

वन्धुजी उत्सुक होइत कहलनि—पहिने आरम्भे सूनिलेल जाय: —

'रविसम दीप्त, अनल सम दाहक, पविसम कठिन कठोर
कोनो गूढ़तम भाव-भग्न चिन्तासँ आत्म विभोर,
अंग-अंगसँ चूबय टप-टप सुदृढ़ आत्मविश्वास

पाटलिपुत्रक जनपथपर के घूमि रहल गत—त्रास ?
चन्दन - चर्चित-भाल, कृष्णतन, नेत्रक रक्तिम कान्ति
उतरि रहल की मनुज-सिंहसे क्रान्ति अधिष्ठित शान्ति ?
कटितट शुभ्र बसनसँ बान्हल छोट अङौछा एक
आयल की संयमक छाँहसे त्यागक संग विवेक ?

पदक प्रवाह ओज सूनि चकित रहि गेलहुँ। मनक ई भ्रान्ति मेटा गेल जे कोनो अखरकट्टू कविक पालाँ पड़ि गेल छी। ओहि व्यक्तिक मलिन आकृति आ ताहि भीतरमे नुकायल एहन उद्दीप्त प्रतिभा देखि विस्मित रहि गेलहुँ। मोनमे भेल जे एहन-एहन प्रतिभाशाली गुप्तसाधक जखन मैथिलीक सेवामे संलग्न छथि तँ निश्चय एकर प्रगतिकेँ रोकि रखबाक सामर्थ्य आब ककरो नहि छनि। एहन समुज्ज्वल प्रतिभा-सम्पन्न नवीन महाकविक परिचयसँ वस्तुतः हृदयमे प्रसन्नता उमड़ि आयल। किछुसर्ग चाणक्यक सूनि गेलहुँ, अतृप्ति बनले रहल। अन्तमे हुनकासँ ई महाकाव्य राखि देबाक आग्रह कयलियनि जे एकरा सम्पूर्णकेँ हम पढ़ि लेब, तखन जेना जे भऽ सकत से हम अवश्य करब।

दोसर देर बन्धुजीसँ मार्च १९६२ मे भेट भेल। पेटक गरबड़ीक कारणेँ एहि बेर ओ आरो खिन्न छलाह। दरभंगा अस्पतालमे भरती भेला। जुलाइ धरि पड़ल रहलाह, किन्तु एहि ठामक चिकित्सक सर्वथा असमर्थ रहलाह हुनका स्वस्थ बनयबामे। एक दिन स्कूलपर एक बृद्ध अतिआकुल चित्तेँ नोरसँ दहो बहो होइत हमर पुछारि करैत पहुँचलाह ! 'हम दीनानाथक पिता छियनि। डाक्टर सब कहैत छथि केन्सर भऽ गेलनि अछि।' हम सन्न रहि गेलहुँ ! एहि अवधिमे कतेक प्रयत्न एहि ठामक अस्पतालमे कयलहुँ, मुदा विफल होमय पड़ल। अन्तमे निश्चय भेल जे कोनो प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रमे राखल जाय। अक्टूबरमे एक पत्र भेटल—रोसड़ा चिकित्सा केन्द्रमे छी क्रमहि अनुकूल स्थिति अछि।

२२ जनवरी १९६४ कऽ एक पत्र भेटल, उपरमे लिखल छल-दुनहो। उत्सुकतापूर्वक पत्र पढ़ैत गेलहुँ, अन्त होइत-होइत उत्सुकतापर तुषारपात भऽ गेल। बन्धुजी आब एहि संसारमे नहि छथि, किन्तु हुनक ई कृति हमरा लग एखनहुँ पड़ले छनि। एहन प्रतिभा अकाले कालकवलित भऽ गेल, किन्तु एहि महाकाव्यकेँ मैथिली पाठकक सोझाँ उपस्थित भेलापर हमरा विश्वास अछि स्वर्गीय बन्धुजीक यशः शरीर मातृभाषाक इतिहासमे अमर रहतनि। अन्तमे कविक शब्दमे अंकित—

जाग्रत-जीवन जन-समाज अपनाओत सत्वर
खण्ड राष्ट्र केर अंगअंगमे जागत जीवन

एक राष्ट्र केर महा मन्त्र फूकत जे नूतन
राष्ट्र पताका उच्च व्योममे हैत सुशोभित

एहि वाक्यक संग एहि पुरोवचनकें समाप्त करैत छी।

शिक्षक दिवस
५-४-१९६५ ई०

विधि-बाध

—श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रस्तुत महाकाव्यक प्रणेता असीम विश्वासक संग एहि पाण्डुलिपिकें हमरा लग राखि गेलाह। हुनका जेना अपन जीवन लीलाक जवनिकापातक पूर्वाभास भेटि चुकल छलनि। हुनक कथ्य छलनि—

हम जाहि जनपद एवं परिवारमे जन्म लेने छी, ओ जनपद एकर महत्त्व बूझि पाओत अथवा नहि आ ओ परिवार निकट भविष्यमे ताहि योग्य नहि भऽ पाओत जे एकर प्रकाशन कऽ सकय, किन्तु एहि ठाम रहला उत्तर निश्चित रूपें कहिओ ने कहिओ शुभ क्षण आबि सकैत छैक जखन ईमातृभाषा प्रेमी लोकनिक दृष्टिपथ पर आबि जयतनि।' जखन बन्धुजीक एहि नश्वर शरीरत्यागक समाचार प्राप्त भेल तँ सबसँ बेसी चिन्ता एकर प्रकाशनक भेल। बन्धुजीक विश्वासकें साकार करब हमर दायित्व भेल, किन्तु प्रकाशकक की स्थिति मैथिली क्षेत्रमे रहल अछि, पाठ्यग्रंथक निर्वाचनक की स्थिति अछि से ककरोसँ अविदित नहि। हम स्वयं लक्ष्मीक कृपापात्र नहि ए छी तखन एहि दायित्वक पालन कोना करू, घोर चिन्तामे पड़िगेलहुँ। अनेक ठाम प्रयास कयलो उत्तर सब ठामसँ निराश होमय पड़ल। अन्तमे वैदेही समितिक अवैतनिक मन्त्री प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्रकें वैदेहीक विशेषांकक रूपमे एकर प्रकाशनकप्रस्ताव देलियनि ओ एकरा स्वीकार कयलनि।

किन्तु एहि रूपमे एहि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक प्रकाशन सन्तोषजनक नहि प्रतीत भेल। तखन मिथिलाप्रकाशनक संस्थापक पं० सूर्यनारायण झा जी के एहि दिसि श्रद्धा भेलनि आ ओ एकरा पुस्तकाकार प्रकाशनक व्यवस्था करब सहर्ष स्वीकार कयलनि तथापि प्रेसक ओ समयकअसुविधाक कारणें जाहि रूपमे एकर छपाई उचित छल अथवा व्यवस्थापकक जे अभिलाषा छलनि से नहि भऽ सकल। आशा अछि एहूसँ भव्य रूपमे द्वितीय संस्करण पाठकक समक्ष आबि सकत। एहि प्रसंग श्रीउदयकांत चौधरी आवरण पृष्ठ, श्रीरमानाथ मिश्र 'मिहिर' एकर संयोजन एवं डॉ.श्रीरामदेव झा सजयवामे अपन अपूर्व सहयोग देलनि। एतदर्थधन्यवादहुकें धन्यवाद तथा आशीर्वादहुकें बिनु आशीर्वाद देने विधि बाध पूरा नहि होइत।

संस्थापक
नवरत्न गोष्ठी,
मिश्रटोला, दरभंगा।

ई द्वितीय संस्करण एहि महाकाव्यक
प्रणेताक पूज्य पिता स्व० रामजी पाठक

क

स्मृतिमे सादर समर्पित

चाणक्य

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजम्भयम्

प्रकाशकीय

—प्रस्तुत महाकाव्य १९६५ ई० क जुलाइ सितम्बरक वैदेही मासिक पत्रिका (दरभंगा) मे विशेषांकक रूप मे प्रकाशित कयल गेल छल, तथा ओहि सँ 'री प्रीन्ट', कराकऽ मिथिला प्रकाशन, (लहेरियासराय) क संस्थापक स्व० पं० सूर्यनारायण झाजी एकरा पुस्तकाकार कयलनि। एहि अठारह वर्षक अवधिमे एहि महाकाव्यकेँ बिहारक विभिन्न विश्वविद्यालयक पाठ्यग्रन्थमे स्वीकृति रहबाक सौभाग्य प्राप्त होइत रहलैक अछि।

एहि बीच कतेको वर्ष सँ पुस्तकक अभावक कारणेँ छात्र समुदाय केँ पठन पाठनमे असुविधा होइत देखि कागज ओ छपाइक महगी एवं मैथिली पुस्तकक विक्रीक दुःस्थिति रहलो पर पुस्तकक नवीन संस्करण करक साहस कयल अछि। इच्छा छलजे महाकविक जन्म तिथि मृत्यु तिथि, शिक्षा एवं अन्यरचनाक सूचना एहि संस्करण मे दऽ दी किन्तु हिनका बालककेँ पत्र लिखलाक बादोसे नहि प्राप्त भऽ सकल तेँ नहि दऽ सकलहुँ, ताहि हेतु खेद अछि।

श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'
संस्थापक
मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन,
हनुमानगंज मिश्रटोला
दरभंगा।

जनवरी—१९८३

प्रथम सर्ग

'कान खोलि संसार सुनय ई हमर वाक्य अतिशक्य
राजनीतिकेर पृष्ठभूमिपर उतरि गेल चाणक्य'

★

रविसम दीप्त, अनलसम दाहक पवि सम कठिन कठोर
कोनो गूढ़तम भाव-मग्न चिन्तासँ आत्म — विभोर
अंग अंगसँ चूबय टपटप सुदृढ़ आत्म-विश्वास
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घूमि रहल गत त्रास?
शून्य गगनमे क्षिप्त दृष्टि ओ भृकुटि – भंगिमा- वक्र
के जानय ई कोन महागज हेतु अवतरित नक्र ?
चन्दन चर्चित भाल, कृष्ण तन,नेत्रक रक्तिम कान्ति
उतरि रहल की मनुज-सिंहमे क्रान्ति अधिष्ठित शान्ति
कटितट शुभ्र- वसनसँ बान्हल छोट अङोछा एक
आयल की संयमक छाँहमे त्यागक संग विवेक ?
धूमकेतु सम स्वयं समुज्ज्वल द्योतित गगन अखण्ड
उतरि रहल अछि के ई नभसँ भासुर-प्रवल-प्रचण्ड
ध्रुव रहि अचल कक्षपर जहिना घूमबथि खेचर वृन्द
तहिना शक्ति प्रपूर्ण व्यक्ति ई ज्ञात होइछ निर्द्वन्द्व
देवलोकसँ अपमानित ईर्ष्या - वश शुक्र महान्
दनुज-लोकमे पहुँचलाह की नीति-शास्त्र-विद्वान् ?
जन कोलाहल—पूर्ण नगरमे रहितहुँ अतिशय शान्त
अन्तरतम अछि मथित विलोड़ित सदिखन, किन्तु अशान्त

विविध जन्तु रहितहुँ ऊपरसँ सिन्धु यथा गम्भीर
उत्पाती बड़वानल करइछ अन्तर परम अधीर
बड़वानल? हऽ बड़वानलसँ अधिक आत्म-उत्ताप
व्यग्र मनुष्यक हृदय मूलमे बइसल चिन्ता पाप
चिन्ता क्षार करय रगरगकेर चलइत शोणित शेष
चिंतापूर्ण मनुष्य मनुज नहि मृतक तुल्य अवशेष
चिंता कीट ग्रसित मानव - तन अति जर्जर बनि जाय
स्फूर्ति ज्ञान साहस ओ गौरव नष्ट विनष्ट दुराय
चिता जराबय भौतिक तन ई जखन होइछ निष्प्राण
पृथक बाँटि कय पञ्चतत्वकेँ दैछ शांति कल्याण
चिन्ता जारय जीव —युक्त - तन क्षण क्षण करय अधीर
शान्ति शील नर व्याकुलतावश रहय न कौखन थीर
किन्तु मनस्वी चिता - सागर मथि कऽ बेर अनेक
अगणित रत्न करथि बाहर थिर राखि अपन दृढ़ टेक
कर्मवीर रवि ज्योति पुञ्जकेँ सहय न विघ्न उलूक
अखिल विश्व पथ दैछ समुज्ज्वल रहने लक्ष्य अचूक
कर्मवीरकेँ निश्चित पथपर विघ्न रहय नहि ठाढ़
ताल ठोकि कय भिड़य जखन पर्वतपर लाबय गाढ़
कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय
रहय दुःख - पर्वत सम सम्मुख देखितहि शीघ्र नशाय
महाविपत्ति न धैर्य धनीकेँ कायरकेँ भय दैछ
शूल फूल सम आगू आगू हँसइत पथ देखबैछ
घनक चोट सहि लौह धातुसँ होइछ जखन तरुआरि
रहितहुँ छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि

अग्नि तापसँ स्वर्ण अपन द्युति द्विगुणित ग्रहण करैछ
कर्मवीर बाधाक आगिसँ तहिना दीप्ति पबैछ
जखन समाज स्वराष्ट्र स्वदेशक होइछ शिथिल सभ अंग
विविध कलुष पातक अनीतिसँ मानवता विकलांग
होइछ प्रखर आह्वान क्रान्ति केर प्रबल प्रेरणा प्राप्त
जनसमाजसँ उद्बोधित भयो उठइछ नेता आप्त
नेता सैह समाजक दुखमय शोषण - पीड़न जाल
उठा लैछ गोबर्द्धन गिरि सम आङुरपर तत्काल
कालकूट घट पीवि सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्य-लोकसँ देव - लोक धरि नेता ओ कहबैछ
विष-ज्वाला-परिपूर्ण नागफन चढ़ि जे नाँचि सकैछ
सैह समाजक धर्मक, राष्ट्रक जन - नेता कहबैछ
टारि घोर संकट स्वराष्ट्र हित कऽ स्वकीय बलिदान
नेता पूर्व प्राप्त गौरवकेर बढ़ा दैछ सम्मान
नेता धर्म समाज स्वराष्ट्रक करइछ काया - कल्प
मानबतामे महामंत्रसँ फूकय शक्ति अनल्प
क्रान्ति कुमारी जखन अपन दाहक स्वरूप देखबैछ
क्षार क्षार कऽ जीर्ण पुरातन किछु नूतन सिखबैछ
क्रान्ति वैह जे सोनक लंका पलमे भस्म करैछ
कुरुक्षेत्रकेर महासमरमे शोणित-नद बहबैछ
क्रान्ति वैह जे सिंहासनसँ सुरपतिकेँ भगबैछ
क्रान्ति तथागतकेर भाषा बनि अमर गीत गुँजबैछ
सृष्टि चक्रकेर मोड़मोड़पर क्रान्ति अनल धधकैछ
भाषा यैह, किन्तु परिभाषा भिन्न भिन्न कहबैछ

क्रान्ति अमर युगयुग संरक्षित नीति धर्म-गत औट
युगक फलीता पाबि अपन अति करय भयद बिस्फोट
क्रान्ति महाकालक पथदर्शक युगक नवीन प्रबाह
क्रान्ति दैछ एहि सृष्टि अंगमे स्फूर्ति, ओज, उत्साह
पाटलिपुत्रक जनपथपर जे घूमि रहल गत-त्रास
परिवर्तन क्षमता लऽ करमे मनमे दृढ़ विश्वास
अकस्मात ओ बाजि उठल हा ! आर्यक पावन देश
क्रूर यवन शासकसँ की नहि बचा सकत निज वेष
की अदृष्ट लिखने अछि राष्ट्रक पतन अवश्यम्भावि
पहुँचि गेल की नाशक तटपर आर्य-सभ्यता आबि ?
आन्हर आँखि अछैत मनुज ओ बहिर अछैतो कान
देखय सुनय शक्ति रहितहुँ जे मातृ-भूमि अपमान
पराधीनता—गरल पीबि जे क्यो नर प्राण रखैछ
नारकीय कृमि सम अति कुत्सित जीवन ओ बितबैछ
जननी - जन्म-भूमि स्वर्गहुँसँ जगमे श्रेष्ठ महान्
करय प्रतिष्ठा जकर मनस्वी दय आहुति निज प्राण
अधम समाज सहैछ दासता पशुवत मनकेँ मारि
सहितहुँ दुःख अनेक सकय नहि संकट कौखन टारि
तुच्छ स्वार्थहित अछि करैत जे आहुति निज मनुजत्व
जनसमाजमे हीनवीर्य ओ करय घृणित पुरुषत्व
आर्य - रक्त की सुखा गेल अछि बदलि गेल की पानि
की धरतीतर समा गेल अतिकाल विपक्षी जानि ?
काननपति केहरि स्वभावसँ की बन्धन तर आओत ?
मणि-विहीन-फणि जीवित रहि की युगयुगअपयशपाओत ?
स्वर्ण - शृङ्खलासँ बान्हल अतिशय मदान्ध करिराज
बिसरि जाइछ की पूर्ण रूपसँ स्वच्छंदित वनराज ?

पाबि सुभोजन सुखद सुरुचिकर नभचर शुक स्वच्छंद
सोनक पिजड़ामे बसितहुँ की पावय परमानन्द ?
केहरि शिशु रहितहुँ अतिनिर्बल घास पात की खाइछ ?
गजवर मस्तक फाड़ि पेट भरि शोणित पीबि अघाइछ
दृष्ट अदृष्ट व्यर्थ अछि निज कर्तव्य अदृष्ट बनैछ
देखय भाग्यक आश भीरु कर्त्तव्यक पथ न चलैछ
भागमन्त अछि वैह मनुज जे हो स्वकर्ममे लीन
सदा अचंचल रहय मार्गपर बनय न कौखन दीन
अछि आवश्यक एखन श्रेष्ठतम नेता एक महान्
एक सूत्र मे बान्हि राष्ट्रकेँ जे फूकत नव प्राण
चाही एखन जनार्दन प्रेरित दृढ़तम शंख निनाद
जे सुनि राष्ट्र सपूत उल्लसित छाड़ि स्वद्वेष प्रमाद
जागय एक बेर सूतलसँ पुनः वीर सन्तान
देश, धर्म, राष्ट्रक मर्यादा पाबि सकय सम्मान
छी विरक्त यद्यपि हम जगसँ ईश-ध्यान संलग्न
किन्तु सकब की देखि स्वराष्ट्रक गौरव - गरिमा-भग्न ?
जाथु एखन भवमुक्ति कतहु, जा रहथु परात्पर ज्ञान
चाही रक्षित एखन स्वराष्ट्रक मर्यादा अभिमान
कान खोलि संसार सुनय ई हमर वाक्य अति शक्य
राजनीतिकेर पृष्ठ - भूमिपर उतरि गेल चाणक्य
छोड़ि कमण्डलु अजिनदर्भ व्रत पूजन विविध विधान
हम करैत छी देश, धर्म, हित - हेतु स्वजीवन दान
जावत आर्यावर्त्तक नभसँ हटत न संकट जाल
टरत न पराधीनता भयकेर भूत महा-दुष्काल
प्रण करैत छी हम नहि तावत् पाबि सकब विश्राम
छुअब न दर्भ, पढ़ब नहि कौखन वेदक मंत्र ललाम

देखय जग, अक्षम नहि ब्राह्मण कोनो काजक हेतु
खसल अनीतिगर्त-सँ उठबय नभमे राष्ट्रक केतु

परशुराम बनि अन्यायी शासक गणकेर संहार
करइछ तर्पण शोणित जलसँ भू के बारम्बार

कुरुक्षेत्रमे शस्त्र ग्रहण कय युद्ध भयानक ठानि
रुण्ड—मुण्डसँ पाटि दैत अछि धर्महीनता जानि

मनमे विश्वजनीन भावना करमे भीषण क्रान्ति
उनटि सकैछ अखिल जगतीकें जौं देखय किछु भ्रान्ति

ज्ञानी ब्राह्मण छोड़ि अपन कर्त्तव्य शास्त्र सन्धान
मरण प्राय आर्यक सन्ततिमे फूकत मन्त्र महान

सावधान रे रे भविष्य ! जौं खेलि सकहि तँ खेल
कुटिल महाकालहुसँ वेशी कौटिल्यक ई खेल

सावधान नभचर, ग्रहमंडल, सावधान दिक्पाल
अपन कक्षपर थिर बनि बैसब नांचत उठि क्यो काल

सावधान धरणीधर - पन्नग सावधान दिवि—लोक
मर्त्यलोकसँ उठत सम्हरि क्यो शक्ति - पूर्ण - आलोक

सावधान अयि पराधीनते ! ले समेटि निज जाल
ठाढ़ भेल अछि महामंचपर दीप्तिमान क्यो ज्वाल

तावत के पद - दलित करत वा करत आर्य अपमान
जावत अछि चाणक्य हस्तगत नैतिक ढाल कृपाण

रोपि सकत नहि पैर विदेशी आर्यभूमिपर आबि
चाणक्यक मुँहसँ बहरायल वाक्य अवश्यम्भावि

राजनीतिमे एहि प्रकारें कय प्रवेश द्विज क्षोभी
छोड़ि आत्म-तत्वक अन्वेषण बनि अतिशय निर्लोभी
गुरुकुलछात्र बनय जेहितरहें राजनीति निष्णात
तत्पर छथि एहि जीर्ण राष्ट्रमे लाबय नूतन प्रात

* *

द्वितीय सर्ग

'पारस्परिक मलिनता ईर्ष्या–कटुता–पूर्व-भावके छाड़ि
उठा लेथिराष्ट्रक रक्षाहित आर्यवीरसबमिलितरुआरि'

❋

राजनगर जन कोलाहलसँ ग्राम्य ग्राम जनपदसँ दूर
आश्रम एक विरल काननमे शान्ति-सम्पदा सुखसँ दूर

त्यागतपस्यायुक्त अप्रतिम ज्ञानशील संयम आधार
होइछ जतयसँ अखिल विश्वमे सभ्य-आर्य गौरव विस्तार

वैभव जीवमात्रपर, करुणा धन समग्र जग जग कल्याण
सत्य, अहिंसा अस्त्र कोषमे बसइछ अक्षय-ज्ञान महान

शम-दम-नियम शस्त्र धर सैनिक-क्षमा, दया मंत्री बलवान
आर्य कीर्त्ति-गढ़ सिंहासन चढ़ि प्राणिमात्रसँ पाबय मान

हरित श्याम तरुराजि विराजित पुष्पित पुष्प अनेक प्रकार
मलयागत प्रिय मधुर गंधवह बाँटि रहल अछि सुरभित भार

गाछक झुकल डारिमे बान्हल सुखा रहल कतिपय कौपीन
कुश राखल अछि कतहु भूमिपरकतहु श्रुबा हवि-धूम मलीन

कुण्ड-वेदिका बनल स्वच्छ अति किन्तु मिझायल हवनक आगि
अस्त व्यस्त सभ वस्तु बुझाइछ गेल चित्त ओझरौटहि लागि

ठाम ठाम पाथल गोवरकेर बूझि पड़ैछ प्रकट जे छाप
यथा दरिद्राआबि बसल हो युग युगसँ बनि रह अभिशाप

गायक घास कतहु अछि राखल जारनि कतहु टेढ़ ओ सोझ
कन्दमूलफल कतहु, कतहु अछि वत्स हेतु कोमल तृण बोझ

तरुतर बैसि छाँहमे गोधन करइछ पाउज बनी निःशंक
नहि भय चिन्ता प्राणिमात्रकेँ बसय तपोवन पावन अंक

कतहु वत्सगण उछलि कूदिकय दैछ शान्तिकेँ दूर भगाय
किन्तु निराश्रित क्षणक अनन्तर पुनः फिरैछ सहित समुदाय

धानक खेत बँटल कोलामे आश्रमसँ लगले किछु दूर
भरल पुरल घर देखि मोहवश होइछ आत्मगौरवसँ चूर

नीलपीत हरिताभ शस्यगण पहिरि वस्त्र मोहक अभिराम
हर्ष प्रफुल्लित प्रकृति नटीकेँ झुकि झुकि करइछ सतत प्रणाम

पुष्पवाटिकासँ सटले अछि सागक सुन्दर बाड़ी एक
फड़य विविध तरकारी उपजय कंदमूल फल भाँति अनेक

स्वावलम्बकेर सगर व्यवस्था अछि स्वाश्रयी गृहस्थक तुल्य
किन्तु बसैछ मूर्त्तित्यागक जे दैछ लोककेँ ज्ञान अतुल्य

उच्चपीठपर बैसल गुरुवर छात्र वृन्द सम्मुख आसीन
ज्ञात होइछ परिदीप्त अनल साकार भेल हो धूमविहीन

उदयाचलक शिखरपर भासित यथा प्रभातक रविद्युतिमान
छात्रक मध्य सुशोभित तहिना अखिल ज्ञान रवि गौरव वान

राकाचन्द्र मयूख शान्तमन लैछ लोकमे चटुल चकोर
गुरुमुख शब्द मयूख हेतु छथि उत्सुक तद्वत् छात्र अथोर

यथा पपीहा स्वाति बुन्दकेँ पिवइछ मनमे अति मुद मानि
गुरुमुख शब्द मयूख हेतु छथि बैसल किछु प्यासल सुख जानि

गुरु अनुशासन मानि छात्रगण कऽ समाप्त निजनिज स्वाध्याय
सुनय हेतु सन्नद्ध एखन छथि अन्तिम राजनीति अध्याय

हरित दूभिकेर प्रकृति दत्त आसन सुन्दर मखमली ओछाय
नील असीम गगन आङ्गन केँ लेखन आलय भव्य बनाय

विस्तृत क्षेत्र बनल अछि कागत प्रस्तुत क्रान्ति मसी अति गाढ़
राजनीतिकेर कलम पकड़ने अछि भविष्यवल चिन्तित ठाढ़

लिखत भविष्य समाजक, देशक पुनः कोन तरहक इतिहास
लहराबत नभमे गौरव ध्वज की अछि भावी सत्यानाश

देशक नव इतिहासक गुरुकुल बनय चलल अछि नव आगार
प्रवचन पटु गुरुदेव दैत छथि जकर भवन भीतक आधार

छोट बीजमे रहइछ जहिना रक्षित वृक्षक रूप बिशाल
भाषण अति संक्षिप्त करत जे राष्ट्र समाजक उन्नत भाल

ध्यानावस्थित नेत्र फोलि लय हृदयस्थित ईशक शुभनाम
अंतिमप्रवचन सार सुगंभित कयलनि गुरुवर नीति ललाम

जयति जयति जगदीश नियन्ता सृष्टि-चक्र-चालक बलवान
जीव मात्रमे बसितहुँ जकर न आदि मध्य अथवा अवसान

जेनिज इच्छा करितहि करइछ तत्क्षण अखिल विश्व विस्तार
भृकुटि भंगिमा होइत क्षणहिमे करय अखिल जगती संहार

पञ्चतत्व केर संमिश्रणसँ बनल जखन ई विश्व समग्र
प्रथम तखन अवतीर्ण भेल छल मानव जीव मात्रसँ अग्र

मानव एक दुरन्त समस्या द्विविध ज्ञानमय द्वैध स्वभाव
आयल संग संग लय भू पर भिन्न प्रकृति ओ भिन्न प्रभाव

मानव प्रति-पक्षी बनि दानव कयलक अपन रूप विस्तार
एक देह बनि गेल मनुज ओ दनुजक एक मात्र आधार

मानव-धर्म क्षमा, करुणा, सच्छील जीव मात्रक कल्याण
सत्य, अहिंसा, शान्ति, विश्वबन्धुत्व प्रेम ओ त्याग महान्

किन्तु दनुज निर्दय, खल, क्रोधी, पापी, पर-पीड़क अति-क्रूर
कुटिल प्रवंचक मिथ्यावादी त्याग शान्तिसँ कोशो दूर

हिंसा लोभ-कुकर्म-निरत रहि दानव निशि-दिन साधय स्वार्थ
बलि कुकर्म अन्याय मार्गपर मानय अपन परम पुरुषार्थ

दनुज मनुजमे भेल कतेको दिन धरि बेर बेर संघर्ष
कौखन विजयी होय मनुजता कौखन दानवता अति हर्ष

सत्ता हेतु दनुजता झगड़य करय मनुजता शान्ति प्रयास
गूँजय कौखन शान्ति-रागिणी, गर्जय कौखन सत्यानाश

विधि-निषेध, अधिकार-कुचेष्टा सुख-समृद्धि, पीड़ा-संताप
आयल संग संग एहि जगमे शान्ति-भ्रान्ति ओ हास्य-विलाप

अति निर्बन्ध बिचार शून्य ओ स्वेच्छाचारी लोक समग्र
उभय-तत्वकेर सम्मिश्रणसँ अतिशय जीव-मात्र छल व्यग्र

सभमे मानव, सभमे दानव भेल समस्या विकट दुरन्त
हेरल समाधान सभ नूतन भेटल मुदा जखन नहि अन्त

मानव–तत्व–प्रबल क्यो प्राणी अपन बढ़ौलक ज्ञान कनेक
पाबि गेल प्रति-प्राणि-मात्रमे प्रकृति अधिष्ठित बीज अनेक

कऽ विभक्त अनुरूप स्वभावक निखिल जीवकेँ श्रेणीबद्ध
चारि भाग अनुकूल बनौलक सभकेँ एकसूत्र आबद्ध

मानब-तत्व प्रबल ब्राह्मणगण शासक दानवीय गुणयुक्त
अधिक न्यून किछु सम्मिश्रण सँ भेल वैश्य ओ शूद्र प्रयुक्त

भुजबलसँ दानवता गर्जय लय करमे भीषण संहार
नैतिक अंकुशसँ वस ब्राह्मण आनय गज जौं सोटामार

उभय पाप पुण्यक परिपूरक संतत कार्य कर्मबश आन
शासक अनुशासित शासित पद कयलक प्राप्त सहित सम्मान

दनुज-मनुजमे युगयुग चलइत द्वन्द्वात्मक संघर्ष कराल
बनल सृष्टिमे नव्यरूपसँ राजनीतिकेर क्षेत्र विशाल

क्रान्ति-भ्रान्ति, हिंसा-प्रतिहिंसा जीवन-मरण, शाम ओ दंड
सुधा-गरल-सन्तोष - तितिक्षा राजनीतिमे बसल अखंड

कालक्रमसँ जखन जखन अनियंत्रित बनय समाजक रूप
कुत्सा, अनाचार, कायरता, पतन बनाबय काय कुरूप
गलित कुष्ठसँ होइछ समाजक शिथिल-घृणित सभ अंग विवर्ण
राजनीति प्रकटैछ विकटतम लय कराल ज्वालामय-वर्ण
कौखन क्रूर, नृशंस, निठुर बनि करय समाजक नव-निर्माण
कौखन शान्तिपूर्ण-वाणीसँ फूकि दैत अछि मंत्र महान्
अमृतक हेतु मथल वारिधि ओ कुरुक्षेत्रमे मचबय मारि
परशुराम करगत कुठारसँ तप्तधराकेँ लैछ उबारि
स्वर्णमयी लंकासँ उठइछ राजनीतिकेर भीषण ज्वाल
देवलोकसँ दनुज लोकधरि पीड़ित व्यथित होइछ तत्काल
तखन मनुजकुल पुरुषोत्तमसँ चढ़य धनुषपर खरतर वाण
नूतन मार्ग बनय जगतीमे विकल मनुजता पाबय त्राण
शुद्ध बुद्ध अमिताभ वचनमे भरि भरि कूटि-कूटि संदेश
बाँटि दैछ सम्पूर्ण विश्वमे मध्य मार्ग ओ मध्य निवेश
भूत भविष्यत् वर्तमाममे राजनीतिकेर क्रीड़ाधीन
रहय अखिल जनलोक मुदितमन अथवा हो सङ्कटसँ क्षीण
हरिः ओम् शान्तिः शान्तिः कहि पौलन्हि गुरु प्रवचन विश्राम
श्रमसँ रक्तवर्ण मुखमण्डल भेल बाल-रविद्युति अभिराम
क्षण भरि बनि आश्वस्त मनहिमन सोचि अपन किछु थिर मन्तव्य
करइत इंगित कोन प्रकारक राष्ट्र समाजक अछि भवितव्य
कहलन्हि गुरु सुनु छात्रवृन्द हे ! एखन राष्ट्र अछि सङ्कटग्रस्त
ईर्ष्या-दम्भ-निरत शासकगण करय चलल अछि देश-ध्वस्त
क्यो ककरो नहि सुनय, न मानय, अछि बुझैत सभकेँ सभ ओछ
आर्यावर्त्तक अति अभाग से शासक बनल स्त्रैण ओ घोंछ

महानन्द अति स्वेच्छाचारी दैछ न राजकाज पर ध्यान
उचित, न्याय-सम्मत विचारपर करय अनादर ओ अपमान

श्रेष्ठ मंत्रविद नीतिशास्त्रमे शुक्रक सभ मंत्री शकटार
अंधकूप मे बिता रहल छथि जीवन दुखद सहित परिवार

छीनि कतेको स्वत्व लोकके दैछ राज्य-निष्कासन दण्ड
मद्यप-लंपट ओ व्यभिचारी झूठ फूसि देखबैछ घमण्ड

कोखन बुद्ध-धर्म-अनुयायी कोखन वेद-मार्गके मानि
भेद नीतिसँ प्रजावर्गकेर करइछ धन-जन-सम्पति हानि

पुरु, पांचाल देशकेर शासक यद्यपि धीर बीर बलवान
किन्तु मूढ़ मिथ्या घमण्डवश करइछ नहि ककरो किछु कान

तेसर अछि गान्धार नृपति जे वृद्ध, अशक्त, तेज बलहीन
मुख्य द्वार-रक्षक भारतकेर एखन बनल सभ तरहें क्षीण

किछु गणतन्त्र राज्य अछि छिटफुट अल्प आयुमे शैशव रूप
वर्त्तमानमे अनुपयुक्त ओ शून्य तत्वबत् शून्य स्वरूप

ओम्हर सिकन्दर आबि रहल अछि बढ़ल बिदेशी अति बलवान्
नृपतिगणक पददलित दर्प कय विश्व-बिजयहित धयने ध्यान

आवश्यक अछि एखन राष्ट्र शासकगण एकसूत्र आवद्ध
एक मन्त्रबल, एक यन्त्रबल, एक तन्त्रबल बनि सन्नद्ध

पारस्परिक मलिनता ईर्ष्या कटुता पूर्वभावकें छाड़ि
उठा लेथि राष्ट्रक रक्षाहित आर्यवीर सभ मिलि तरुआरि

देखि सकय सम्पूर्ण जगत ई सङ्घक चमत्कारमय हेतु
होइछ न अपमानित जगतीमे आर्यक गिरि गौरवगत केतु

यद्यपि हमर जन्मभू मिथिला अछि नहि अधिक एतयसँ दूर
किन्तु एखनअछि पड़ल राष्ट्रपरशनिक दृष्टिगोचर अति क्रूर

तेँ उत्सुक रहितहुँ मिथिला दिसि जैब न उचित एखन किछुकाल
करब काज ओ जाहि प्रकारेँ हो स्वराष्ट्रकेँ उन्नत भाल

एकबेर कर्तव्य हमर अछि हैब राष्ट्रहित पूर्ण सयत्न
बाँचि सकय राष्ट्रक मर्यादा सफल विफल वा होय प्रयत्न

मालव वीर ! अहाँ गान्धारक राजनीतिपर राखब ध्यान
सम्भव थिक युवराज करत किछु राष्ट्र-विरुद्ध अपन अभियान

मागध शत्रु सैन्य गतिविधिपरअपन सूक्ष्मतम राखथु दृष्टि
स्वानुकूल अवसर जौं पाबथु करथु परस्पर भेदक सृष्टि

किछु मालब, क्षुद्रक आ पौरव जा स्वदेशमे करथु निवास
सिद्धि-हेतु एहि महासमरमे जनतासँ पाबथु विश्वास

पाटलिपुत्र तथा पाञ्चालक उठौलैत छी हम सभ भार
एकसूत्रमे बान्हि सकीं तँऽ हैत राष्ट्रकेर पुनरुद्धार

अनुनय बुझू, मानु अनुशासन अथवा हमर जानि आदेश
जाउ अपन कर्त्तव्य मार्गपर देथु शक्ति, बल प्रभु सर्वेश

★ ★

तृतीय सर्ग

देनिहार न अंजलि क्यो अंशज तकनहुँ नहि भेटत क्यो वंशज
चाणक्यक अछि ई प्रण महान मिथ्या गौरव नहि, आत्ममान'

★

अछि नन्दक सभा विशाल जुड़ल अतिशय आनन्दित भरल पुरल
आश्रित जन गण सब ठामठाम बैसल अछि कयने टीमटाम
बुझि पड़इछ चिन्ता भागि गेल सुख शान्ति समाजक जागि गेल

किछु उच्चासनपर मन्त्रिप्रवर पार्श्वस्थ दण्डधर ओ अनुचर
छथि राजित अछन महत्तामे सामर्थ्यवान जे सत्तामे
मिथ्या गौरवसँ ओर - बोर ऐँठैत अंगकेर पोर - पोर

अछि मध्यभागमे सिंहासन शासनक श्रेष्ठतम उच्चासन
मणिखचित, वर्णसँ परिपूरित बहुमूल्यवान हीरक सज्जित
के देखि सकत ई चकाचौन्ह ? देखितहि दर्शकगण औन्हमौन्ह

चाँदनी चँदोवाकेर भीतर अति श्वेत छत्र माथक ऊपर
झलमल झलमल झलमल करैत अछि सूक्ष्म विविध झालरि झुलैत
सित-असित-नील-हरिताभ वर्ण कुकुंम-कुसुम्भ-कंचन सवर्ण

दू-चँवर ग्राहिणी दुहुकात कऽ भरल जवानी आत्मसात
अछि ठाढ़ि मनहिँ मन किछु निआरि कन्दर्पक धनुवत् भहुँ सँवारि
के वनत लक्ष्य जौं चलत बाण ? के करत लक्ष्य बनि प्राणदान ?

चानीक सुराही भरल भरल आगू आगू सबहक पसरल
आसव परिपूरित गोट-गोट मधुपान पात्र सभ छोट-छोट
अछि जीह सभक चटपट-चटपट पीबाक हेतु करइत छटपट

अछि श्वेत चँवर दू टा झुलैत मन मारि मनहि मन किछु बजैत
हम मार-रोग उत्ताप शमन हित बाँटि रहल छी मन्द पवन
औषधि उपचारक सङ्ग-सङ्ग छथि आबि रहल राजा अनङ्ग

रुनझुन रुनझुन रुनझुन रुनझुन सुनि भेल सभासद गण उन्मन
सभमे नवजीबन दौड़ि गेल शुभ ज्ञान-ध्यान सभ बौड़ि गेल
गणिकाक आसरा पाबि नन्द बैसल सिंहासन आबि मन्द

स्मर उद्दीपक संगीत प्रखर मृदुकांत पदावलि युक्त सुघर
शास्त्रीय विविध लय राग तान सुनि होइछ सभासद विगतज्ञान
वीणा, मृदङ्ग-करताल सङ्ग अछि बढ़ा रहल जन-मन-उमङ्ग

मदमस्त बनल शासक समाज अछि बिसरि गेल सभ लोक लाज
एहि सुरा सुन्दरीमे निमग्न ई शासक-चक्र समस्त लग्न
चलि रहल बारुणी जाम-जाम मचि रहल सभामे धूमधाम

बनि गेल प्रजाजन भाग्यभूमि आपानभूमि ओ रङ्गभूमि
चिर रक्षित संचित राज्यकोष बहि रहल, न ककरो तकर होश
एहि सुरा सुन्दरिक सत्तामे खसि पड़ल वीरता खत्तामे

जनताक दुर्दशा देखत के? राष्ट्रक मर्यादा लेखत के?
संकटसँ पहिनहि चेतत के? आपत्ति-बाट बढ़ि छेकत के?
जेखन शासक गण स्त्रैण भेल परतन्त्र बनकहित-चैन भेल

बसि गेल वीरता आँचरमे डूबल मर्यादा चाँचरमे
गौरब बौरायल पाँतरमे कायरता बैसल पाँजरमे
एहि आर्य भूमिकेर क्रूर भागसँ जमल घरे घर रङ्ग-राग

बहि रहल सुरा-सरिताक धार नहि ज्ञात होइछ किछु आरपार
उभचुभ उभचुभ उभचुभ करैत अछि सकल सभासद गण बूड़ैत
वार्द्धक्य जवानी संग बाल अछि नाचि रहल दऽ विविध ताल

नहि बाप-पूतमे किछु दुराव शासक-शासितमे भेद भाव
बान्हल मर्यादा पड़ा गेल लाजक सीमा भड़भड़ा गेल
आयल घर लक्ष्मी छाड़त के ? पसरल सुख सम्मुख भाँड़त के ?

मषि रहल एम्हर छल महारङ्ग सबहक मनमे अतिशय उमङ्ग
गुँजल तैखन अति प्राणबान-ई वाक्य 'आर्यगण' सावधान
लजबैत सिंहकेर विकट नाद पुरुषत्व युक्त भीषण निनाद

सुनि वाद्यक यंत्र मोहाय गेल पैरक चालन पथराय गेल
भय सभक हृदय सन्हिआय गेल लय स्वर गति-यति भुतिआय गेल
प्रति ध्वनित कतेको क्षणप्रमाण स्वर भेल 'आर्यगण सावधान'

तन्त्री स्वर सँ झङ्कार भेल ढोलक तबला ढंकार भेल
टुनटुन टुनटुन टंकार भेल ई तँऽ विचित्र चटकार भेल
निर्जीवो बनि अति प्राणवान कहि रहल 'आर्यगण सावधान'

भय-चकित चलित शासक समाज निःसरब बना पुरुषत्व साज
शोकक समुद्रमे डूबि-डूबि अतिशय चिन्ता सँ ऊबि-ऊबि
उद्वेलित मनसँ भेल मौन देखय लागल सभ कोन-कोन

मस्ती मदिरा केर भागि गेल क्यो क्यो सूतलसँ जागि गेल
मन्दोकेर टूटल तखन ध्यान फिरि आयल विस्मृत भेल ज्ञान
अधफुजल आँखिसँ किछु तकैत बाजल दोबड़ मदसँ झुमैत

के पहुँचि महापापी प्रचण्ड तोड़य अनुशासन ई अखण्ड
भऽ गेल सभामे रंग भंग ओ ध्वस्त बनौलक सभ उमंग
पूछू एकरासँ मित्रप्रवर की हेतु बनल अछि मूढ़ मुखर

पुरुषत्व तेज जलजल जरैत निर्भय तृणवत् सभकेँ गनैत
भऽ मध्य सभामे ठाढ़ धीर बनबैत सभासदकेँ अधीर
गूढ़ार्थ शब्द निज साजि सबल आगन्तुक तैखन बाजि उठल

मंत्री नहि अपनहिसँ पूछ धैरज धयने परिचय बूझू
हम आर्यक शोणित विन्दु—एक राष्ट्रक मर्यादा पूर्ण टेक
विद्रोह रूप दासत्वक छी उद्धारक मानव तत्वक छी

देशक इतिहासक लेखक छी राष्ट्रिय प्राणक संचेतक छी
गुरुतम गत गौरव-प्रेरक छी दुर्नीति-मार्ग संक्षेपक छी
हम छी मनुसुत नयपथ द्रष्टा संसार-नियामक नव-स्रष्टा

हम पाप-पुण्य निर्णेता छी हम विविध शास्त्र-अध्येता छी
भव-उद्भव भावक जेता छी हम जनसमाज केर नेता छी
हम छी गुरुकुल कुल-परिपालक परिसुप्त ज्ञान नित-संचारक

हम छी महान् अरि अज्ञानक स्वातंत्र्य-मंत्र-बल संवाहक
जनगणमे पौरुष संचालक, छी एक अग्निकर संदाहक
हम कालक गति-विधि-दर्शक छी हम एक विप्र संघर्षक छी

निर्बन्ध हमर गति सभ तरहेँ स्वच्छन्द सुदृढ़ मति सभ तरहेँ
थिक हमर मन्त्रबल निर्भयता निज मातृ-भूमि हित तन्मयता
किछु कहय ऐल छी सत्य तथ्य कटुताक पूर्ण वा मधुर कथ्य

सुनु बढ़ल विदेशी आबि रहल देशक मर्यादा दाबि रहल
अछि एखन उचित नहि राग, रंग भऽ रहल स्वराष्ट्रक अंग भंग
किछु तऽ भविष्य अनुमान करू अपनहिँ मनमे किछु ध्यान करू

जँऽराष्ट्र-देश अभिमानी छी पूर्वज-गत गौरव ध्यानी छी
तँऽ आँखि फोलि देखू झट दऽ अवसर अछैत चेतू चट दऽ
द्वेषादि परस्पर पचा लिअऽ राष्ट्रक मर्यादा बचालिअऽ

एहि राग तानकेँ विसरि जाउ रगरगमे किछु शोणित बहाउ
असुराक संगिनी सुरा छाड़ि परतन्त्र—पापकेँ दिअऽ टारि
ओ ! नव-जीवन-संचार करू देशक दुर्भर ई भार हरू

छाड़ू कंकण करवाल लिअऽ, तंत्री तजि कर तरुआरि लिअऽ
सूतल स्वदेश जनके उठाउ, रणभेरी रणस्वरमे वजाउ
गूँजय स्वराष्ट्रमे एक गान, जय आर्यभूमि जय महाप्राण

रुनझुनरुनझुन नहि झनझनझन किंकिणि नहि, सुनू कृपाणक स्वन
भरि अंग-अंगमे चमत्कार, करु शत्रु-सैन्यदल पर प्रहार
अरिगणकें शिक्षा सिखा दिअऽ निज नाम वीरमे लिखा लिअऽ

अरि गणकें मस्तक फोड़ि-फोड़ि, भुजदण्ड प्रबलतम तोड़ि-तोड़ि
कऽ शोणित प्रणिता भू विमोक हरि लिअऽ स्वराष्ट्रक रोग-शोक
सभ क्यो मिलि बल-बिस्तार करू, उठू स्वदेश उद्धार करू

छी पूर्व पुरुष विश्वास अहीं स्वर्गस्थित लोकक आश अहीं
टारब नहि, संकट के टारत ? मुइलोपर हेरि हेरि—मारत।
की पराधीनता पीड़ासँ बाँचल स्वदेश ई बीड़ासँ

अछि कोटि वीर सन्तान जकर नहि हीनअवस्था दुखद तकर ?
मरिमरि कऽ फिरिफिरि जीबिजीबि अपमानक शोणित पीबि-पीबि
राखत जीवन की कानि-कानि परबशता सत्ता मानि-मानि ?

जननीक जठरसँ जन्म पाबि एहि जन्मभूमिपर प्रथम आबि
पीयूष-कल्प-रस विविध अन्न कऽ भोग बनल छी अति प्रसन्न
की करब न किछु सम्मान ओकर? व्यर्थे छल की सब दान ओकर?

जेहि धरा-धूलमे लोट-पोट भऽ छी बुझैत, निज तन अछोट
तकरो प्रति किछु तँऽ ज्ञान करू, अवसर पड़ने अनुमान करू
नहि किछु कर्तव्यक शेष रहल ? ऋणभार न की अवशेष रहल

जननीक कोरसँ जखन उतरि चढ़ि मातृभूमि केर कोर सम्हरि
रहितहुँ कतेक संघात योग कयलहुं बहुविधि सुखसाज भोग
की बनि कृतघ्न सभ बिसरि जैब? दुख पड़ने नहि किछु काज ऐब ?

अति प्राणवान शीतल सुखकर, लऽ मातृभूमिसँ वायु सुधर
प्रतिक्षण प्रतिपल प्रतिश्वास-श्वास छी लैत स्वजीवनमे सुवास
नहि तकर कि दुर्वह भार हरब? की नरता केर निस्तार करब?

अछि प्राप्त देह सभसँ अनूप जगतीतलसँ सुन्दर सुरूप
सभ बिसरि परस्पर पूर्व द्वेष साजू वीरक अनुकूल बेष
हम छी करैत अनुनय सभसँ किछु छी कहैत सविनय सभसं

स्वर्गहुँसँ सुन्दर जन्मभूमि रक्षा-हित रण मद झूमि झूमि
अमरहु गणसँ पूजित स्वपाद ऊठू छाड़ू चिन्ता-विषाद
औ आर्यपुत्र ! औ शक्तिवान् ! राखू स्ववंश-यस मूल्यवान्

चुप रहल सभासद श्वास साधि, सुनि सुनि आगत जनकेर उपाधि
की हैत, न ककरो किछु बुझाय, भय समा गेल सभमे समाय
चित्ती भुतिआयल बीच डगर सभ खेल हेड़ायल बनल सुधर

बाजल तैखन आमात्य प्रवर किछु अहम्भाव जगबैत प्रखर
की नाम, कतयकेर वासी तों ! ऐलह बनि कऽ उपहासी तों ?
छह नहि की मोह स्वजीवनसँ? नहि लाज ग्लानि की तन-मनसँ

की हेतु करै छह अनधिकार, चेष्टा, बिनु कयने किछु बिचार ?
की बूझि पहुँचलह सभामध्य देखबय स्वरूप निज अतिअसभ्य ?
की भय नहि मगधक सत्तासँ नरमेध-कारिणी कत्तासं ?

जौँ राज-क्रोधकेर जरत ज्वाल, के रोकि सकत भीषण कराल ?
बँचतह नहि देहक अणु प्रमाण व्यर्थे छह कयने ई गुमान
चुप भेल सभासँ जा बाहर, जाबत नहि जागथि नर-नाहर

उदरम्भर ब्राह्मण कतहु जाह यजमानक घरमे भोज खाह
नहि अपन बृत्ति उच्छेद करह, नहि भोज्य वस्तुमे भेद करह
नहि राजनीतिकेर अधिकारी, भिक्षुक पूजक कुश-तिल-धारी

क्यो जीवय वा भय जाय नाश, ककरो गरमे हो पड़ल फाँस
किछु अछि नहि हमरा काजवाज हो लोभ–मोह वा लोक-लाज
जे खुनत मूढ़ ओ खाधि खसत अपनहिँ दलदलमे आबि फँसत

जकरा पर आबय, ओ जानय जकरा पर बीतय, ओ जानय
हमरहुपर आओत बूझि लेब हम अपनहि अपनहि जूझि लेब
के हमरासँ रण ठानि सकत? के काल हाँकि कय आनि सकत ?

अछि हमर अपन स्वाधीन नीति ककरहुसँ नहि किछु प्रीतिरीति
जे करी काज अपनहिँ मनसँ नहि बनि धनिक आनक धनसँ
नहि चलय कुचक्रीकेर कुचालि एहि ठाम न धूर्तक गलय दालि

चुप भेल जखन मन्त्री मानी मिथ्या घमण्डवश अभिमानी
नन्दो बाजल हँ ठीक–ठीक मन्त्रीक कथन उपयुक्त थीक
जा पकड़ि लैह तोँ अपन बाट हेरह अपना लय आन घाट

सुनि सुनि शासक वृन्दक अकथ्य सभ तरहें शून्य विचारक तथ्य
पतनोन्मुख राष्ट्रक मार्ग रूप सभ भाँति समाजक अन्धकूप
भरि-भरि स्ववाक्यमे तीक्ष्ण गरल आगन्तुक तैखन बाजि उठल

दुर छी छी, एखयहुँ छी बजैत उत्साह वीर्य वल सभ अछैत
जा नुका रहू आँचर तरमे, पहिरू कंकण अपना करमे
लऽ पानि चुरू भरि डूमि मरू दह पोखरिमे वा कूदि पड़

तैखन देशक दुर्भाग्य भेल, ई भरल सभा सभ माउग भेल
संकुचित हृदय अतिशय अखण्ड कऽ रहल राष्ट्रकेँ खण्ड-खण्ड
नहि बाँचल हा ! एकत्व रूप, खुनि रहल परस्पर खाधि-कूप

अपनहिँ मनसँ छी बनल वीर घरमे बैसल रहि परम धीर
भूकय कुकुरो घऽ अपन मोख, सजमनिपर सितुआ होइछ चोख
घरमे शिकार खेलय बिलाड़, बौनो मन-मन तोड़य पहाड़

होयत गजारिको क्यो नढ़िआ? पाओत पौरुष बल की कोढ़िआ?
नामर्द खड्ग की उठा सकत? रणभेरी कायर बजा सकत
धिक्कार अहाँ सभकेँ शतशत दुत्कार अहाँ सभकेँ शतशत

इतिहास अहाँ सभपर थूकत, भावी सन्तानो नहि चूकत
सभ कानि-कानि कऽ गारि देत पूर्वजक पंक्ति सँ बारि देत
की लाज न किछु तकरो मनमे नहि ग्लानि आनि कनिञो तनमे

प्रारम्भ न करु परतन्त्र यज्ञ बनि अग्र पुरोधा महा–अज्ञ?
नहि नाश ज्वालसँ क्यो बाँचत ई घूमि-घूमि सभपर नाचत
युग-युगधरि किन्तु रहत अपयश इतिहास कलंकित बनत विवश

अवसरक कसौटीपर आबय मौका पर कौशल दरसावय
नहि फूसि-फटक अभिमान करय व्यर्थहिँ नहि शान-गुमान धरय
राखय रहि दृढ़ जे अपन टेक लाखो करोड़मे वीर एक

करइछ कालो सत्कार जकर युग-युग धरि पूजित नाम अमर
स्वर्णाक्षरमे इतिहास लिखय सुरपुरमे गीत अमर गूँजय
ओ वीर धराकेर वरद पुत्र शासन समाजकेर लैछ सूत्र

कल्याण राज्य केर निर्माता आदर्श समाजक अभिनेता
अछि प्रजा वर्गकेर प्राण तुल्य राजा शासक शासन अतुल्य
आदर्श राज्य निर्माण करू जन–जीवन–कल्याण करू

सुनि-सुनि आगन्तुक-उक्त तथ्य मौलिक, परन्तु कटु-युक्त-तथ्य
चुप भेल सभासद गण समस्त क्षण भरि नन्दो बनि गेल पस्त
बनि गेल प्रबल कर्तव्य मूढ़ गुत्थी ओझरायल कोनो गूढ़

किछु क्षणक अनन्तर सम्हरि गेल फिरि ऐल चेतना बिसरि गेल
क्रोधान्ध आँखिसँ किछु तकैत थर-थर थर-थर थर-थर कँपैत
आगन्तुकसँ अपमान मानि बाजल दोबड़ भ्रूभग तानि

रौ दुष्ट ! देख नन्दक स्वरूप कालहुसँ वेसी काल रूप
सूतलसँ जागल काल नाग जागल अछि तोहर क्रूर भाग
निज कर्तव्यक फल भोग-भोम नहिँ तँ पसरल विद्रोह योग

औ दण्डपाल ! सुनु बाक्य हमर अछि महा-नीच ई दुष्ट मुखर
किछु तेहन दण्ड दी पापीकेँ एहि राजद्रोह अभिशापीकेँ
नहि उठा सकय क्यो फेर माथ विद्रोहक फन्ना लेअय हाथ

सिंहक पिँजड़ामे दिअऽ छोड़ि, वा तप्त-कुण्डमे दिअ बोरि
लऽ शूल हृदयमे दिअऽ भोंकि नहि तँ माथामे कील ठोकि
अथवा हाथीकेर पैर बाँधि जाही तरहेँ हो दिअऽ साधि

बाहर करु दुष्टक शिखा खोंचि गौरव पापीकेर दिअऽ पीचि
झड़ि जाय नीचकेर बढ़ल शान किछु राज शक्तिकेर होइक ज्ञान
देखव नहि द्रोही भागि सकय नहि फेर वचन किछु बाजि सकय

दौड़ल सभ लऽ कर अस्त्र-शस्त्र छल ठाढ़ जतय ब्राह्मण निशस्त्र
खड्गी, शूली, धन्वी, लठैत, पहराक सिपाही ओ गोड़ैत
सभ दिससँ सभ क्यो छल बजैत बान्हू, पकड़ू, मारू डकैत

सत्ये क्यो धयलक शिखा दौड़ि राज्याभिमानमे बौड़ि-बौड़ि
सभ ज्ञानहीन पापी प्रचण्ड अति क्रूर अनाचारी उदण्ड
बढ़ि चलल द्वारि दिस किछु हँसैत अपना मनसँ मन-मन गजैत

अपमानित ब्राह्मण जागि उठल सूतल पन्नग फुफकारि उठल
पजरल क्रोधनल महाज्वाल उठि गेल रूप धय महाकाल
जागल अपमानित राष्ट्रधर्म जागल स्वदेश उद्धार कर्म

अति उग्ररूप अति प्राणवान निज आत्म-ज्योतिसँ भासमान
सभकेँ करैत आतंक-पूर्ण मिथ्याभिमान कय चूर्ण - चूर्ण
बन्दी रहितहुँ दय पूर्ण जोश बजलाह लोककेर लैत होश

पापी, पाखण्डी, परम नीच रौ ! निरपराध द्विज-शिखा खीच
निज निज परिवारक मृत्यु बीच भावी संहारक योग खीच
फूटत रौ ! पापक घृणित घैल भसिआयल शीघ्र कलंक शैल

बनि जैत शिखा ज्वलनक ज्वाला ई शत सहस्रशः फणिमाला
जावत् नहि नन्दक करत नाश सम्पूर्ण वंश परिकर समास
तावत् नहि बन्धनमे आओत विश्राम शान्ति कौखन पाओत

देखतैक चिता एहि सत्ताकेर नरमेध कारिणी कत्ता केर
देनिहार न अंजलि क्यो अंशज तकनहु नहि भेटत क्यो वंशज
चाणक्यक अछि ई प्रण महान मिथ्या गौरव नहि आत्ममान

तावत फाटक दोसर आयल बंदी गृहकेर अवसर आयल
तैखन पहुँचल किछु परम-धीर अज्ञात नाम कुल युद्ध-वीर
अनचोके असि खनखना उठल भाला-बरछी सनसना उठल

ठनि गेल युद्ध अति घमासान चढ़ि गेल दाओपर वीर-प्राण
बनि गेल क्षणहिमे नृप प्राङ्गण अति विकट भयंकर रण-आङ्गन
अघटित घटना ई घटित भेल नाटकीय ढंग संघटित भेल

क्यो मरल पड़ल, क्यो पड़ा गेल शासक दल अति हड़बड़ा गेल
क्यो कहय पड़ा रौ, अरौ बाप नहि शोर मचा, रह चूपचाप
ई भेल कतयसँ बज्रपात रौ तोड़ि रहल अछि गात-गात

जावत सभ क्यो चेतय-चेतय निज आँखि फोलि देखय-देखय
की भेल कोना रौ कोन ठाम बुझि पड़इछ किछु नहि दहिन बाम
तावत हम चढ़ि परिकर समस्त राजक सोमा टपि भेल मस्त

सैनिकगण सेनापति समेत तरुआरि - तीर - बर्छा फेरैत
पाछाँ सीमा धरि जा पहुँचल अपस्याँत होइत दौड़ल-दौड़ल
हाथक पक्षी उड़ि चढ़ल व्योम भऽ गेल व्यर्थ सभ जोग-टोम

क्यो बाजल कायर भागि गेल, देखितहिँ हमरा अति आगि भेल
यदि चोर जकाँ न पड़ा जइतय, हमरा सबहक आगाँ अबितय
छठिहारक दूध मोन पड़ितै, रणवीर बनब भुतिआ जइतै

क्यो कहलक ओ सभ छल चुहार, गुण्डा–डकैत धन लुटनिहार
आयल छल लूटय राज–कोष, मुठभेड़ होइत सठि गेल होश
देखितहि भयकारी सैन्य वेष, हौ पड़ा गेल सभ बदलि भेष

हँसि बाजल क्यो फिरि चलह यार, नहि गाल बजावह बेसुमार
देखितह जौं बाँहि भिड़न्त होइत, सभ गौरव–ज्ञानक अन्त होइत
घर पैसि मचौलक जखन युद्ध, नहि ठाढ़ भेलह क्यो नर विरुद्ध

मुँहमे जे आबह बाजि जाह, किछु अपनहिं अपनहिं गाबि जाह
अपनहिँ मन मिट्ठू छह बनैत शून्यहिमे बमबम छह करैत
रहबह नहि क्यो रणखेत ठाढ़ जौं भेटत युद्धक काल गाढ़

लऽ गेल छीनि बंदी राजक बनबैत राजबल बिनु काजक
मरदैत मान शासक गणकेँ कऽ मृतक तुल्य सैनिक जनकेँ
ई सभ देखितहु नहि होइछ लाज की वीरक एहने होइछ काज ?

हमरा मनमे होइछ शंका भावी विपत्ति केर आशंका
आजुक घटना ई पूर्वरूप किछु प्रवल भविष्यक मूलरूप
चेतह चेतह अवसर अछैत बनि जाह न गौरवमे अचेत

सुनि सुनि औचित्य भरल वाणी जरि उठल मूढ़ मिथ्या मानी
ई थिक कायर क्यो बाजि उठल हँसि कुत्सित शब्दो साजि उठल
नाशक अवसर जखनहिँ अबैछ विपरीत बुद्धि तखनहिँ बनैछ

एहिना गप्पे पर गप्प दैत मदिराक खुमारीमे झूमैत
फिरि आयल सभ नृप–सैन्यभवन अतिशय आनन्दित भेल सकल
चलि गेल सुरा भरि जाम-जाम मद माँति खसल सभ ठाम-ठाम

चतुर्थ सर्ग

'कटितट खड्ग' पीठपर तरकस लटकल धनुष-कान्हपर ढाल
ज्ञात होइत भूतलपर आयल क्यो रक्षाकारी दिक्पाल'

✱

अस्ताचल-चोटी चढ़ि बैसल दिनकर देखि क्षितिजकेर छोर
आनन्दित छथि होइत हृदयसँ प्रकृतिजन्य सुषमामे भोर
हुलसल फुलसल संध्यारानी मनसँ प्रियतम-प्रेम-विभोर
निकट काल अनुमानि विछोहक ऐल पहिरि कय लाल पटोर
आबि चतुर्दिशसँ पक्षीकुल गाबय बिदाकालकेर गान
परदेशी प्रियतमहित अर्पित कयने श्रद्धासँ सम्मान
कर-पल्लवसँ इङ्गित कय तरु प्रकट करैछ मनोगत भाव
मधुकर स्वस्ति बँचैछ मुदितमन चाहय मार्गक विघ्न दुराव
लय पुष्पाञ्जलि प्रकृतिकुमारी क्रमक्रमसँ कुसुमक निक्षेप
झिंगुर किंकिणि पहिरि पैरमे करय भावसँ पद प्रक्षेप
गगन किशोरी भरि भरि झोरी लाल अबीर सहित अनुराग
उड़ा उड़ा विस्तृत आँगनमे खेलि रहल आनन्दित फाग
पुष्प वृन्दकेर सौरभ शीतल सुखकर मन्द-मन्द पवमान
परिजन हित संदेश प्रेमसँ बाँटय पावन पवन महान
झेलम तटपर युद्धशिविरसँ आध कोश नुमानित भान
अछि मनहर तरुराजि विराजित विविध पुष्प सज्जित उद्यान
आम, कदम्ब, पनसफल, जामुन, लीची, नेबो, मधुर; लताम
सीताफल, अजनास, शरीफा, दाख, छुहारा, तूति, बदाम
नारिकेल, केरा, समतोला, किसमिस, काजू ओ जम्बीर
सेब, अनार, बेदाना, सुन्दर पड़ल नासपाती अंजीर

पंक्तिबद्ध क्रम-क्रमसँ सज्जित फलक भारसँ निम्न झुकैत
हरित, पीत, अरुणाभ, सितासित अछि मोहक उपहार बनैत
इला, लबंगलता, अंगूरी, केसरलता सुरभि प्रियधाम
ठामठाम क्यारीमे शोभित बाँटि रहल अछि सुरभि ललाम
चम्पा, चन्द्रकला चौथड़िया, चारु चमेली सुललित वेष
मधुर मालती, जूही, वेली, हरसिंगारसँ मँहमँह देश
लालगुलाब, कनैल, मोतिया, रजनीगंधा-गंध अधीर
मौलश्री, कमनीय कामिनी, गन्धराज ओ प्रिय करबीर
गेना, गुलदावरी, कटहरी, सूर्यमुखी, तारा अभिराम
अपराजित, परमकल्याणी, दुपहरिया ओ वकुल ललाम
पुष्पित सुरभित मधुप निषेवित विविध वर्ण आकृतिसँ भिन्न
पुष्पवृन्द मनहर बनैछ जे दर्शक जनकेर हृदय अभिन्न
कोनोठाम लतासँ निर्मित कुञ्जपथिक विश्राम स्थान
पाथर वेदी कतहु, कतहु अछि शीतल तरुवर छायाबान
मध्यभागमे शान्तसरोवर दुग्ध स्वच्छ निर्मित जलपूर्ण
दृष्टि फिरैछ न देखि जकर छवि सुखकारक शुभसौम्य सुपूर्ण
जलमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौन्दर्य अपार
सुखमे खग, खगमे कल कलरव कलरवमे मुदमोद प्रचार
सरमे कमल, कमलपर मधुकर, मधुकरमे कलमद गुञ्जार
तरुमे दल, दलपर कोकिलकुल, कोकिलकुल कलनाद उचार
रक्त नील श्वेताभ प्रफुल्लित शत सहस्र शतदल अभिराम
उझकिउभकि कऽ देखि रहल अछि अस्त होइत रविरूप ललाम
जलकुक्कुट, कलहंस सदलबल, सारस सुखी सहित परिवार
रंगबिरंगक माँछ मोदसँ उछलि कूदि कय करय बिहार
हरियल, नीलकंठ, लालबोगी, खंजनि, कोकिल, फलक कयूर
शुक, मैना, सितली, बटेरगण अति प्रसन्नतासँ चूर

बुलबुल चुलबुल मचा रहल अछि, उड़य कपोत बनल निर्द्वन्द
परबा गुनि-गुनि प्रीत चित्तमे चढ़य गगन-गढ़पर स्वच्छन्द
हरित दूभिमे पालित मृगगण अछि चरैत बनि अति निश्शंक
दौड़ि दौड़ि खरहा स्वभावसँ अपनहि अपनहि होइछ सशंक
एहन रम्य उद्यान बीचमे चिन्तित घूमि रहल क्यो व्यक्ति
वीर वेश, अछि अंग अंगमे भरल वीरता अक्षय शक्ति
उन्नत ग्रीव, ललाट समुन्नत, उन्नत नासा तन अनुरूप
विस्तृतवक्ष, विशाल बाहुयुग, नयन श्वेत नीरजकेर रूप
बीसम वर्ष वयस्क युवक प्रिय दर्शनीय सुन्दर वपुमान
बूझि पड़ैछ रूप धरि आयल स्वयं छात्रबल अति बलवान
कटितट खड्ग, पीठपर तरकस लटकल धनुष कान्हमे ढाल
ज्ञात होइछ भूतल पर आयल क्यो रक्षाकारी दिक्पाल
घूमि रहल चिन्तासँ व्याकुल किछु करैत मनमे सुविचार
तैखन श्रवणरन्ध्रमे पैसल करुणामय नारी चीत्कार

सरोवरसँ लगले किछु दूर संगमर्मरकेर मण्डप एक
परम रमणीय सुखद सभकाल भीतपर चित्रित चित्र अनेक
दर्पणोपम अति निर्मलरूप नियन्त्रित शीतग्रीष्म सताप
खिचल अछि विविध खेलकेर खाँत मनोरंजन साधनकेर माप
मुदितमन बैसि बालिकावृन्द खेलाइछ चौसर सहित उमंग
परस्पर करइत हासविलास जाहिसँ सचालित प्रत्यंग
गुलाबी, हरित. पीत, नीलाभ कुसुम ककरेजा मिश्रित आन
ललित लावण्यपूर्ण वपुमध्य सुसज्जित विविध वर्ण परिधान
बुझाइछ स्वर्गलोक सुख छोड़ि मर्त्यलोकक भोग्य सुखभोग
अमरकन्यागण पहुँचलि आबि काल अनुकूल पाबि संयोग

जुआनी बचपन संगहिसंग सुसज्जित शोभित ललित ललाम
बसल अछि दुहु प्रेमसँ आबि वयःसन्धिक बुझि समुचितधाम
किशोरीसम समान बयरूप अमित सुन्दरताकेर आगार
तकर अछि नहि उपमा उपमेय कल्पना कलित काव्य आधार

अचानक आमक डारि झमोड़ि बीचमे कूदल बानर एक
डरेँ हड़कम्प बलिकाबृन्द रहल नहि ककरो बुद्धि विवेक
मचौलक ओ घमलौड़ि ततेक भेल अति करुणापूर्ण चीत्कार
भीत भूषणौं अधिक भय त्रस्त सुनौलक भयसूचक झंकार

अगे मैया, दैया, रौ बाप बचावह दौड़ह भेल अनोर
प्राण नहि बाँचत, आयल काल, बढ़ल अति त्राहित्राहिकेर शोर
उचित अवसरपर तखन एक अलक्षित आबि कतहुसँ वाण
भयार्द्दित जनकेर रक्षा हेतु भगौलक बानरकेँ अनजान

प्रकट कय तखन स्वकीय स्वरूप व्यवस्थित त्रातासम गुणवान
सुनौलक छी निर्भय अति देवि ! करू सभ निजनिज घर प्रस्थान
अचंभित भेलि किशोरीवृन्द होय नहि मुँहसँ शब्द बहार
एक दोसर दिस समय तकैछ लाजकेर टूटत कोना पहाड़

अपरिचित व्यक्ति पुनः किछु सोचि चलल फिरि पाँचसातदस डेग
किशोरीमे वयस्क छलि एक, सकल नहि दाबि मनक उद्वेग
पराजित कय कोकिल कलकण्ठ, लाजमे राखि वीणकेर तार
प्रेमसँ बाजलि सुनु अनजान पथिक किछु हमर सभक मनुहार

अहाँकेँ धन्यवाद अछि वीर ! बनाबथु ईस शील बलधाम
बचा सेनापति पुत्री-प्राण बनल छी स्नेहक पूर्ण विराम
अपरिचित मन परिचय केर हेतु भेल अति उत्सुकतावश व्यग्र
कोन देशक वासी, की नाम ? कृपाकय परिचय दिअऽ समग्र

सेल्युकससँ किछु लिअऽ ईनाम अतिथि बनि बास करू दिन चारि
पद प्राप्तक ईच्छा होय दिशा दी सम्मानित तरुआरि

ठाढ़ भय पाँछा धरि अनजान जखन कमलक निज दृष्टि प्रसार
ललित लावण्य कान्त कमनीय सौम्य सौन्दर्य शील आगार

सखीजन मध्य भावमे व्यस्त लजाइत ठाढ़ि बालिका एक
देखि अनजानक सौम्य स्वरूप बिसरि सभ गेल निजत्व क्षणेक

दुहुक लड़ि गेल आँखि सँ आँखि बनल अनजाने भाव विभोर
अंकुरित भेल हृदयमे बीज, प्रेम सरवरमे उठल हिलोर

युद्ध केर किछु निर्णय नहि भेल उभय दल बनल रहल बलवान
दुहु केर हारि: दुहु केर जीत बन्हायल दुहू हृदय अनजान

क्षणन्तर होइतहि स्थिति केर ज्ञान लाजमे डूबल दुहू समान
वदलिकय भाव तखन अनजान बढ़ौलक प्रकृति दृश्य दिश ध्यान

भेल संध्या घर जाइक बेर: कतय छह सुनह हेलनादाय
अदृश्यहिसँ ई वाक्य सुनैत चकित बनि गेल सगर समुदाय

राजरानी अबैत छथि. शान्त रहू सब क्यो हो नहि किछु भान
पथिक रहु नुका कुन्जमे जाय, उठल क्यो बाजि भयार्दित प्राण

चलल वीरत्व सँ वोझिल मनस्वी
अपन सत्कर्म गौरवसँ यशस्वी
कुमारी हेलना मन मथन कयने
हृदय गुरुवरक सिद्धान्त धयने

★

पञ्चम सर्ग

'एकसर हमर नीति संशोधित अरिकें करत परास्त
क्यो आबय आ जाय, न भय किछु छी हम सभ पर्याप्त'

★

कहु कुशल दिनकर कुमारी कोन तरहें बहि रहल छी
छी सुखी मनसँ कि तनसँ दुःख दारुण सहि रहलि छी
की अही तट पर बसै छल कृष्ण क्यो काली नचैया
रास रचबै छल मुदित मन प्रेमसँ वंशी बजैया ?
दुष्ट कंसक नीतिसँ उबि गेल जखने अखिल जनगण
की अहीं केर कृष्ण कयलनि कहु धराकें मुक्त पीड़न ?
आइ ओ भारत रचैया पार्थ रथ बाहक कतऽ छथि
कर्मधरि अधिकार, शुभ-संदेश-संवाहक कतऽ छथि ?
उठि रहल जनजन हृदयमे हाय जमुने ! करुण क्रंदन
बनि रहल भखाड़ शोभाधाम राष्ट्रक रम्य नंदन
परम लंपट, क्रूर, कायर अछि बनल हा ! वीर वंशज
भाग्यवश बनराज कुलमे भेल बानर रूप अंशज
की अहूँ गुनि धुनि मनहि मन अति व्यथित पीड़ित कनै छी
सुमरि कय बीतल सुखक दिन नीरसँ धूरा सनैछी ?
धीर धरु अयि कर्ण सोदरि ! कर्ण फिरि औताह झट दय
छथि घुमैत नवीन भृगुवर देश केर भवितव्य पट लय
यैह तट बनि जैत यमुने ! आर्य देशक शिविर नूतन
संचालित होयत एतहिसँ बिकट दुर्मद सिंह गर्जन
योगिराजक पार्थ जागत लय प्रबल गांडीव करमे
भीमवल धर्मक सहोदर प्रगट होयत एहि समरमे

वैह देखु, घुमैछ चिन्तित पारमे चाणक्य ब्राह्मण
साधु वेश तकैछ उत्सुक दिशि प्रतीचिक शून्य प्रांगण
कय रहल ककरो प्रतीक्षा बनि रहल किछु व्यग्र मनमे
लागि गेल बिषाद कीटक हो यथा सुन्दर सुमनमे
शान्ति पूर्ण पवित्र मण्डप उच्च पीपर पर बनल अछि
देशकेर सभ भागसँ प्रतिनिधि समाजक जुटि रहल अछि
प्रथित अछि संसारमे ई धर्मसम्मेलन रहल भय
किन्तु देशक राजनीतिक मंत्रणा किछु हैत निश्चय
छद्म-वेशी साधुगण छथि विविध प्रान्तक वीरनायक
राष्ट्र, धर्म, समाज ओ स्वाधीनता हित प्राण दायक
अंग, बंग, कलिंग, कौशल, मगध मालवकेर वासी
कुरु, असम, पांचाल ओ गांधार मिथिला राज्य वासी
पूर्व निश्चय कार्य क्रमसँ सभ स्वदेशक गति निरीक्षक
भऽ रहल छथि एक ठाँ स्वाधीनता केर अंग रक्षक
कोटि कोटि मनुष्यमे किछुओ जतय छथि राष्ट्र प्रेमी
देश – धर्म – समाज – मर्यादा बचएबा हेतु नेमी
देश ओ परतंत्र, परशासित निराश्रित बनि सकय की ?
उदित तीक्ष्ण मयूख दिनमणि अवतिमिसँ झँपि सकत की ?
अछि सुरक्षित बीज तँऽ भय जैत वृक्ष विशाल निश्चय
धूरिमे अबला सुधरमे नहि करैछ निसर्ग निर्णय
किन्तु अछि अनुकूल अवसरकेर प्रतीक्षा काज सभमे
अवसरहिँसँ सूर्य - शशि - नक्षत्र – गण घुमैत नभमे
होइछ अवसरसँ भयद ज्वालामुखी विस्फोट कौखन
शान्ति शील गंभीर सागर प्रलयकारी रूप कौखन
अछि जरैत स्वतंत्रताकेर आगि जँऽ अन्तर हृदयमे
भय सकय अवरुद्ध गति की कोटिशः जन-यत्न नियमे ?

हिमशिखर पतिता त्रिपथगा-धार पर प्रतिरोध गामी
राखि पाओत की अपन अस्तित्व क्षण भरि क्यो सुनामी ?
दिशि प्रतीचीसँ जखन बिड़रो बिहाड़ि उठैछ भीषण
थिक ककर सामर्थ्य जे हो ठाढ़ व सम्मुख सुलक्षण
ऐछ संध्या नायिका तरुणिमा परिपूर्ण यामा
मानिनी मनसँ, हृद प्रेममे लवलीन श्यामा
प्रिय - मिलन हित व्यग्र अतिशय कृष्णपट परिधान कयने
खोंइछमे तारक गणक किछु प्रेममय उपहार धयने
अश्रु कण खसबैत भूकेर हरित तरुदल पर व्यथितमन
हेरि हेरि दिन्ते दिश प्रिय भावनासँ होइत उन्मन
तिमिर तरुपरसँ तकै अछि छथि कतऽ रजनीश आबथु
प्रेमसँ हँसि हँसी वियोगक राति क्षण भरिमे बीताबथु
किन्तु छथि रजनीश बैसल मुदित मन औखन अमाघर
अन्य जन आसक्त प्रेमी की रहय एकत्र निर्भर ?
भेल सम्मेलन सफल कहि फिरि गेला अछि धर्म-ध्यानी
रहि गेला अछि किछु समाजक राष्ट्र देशक प्रबल मानी
सघन तिमिराछन्न तरुतर छाँहमे बैसल सभा अछि
माँझमे राखल कोनो ठां क्षीण उल्काकेर विभा अछि
अखिल जन समुदायकेर किछु सभ्य ओ सम्मान्य सज्जन
कय रहल छथि मंत्रणा अति गुप्त रूपें सहज जनगण
प्रतिनिधि ठाढ़ भय गांधार प्रतिविधि कथ्य निज सभकें सुनौलनि
देशकेर दुर्भाग्य सूचक कार्य क्रम अरिकेर जनौलनि
सुनि सभासद वृन्द ओ गांधार राजक खबरि नूतन
संधि कय युवराज पापी गेल अछि वनि शत्रु रंजन
कय विविध उपहार अर्पित अश्व गजरथ सैन्य पदचर
मानचित्र समस्त देशक सुगम पथ, नद, स्रोत, सागर

परम पापी सिन्धुमे नौका स्वदेशक जा डूबौलक
रहि विमुख रणसँ कुकर्मी नाम क्षत्री केर हँसौलक
किन्तु साधारण प्रजागण राज्यसँ विपरीत गामी
अतिव्यथित, पीड़ित मनहिमन बनि रहल विद्रोह कामी
आश अछि सभ बीर वंशज युद्धसँ नहि बाज आओत
उचित अवसरपर प्रकट भय राष्ट्र देशक काज आओत
कहि अपन मन्तव्य बैसल जखन ओ गांधार वासी
उठि तखन प्रारम्भ कयलक कथ्य क्यो पांचाल वासी
मंत्रणाकेर लय निमन्त्रण दूतवर पहुँचल जखन छल
बाजि कुत्सित शब्द किछु पुरुराज विहुसल दम्भकेर बल
हमर मर्यादाक सीमा नीच वंशजजन छुअत की ?
बैसि हंसक पंक्तिमे क्यो काक सम्मानित बनत की ?
एकसरे हम युद्ध ठानब नहि मिलब जा निम्न नरमे
फाँड़ि कय दू फाँक पाँती फेंकि धयलक पैरतर मे
अछि प्रजा सभ राज्यमे अनुरक्तवीर महागुमानी
लड़त तँऽ निश्चय, परन्तु न संगठित भऽ सकत मानी
संगठित छथि अंग, मालव, कुरु तथा क्षुद्रक युवकजन
ठाढ़ भय बाजल तखन क्यो देश रक्षाहित प्रवलमन
नन्द तँ विख्यात अछिए युद्धमे नहि संग आओत
गुप्त रूपेँ किन्तु मागध वीर रणमे रंग लाओत
शत्रु शिविरक गति निरीक्षक उठि सुचिन्त वाक्य बाजल
आत्मबल गौरव नियन्त्रित धैर्य ओ बीरत्व साजल
शत्रुपक्षक अखिल सैनिक परम उत्साहित बनल अछि
विश्वविजयक स्वप्न निज साकार कयने बढ़ि रहल अछि
राष्ट्रध्वज यूनान देशक बिश्वमे फहरैत निश्चय
पाँच लाख प्रवीर प्राणोत्सर्ग हित कयने स्वनिर्णय

अछि सिकन्दर वीर-पूजक वीरकेँ सम्मानि अविरत
घूमि घूमि स्वसैन्य शिविरक कार्यक्रमसँ होइछ अवगत
प्रथम तँ गांधार बाटेँ आक्रमण पुरुपर करत ओ
तखन क्रमक्रमसँ विजित कय नृपतिगण-गढ़पर चढ़त ओ
किन्तु शिविरक बीचमे विषबेलि रोपल जा चुकल अछि
गुरुवरक मंत्रित महाविष-पूर्ण-पन्नग चलि चुकल अछि
हैत तँ परिणाम पाछाँ, किन्तु एखनुक किछु बिचारू
गुरुवरक आदेशसँ सौभाग्य एहि देशक उचारू
कहि जखन निज कथ्य विरमल चन्द्रगुप्त सुसार गर्भित
भेल जनजनकेर हृदय दुख शोक सुख आमर्ष मिश्रित
कय प्रबल संभावना एहि देशकेर उद्धार योगक
लय विविध उपचार औषधि राष्ट्रहित परतन्त्र रोगक
अति कुटिल निज नीति बलपर राखि-गुरु विश्वास मनमे
बाजि उठला दर्पसँ मृगराज जनु गर्जैत वनमे
जय स्वतन्त्रते जय स्वराष्ट्रध्वज जयति बीर-सन्तान
देश धर्म हित छथि जे रखने तरहत्थी पर प्राण
त्रिभुवन बीच त्रिकाल सुपूजित प्राप्त त्रिदश सम्मान
आहुति छथि स्वातन्त्र्य होममे दैत आत्म-बलिदान
धन्य वंश ओ होइछ जकर नर मातृभूमि अनुरक्त
धन्य पिता, माता ओ जनिकर जातक देशक भक्त
देश धर्म-हित जकर हृदय अछि उत्कट प्रेम प्रसक्त
एकाकी रहितहुँ की होइछ कौखन कार्य अशक्त ?
एकाकी रवि छथि करैत जे क्षणमे तिमिरक नाश
आबि सहायक हो क्यो कौखन नहि रखैत छथि आश
राकापति नभमे एकाकी करथि विभा विस्तार
होइछ मन्द तारकगण अपनहिँ रहितहुँ लाख हजार

एक अग्निकण तृणपर परितहिँ होइछ भयानक ज्वाल,
जारि सकैछ ग्राम, जनपद, वन, महानगर तत्काल
एकवेर तहिना संगरमे लैछ जखन तरुआरि
अरिगण रुण्ड-मुण्डसँ भू कें पाटि दैछ ललकारि
एकसर हमर नीति संशोधित अरिकें करत परास्त
क्यो आवय वा जाय, न भय किछु, छी हम सभ पर्याप्त
चढ़य सिकन्दर पौरवगढ़पर देखय आर्यक जोश
गौरव ध्वस्त बनय अभिमानी पुनः सम्हारय होश
प्रकट होय गृहकलह भयानक गांधारक जनमध्य
रहय मगधपतियो व्यभिचारी किछु दिन आर असभ्य
दैत रहव प्रोत्साहन सबके हम सव रहव न बाज
गुप्तरूपसँ प्रान्त प्रान्तमे करव संगठन काज
किछु सहायता दऽ पौरबकें करब प्राप्त विश्वास
आध राजकेर दैत प्रलोभन करव नन्द कुल नाश
पाबि सुअवसर उचित रूपसँ प्रकट करब निज रूप
लय अदम्य उत्साह, आत्मबल गौरब, ज्ञान अनूप
चुकल नियन्त्रित नैतिक सर चलि हैत चतुर्दिक लक्ष्य
देखि रहल चाणक्य अपन परिणाम अदृष्ट अलक्ष्य
निर्धारित अछि नीति-मार्ग ई निश्चित परम अकाट्य
हमरे नैतिक बल संशोधित करत कालक्रम नाट्य
वढ़ा सकत नहि पैर विदेशी फिरत हताश स्वदेश
लय जायत किछु आर्य देशसँ वीरत्वक सन्देश
भेटय सिद्धि रहय साधन किछु ताकय नहि चाणक्य
फलभोगी ताकय नहि तरुवर अछि ई नैतिक वाक्य
अपन अपन कर्तव्य मार्गपर जाउ अहूँ सभ पूर्ण
होयत शीघ्र स्वराष्ट्र स्वदेशक अणुअणु गौरवपूर्ण

षष्ठ सर्ग

(जागरणगीत)

★

जागु–जागु आउ औ स्वदेशके जगाउ औ
पितृभूमिसँ समस्त पापके नशाउ औ
आउ वीर आउ औ
आर्य वीर नंदिनी, बनैछ भूमि बन्दिनी
होइत ध्वस्त आर्य-धर्म–कर्मके बचाउ औ
ताल ठोकि आउ औ

लय नवीन कल्पना, नवीन प्राण चेतना
प्रकर्ष अभ्रघोषसँ सुषुप्तके उठाउ औ
नवीन गीत गाउ औ
दु:खरात्रि शेष ई, विलुप्त अंध रेख ई
जागरण संदेशसँ अतीत गीत गाउ औ
देशके जगाउ औ

परअधीन जीव की, स्वदेश मान पीव की
अंध बनि अछैत आँखि नाम नहि हँसाउ औ
राष्ट्र ध्वज उठाउ औ
वीरसिंह गर्जना करैत खड्ग वन्दना
दीप्तिमान ज्वालसँ अनीतिके जराउ औ
ज्योति नव जगाउ औ

शत्रुगण विशाल जँऽ महा कराल काल जँऽ
बनि कठोर व्यालरूप काटि काटि खाउ औ
शत्रुके चिबाउ औ
सुख-समृद्धि-वर्द्धिनी, समस्त शोक–कर्षिणी
छिनि रहल स्वराष्ट्रकेर स्वतन्त्रता बचाउ औ
आर्य पुत्र आउ औ

वीर पार्थ छी अहीं प्रवीर धीर छीअहीं
युद्ध हेतु पांचजन्य शंख लय बजाउ औ
चापशर चढ़ाउ औ
तुच्छ प्राण मोह की ? अनित्य हेतु छोह की
सत्य कीर्तिमान नित्य देहकेँ बनाउ औ
कीर्ति तँऽ कमाउ औ
सुरम्य शस्य-श्यामला, समीर-नीर-निर्मला
बनैत राहु ग्राससँ स्वभूमिकेँ बचाउ औ
धीर वीर आउ औ
हिमाद्रि अंक वासिनी, अखंड भा प्रकाशिनी
स्वराष्ट्र कीर्तिकौमुदी सुव्योममे बढ़ाउ औ
नव प्रकाश लाउ औ
स्वर्ग लोक बालिका, सम्हारि पुष्प-मालिका
अछि अहींक हेतु ठाढ़ि आश तँऽ पुराउ औ
मरि अमर कहाउ औ
मर्त्यलोक सत्य जँ, ई मृत्यु अछि अवश्य तँऽ
धर्म हेतु मृत्युपाबि मूल्य निज बढ़ाउ औ
आउ बन्धु आउ औ
प्रचण्ड सिंह-वाहिनी, समस्त–शान्ति-दायिनी
जन्म भूमि केँ जगाउ, बान्हसँ छोड़ाउ औ
आउ वीर आउ औ
पूर्वज गण स्वर्गमे, बैसल अपवर्गमे
छथि तकैत प्रेमसँ स्वकौशल प्रकटाउ औ
हुनको हरसाउ औ
शत्रु सैन्य मारि-मारि दुःख जाल फाड़ि-फाड़ि
दासताकेँ टारि-टारि वीरवर कहाऊ औ
डंका पिटबाउ औ
मस्तीमे झूमि-झूमि, खरतर शर चूमि चूमि
अरिगणकेँ घूमि-घूमि यमक घर पठाउ औ
शक्ति निज लगाउ औ

कूदि-कूदि फानि-फानि, अस्त्रशस्त्र तानि-तानि
भीषण रण ठानि-ठानि भुजबल दरसाउ औ
रक्त-नद बहाउ औ

शत्रु-मुण्ड काटि-काटि युद्ध-खेत पाटि-पाटि
मुण्डमाल चण्डिकाक गरमे पहिराउ औ
भैरवी जगाउ औ

अरि-मद-घट फोड़ि-फोड़ि-युद्धखेत कोड़ि-कोड़ि
वीर-प्रसू आर्य-मातृभूमिकेँ पटाउ औ
कर्षक बनि आउ औ

पूर्वजयश गाबि-गाबि, पौरुषबल पावि-पाबि
साहसमे आबि-आबि गर्जना सुनाउ औ
बीर वन्धु आउ औ

यद्यपि छी छोट छोट, अरिगण बड़ मोट-मोट
हेरि-हेरि गोट-गोट चोट पर चढ़ाउ औ
लौह वीर जाउ औ

देशधर्म यन्त्र जानि उद्धारक मन्त्र मानि
वीरताक तन्त्र तानि योग क्षेम पाउ औ
हाथ तँऽ लगाउ औ

शत्रु सैन्य सागर जँऽ, पौरुष बल आगर जँ
मन्थन करु शत्रु-सिन्धु मन्दर बनि जाउ औ
अमृत प्रकटाउ औ

शत्रु-नारि नेत्रनोर, धारा नहि ओर छोर
उभचुभकय धैर्य राखि प्रेमसँ नहाउ औ
मैल केँ बहाउ औ

नौजवान सभ्य लोक धीर वेष साजि साजि
जनसमूह वीच बैसि प्रेम वाक्य बाजि बाजि
जागरण सन्देश देछ गाम गाम आबि आबि
घूमि घूमि धीर वीर राष्ट्र गीत गाबि गाबि

जागि गेल सूतल सँ बिषधर फुफकार मारि
आर्यसिंह जागि गेल भीषण निश्वास छाड़ि

पीबि पीबि राष्ट्र-प्रेम-मदिरा मद-होशमे
जागि गेल नौजवान पौरुषबल रोषमे

जागलाह बूढ़ सूढ़ पूर्ण सावधान भय
वेथरीकेँ फेकि फाकि छाती उत्तान कय

हर्षे हथियार साजि माँजि माँजि जंगजाम
जागि पड़ल वीरकेर अखाड़ामे धूमधाम

जागि रहल बीरता कृपाण-धार-वासिनी
जागि उठल नाचिसङ्ग ज्योति व्योम हासिनी

खड्गी भलैत ओ लठैत लोक जागि जागि
फेरि रहल बरछी स्वदेश प्रेम रंग रागि

बाजल एक रंग दैत नाँगड़ो गुमानसँ
जीति ऐब युद्ध हमहुँ वाहुयुद्ध मानसँ

कहलक क्यो पंगुलोक हमहूँ नहि भोथ रौ
भुजबलसँ देब बना अरिगणकेँ लोथ रौ

बाजि उठल आन्हर अछि हमरोमे जोश रौ
हाथ क्यो भिड़ाय देख जोर हैत होश रौ

कनिञाँ कहैछ शीघ्र प्राणनाथ जाउ औ
राष्ट्रधर्म युद्ध हेतु युद्ध रंगलाउ औ

युद्ध जीति आयब तँ आरती उतारि लेब
गौरव महान धीर वीर नारि पाबि लेब

पूत मायसँ सुनैछ दूध नहि लजाउ औ
लय कराल अस्त्र शस्त्र वीरता देखाउ औ

वैरि ऐल राष्ट्रकेर विपत्ति मेघ टारि कय
देशधर्म-नाव पाप-सिन्धुसँ उबारि कय

जन्मभूमि जननीकेर कोखि यश बढ़ाउ बाउ
धन्य भाग नारि जन्म देहकेँ बनाउ बाउ

बहिन से कहैछ भायसँ न प्रेम भावसँ
वीर छी तँ युद्ध करू जाय वीर तावसँ
शत्रु-सैन्य मारि वीर युद्ध जीति ऐब जँऽ
स्वागत सत्कार मान हमरासँ पैब तँऽ
नहि तँऽ रहू बैसि घरे मुँह झाँपि साड़ीसँ
लहठी सिनूर आदि मङनी करू नारीसँ
कन्या कुमारि बारि राष्ट्र गीत गाबि गाबि
बाट घाट छेकि छेकि नोत दैछ आबि आबि
हाथमे सम्हारि राखि आर्य-वंश-कीर्ति-केतु
अक्षत ओ चाननसँ ठोप दैत युद्ध हेतु
बाप पूतसँ कहैछ माथ हाथ फेरि फेरि
काटि लाउ वीर पुत्र शत्रु माथ हेरि हेरि
आर्य-वंश-गौरवकेँ गर्तसँ उठाउ बाउ
वीरताक पाट शत्रु-शिष्यकेँ पढ़ाउ बाउ
मेटल सभ क्षत्रिय अक्षत्रिय केर भेदभाव
भीति छोड़ि लोक वेद मोछ फेरि दैछ ताव
डूबि गेल गाम गाम वीरताक रंगमे
मातल नर-नारी सभ राष्ट्रप्रेम भंगमे
क्षुद्रक ओ मालवगण जनपदकेर हाल ई
राष्ट्रक हित हेतु भेल संगठन विशाल ई
चन्द्रगुप्त सूत्रधार मालव सहयोगसँ
मुक्ति हेतु तत्पर अछि पारतन्त्र रोगसँ
ठाढ़ दूरसँ तकैछ ब्राह्मण क्यौ नीति धाम
संकेतित जकरालँ नाँचि रहल दण्ड साम

* ★

सप्तम सर्ग

'छीनय उठैछ क्यो स्वत्व आनकेर जैखन
भय जाइछ युद्ध अनिवार्य विश्वमे तैखन

*

जरि रहल विश्वमे युद्धक भीषण ज्वाला
भरि गेल लबालब सैन्य-शिविर केर प्याला
के कहय कखन बढ़ि कोन दिशा दमकत ई
विकराल मृत्युकेर गरल कतय छलकत ई ?

क्षण भरिमे भारत मरत वीर अभिमानी
मानव शोणितसँ धरा पटाओत प्राणी
लड़ि जैत काल प्रेरित स्वबन्धु बान्धवसँ
सभलोक खेलायत हँसि हँसि कय ताण्डवसँ

गौरवसँ नाचत झूमि नग्न दानवता
कानत मसोसि मन कुहरि-कुहरि मानवता
हिंसा बर्बरता पशुता लेत उछाही
ईर्ष्याक आगिसँ पजरत शीघ्र पसाही

लाखो अनाथ विकलांग जीवकेर क्रन्दन
वैधव्यप्राप्त, जाया जननीकेर गंजन
चीत्कार रुदनसँ नभ आँगन भरि जायत
अभिशप्त मनुजताकेर स्वदेश गलि जायत

के पोछत नोर खसैत आँखिसँ जगकेर ?
मेटत के अन्तर्दाह विश्व रग-रगकेर ?
नहि रहत चीन्ह क्यो ककरो करत-पुछारी
अवशेष लोककेर हैत स्वजीवन भारी

जीतक तृष्णा-मद पीवि समाजक प्राणी
वलिदानक छागर बनल करत नादानो ?
किछु व्यक्ति विशेषक पूर्ण करत अभिलाषा
की येह युद्धकेर सर्वमान्य परिभाषा ?

लड़ि मरब युद्धमे स्वर्गलोक तँऽ जायब
स्वर्गक सुहासिनीसँ मर्यादा पायब
आकाश कुसुमकेर पाछाँ व्यर्थ पड़य ओ
नर मृग-तृष्णामे व्यर्थहिँ दौड़ि मरय औ

दय आहुति प्राणक स्वार्थ आनकेर साधय
क्रीड़ार्थ मृत्युसँ क्रूर कृपाण उठाबय
की हेतु लोक सभ होइछ परम निर्मोही
मानब मानवताकेर बनैछ विद्रोही

मानव स्वभावसँ शान्ति-मार्ग अनुगामी
विश्रान्ति, सौख्य, शुभ प्रेम-भावना-कामी
वनि रहल मर्यादित शांति-भंगकेर दोषी
एहि महावितण्डावादकेर स्वर - पोषी

ई युद्ध विश्व अभिशाप, कि थिक वरदाता ?
अतिशय अभागकेर गर्त कि भाग्यविधाता ?
थिक ई अनीति, वा न्यायक मार्ग विकटतम ?
सत्कीर्ति ध्वजा, अथवा कलंक दुस्तरतम ?

कहि रहल कानि इतिहास पूर्व संसारक
बनि जाइछ युद्ध जगजीतल शान्ति निवारक
जेखन ई युद्धक असुर भयानक जागय
सुख-शान्ति समाजक बिवश दूर जा भागय

मचबैछ श्वान गण जहिना छीना छपटी
शासक गण करइछ तहिना झगड़ा-झपटी
एहि तुच्छ राज्यकेर हेतु मनुष्य हजारो
गिड़ि जाय युद्धकेर असुर न करय ढेकारो

बनि मानव किछु गम्भीर मनहिमन सोचय
अन्तरक कलुष दुर्भाव सकल जँऽ मोचय
सभ जोव मात्रमे देखय आत्म-विभा जँऽ
परमात्मा–तत्वकेर पावय प्रेम प्रभा जँ

मारय चाहय तँऽ दम्भ-द्वेषकेँ मारय
जारय चाहय तँऽ शत्रु-भावकेँ जारय
काटय चाहय तँऽ कुटिल-क्रोधकेँ काटय
बाँटय चाहय तँऽ प्रेम बिश्वमे बाँटय

जीतय चाहय तँ हृदय जीति जय पाबय
बान्हय चाहय तँऽ अहंकारकेँ बान्हय
करुणा–धन्वापर तीर अहिंसा राखय
लय प्रेम-अस्त्र कर बिश्व विजय फल-चाखय

जीवय मनुष्य बनि आनक जीवन दाता
नहि क्यो ककरो अधिकारक हो निर्माता
अछि मानवीय गुण सभसँ मंत्री समता
बंधुत्व - भाव, कर्त्तव्य - मार्गमे दृढ़ता

मानव जैखन मानवाकेँ अपनाओत
पर–हित, स्वधर्म पर आगू पैर बढ़ाओत
कय अपन हृदय परिवर्तन प्रेम बढ़ाओत
सम्पूर्ण विश्वकेँ परिर्वातित कय पाओत

आयल सभ खाली हाथ, रिक्तकर जायत
धन–धाम-धरा-परिवार काज नहि आयत
ई पंचतत्व पंचतत्वक अछि अधिकारी
शुभ, अशुभ, पुण्य ओ पातककेर व्यापारी

हँसि हँसि कहैत अछि आजुक नर विज्ञानी
बर्बर असभ्य छल आदिम मानव प्राणी
विकसित छल नहि व्यवहार सुबुद्धि कनेको
उदरम्भर पूरक नरकें ज्ञान विवेको

नख आयुध ऋक्ष समान लोभ तनुधारी
पशु चर्म की गाछक छाल पहिरि भयकारी
बन पादप अथवा गिरि गह्वर अधिबासी
अतिशय अभद्र मांसाहारक प्रत्याशी

रहितहुँ समाजमे मानव भिन्न समाजी
छल सदिखन आलस-पूर्ण, विमूढ़ अकाजी
नहि ज्ञान ज्योतिकेर रश्मि कतहु पसरलछल
पशुता मानवतामे न लेश अन्तर छल

छी हम सभ उन्नतिशील युवक नव मानव
विज्ञान-ज्ञानकेर अन्वेषक अति मानव
लड़ि क्रूर प्रकृतिसँ जीतक जोर लगाबी
उड़ि व्योम-यानपर नभमे होड़ मचाबी

आग्नेय अस्त्र ओ बिस्फोटककेर स्रष्टा
छी अखिल खगोल भूगोल वस्तुकेर द्रष्टा
ग्रह लोक सुगम बनि जैत हमर आँगन घर
किछु बाँचि सकत नहि जगमे दुर्गम दुस्तर

हम चीरि उदधिकें जलपर जोर लगाबी
अंतस्तलसँ मूँगा मुक्ता लय आबी
छी जल-थल-व्योमक एक छत्र हम जेता
एहि सृष्टि तत्वकेर नूतन पथ निर्णेता

अछि किन्तु बढ़ल विज्ञान कि रक्षाकारी ?
भस्मासुरवत् बनि रहल स्वयं संहारी
आग्नेय अस्त्र मानवकेर त्राण करत की ?
अछि रिक्त प्रेमकेर कोष सुपूर्ण भरत की ?

हिंसा प्रतिहिंसा नित विज्ञान बढ़ाबय
सूतल दानवता क्रूर नृशंस जगाबय
विष द्वेषक घोरि रहल जगतक अणुकणमे
विकराल प्रलय आह्वान करय क्षण-क्षणमे

विज्ञान जतेक बढ़त आगू संसारक
भय जैत ततेक निकटतम तट संहारक
विज्ञानक बलसँ मानव स्वेच्छाचारी
विज्ञान बनल अभिशाप विश्वमे भारी

विज्ञानक बलसँ मानव विग्रहवादी
विज्ञान बनौलक जगकें भौतिकवादी
नाचत उठि हँसि-हँसि कखन भयंकर दानव
शंकित मन सदिखन रहत विश्वकेर मानव

एहि सँऽ तँऽ नीक रहय पशुयुग अज्ञानी
रहितहुँ उदरम्भर-पूरक जगकेर प्राणी
नहि रहय जरनि, ईर्ष्या, कटुता प्राणीमे
छल छंद घात-प्रतिघात न युग प्राणीमे

बस उदरदरी परिपूरक भोजन चाही
आश्रय हो गिरि गह्वर अथवा तरु छाँही
सब छल अपनामे मस्त दुःख सुख भोगय
नहि काल्हुक चिन्तामे नर जोड़य-तोड़य

छल मांस खाइत, नर ओखन शोणित पीबय
क्यो मरय देह धुनि, क्यो आनक लय जीबय
क्यो छीनि लैछ ककरो आगूसँ थारी
क्यो कानि रहल अछि, क्यो भरैछ किलकारी

क्यो जीवि रहल मरि-मरि मनुष्य संसारी
क्यो जीवन हेतु मरैछ दुष्ट नरनारी
मरि रहल भूखलँ व्याकुल लोक हजारो
क्यो क्षुधा बढ़ावक हेतु करय उपचारो

क्यो लाख कोटिंकें मारि रुधिरकेर धारा
अछि बहा रहल अतिशय निर्दय हत्यारा
क्यो मात्र उदरहित बनल मूढ़ बलिदानी
बूझय नहि अछि जे किछु करैत नादानी

यद्यपि अछि नीति-विरुद्ध युद्ध भयकारी
सभ मानबीय गुण मर्यादा संहारी
उठि जाइछ किन्तु जे दानब रक्त पिपासा
पलटैछ क्षणहिमे मानब भाग्यक पाशा

मुट्ठी भरि मानव जगमे आगि लगाबय
एहि युद्ध दैत्यकें सहजहिं नीति बजायब
उठबैछ स्वार्थहित तुच्छ अनीति पताका
निर्दय बनि उड़बय नभमे कीर्त्तिवलाका

द्रौपदी होइत छथि भरल सभामे नग्ना
असहाय शोककेर महासिन्धुमे मग्ना
नहि होइछ द्रोण, कृप, कर्ण अनीति विरोधी
आनक की कथा पितामह नहि प्रतिरोधी

खसि पड़इछ बज्र न धसय धरातल-तलमे
नहि सृष्टि अखिल ई लीन होइछ लय जलमे
मचि गेल महाभारत कहु छल के दोषी ?
पांडव अथबा कुरुराज अनर्थक पोषी

हृत होइछ दनुजसँ जखन मनुजता सीता
आर्यत्वक गौरवमयी कीर्ति परिणीता
मचि जैत तुमुलरव अत्यावश्यक जगमे
मनुजत्वक उठय हुंकारि युद्धकेर मगमे

अधिकार रहित बनि बैसव अपयशदायी
अन्याय सहनकर्त्ता अपनहिँ अन्यायी
नैतिक पथ पर चलि लोक प्राण जँऽ त्यागय
बनि अमर श्रेष्ठ पूजितपद आसन पावय

वैयक्तिक स्वार्थ होइछ युद्धकेर कारण
मानव धरैछ चोगा पशुताकेर कारण
सभ दिनसँ नियमित युद्ध भेल अछि जगमे
कृतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग प्रतिपगमे

अछि पञ्चतत्वमे सभ समान अधिकारी
नहि होइछ सृष्टिकेर वस्तु द्वैधताधारी
छीनय उठैछ क्यो स्वत्व आनकेर जेखन
भऽ जाइछ युद्ध अनिवार्य विश्वमे तेखन

अछि उभय पक्षमे सम विभक्त संसारी
जेता जित शोषक ओ शोषित नरनारी
लय खड़गायुद्ध संहारक अभिनव नेता
रणमदसँ भूमि उठैछ शक्ति निर्णेता

जरि जाइछ माथपर जखन युद्धकेर ज्वाला
चमकैछ खड्गमय नभमे विद्युतमाला
रहितहु निर्बल रहितहु अति समर विरोधी
नर विवश युद्धमे कूदय बनि प्रतिरोधी

भऽ रहल ध्वस्त हो राष्ट्र धर्मकेर गौरव
स्वर्गिक सुरम्य भू वनय चलल हो रौरव
अरि सैन्य-घटा घनघोर देश-नभ घेरय
दासत्व ठाढ़ भय हाथ माथपर फेरय

रहि-सकत कहू के शान्त विवेकी प्राणी ?
सूतत घर लागल आगि देखि अज्ञानी
मारत अरिकें नहि तँ स्वकीय तन त्यागत
नहि राखि प्राण दासत्वक शासन मानत

सुनि अरिगणकेर ललकार न भुजबलफरकय
रणभेरी सुनि नहि रक्त शिरासँ धड़कय
सम्मुखमे पड़ने शत्रु न शोणित छलकय
व्यर्थहिं जनमल ओ व्यक्ति न जे किछु ललकय

उद्घोषित रणमे पाप-पुण्यक फल-भागी
उद्घोषक अछि नहि विवश युद्ध-अनुभागी
आक्रामक पापी होइछ क्रमण विरोधी
कहि रहल शास्त्र सभ नैतिक पथ प्रतिरोधी

हो ठाढ़ घेरि घर जखन युद्धकेर दानव
अछि उचित कि घरमे-बैसि विकलमन कानब?
नहि विजय-पराजय पाप-पुण्य नर हेरय
बनि प्रतिकारक अंगार शत्रुसँ खेलय

अनुनय बूझय नहि शोणित-शोषक-प्राणी
कायर बनि करुणापात्र करय नादानी
एहि जीवनसँ अतिश्रेष्ठ मृत्यु अछि जगमे
नरता मरैछ सहि कठिन शूल अन्तरमे

अरि करय जखन हुँकार, शस्त्र निज तानी
युद्धस्थलमे जा युद्ध भयानक ठानी
छूरी तानय क्यो, ली बदला खरशरसँ
ढेपक उत्तर अछि देब उचित पाथरसँ

शठसँ शठता, सज्जनता उचित सुजनसँ
गुणवान बनी जौँ हो परिचय गुणिजनसँ
अरि छूबय आङुर शीश छाँटि दी धड़सँ
निज प्राण राखि नहि विमुख बनी संगरसँ

विष होइछ शान्त बिषसँ, नहि सुधा पिऔने
नहि मानय खलदल अनुनय विनय मनौने
हो जाहि प्रकारक शत्रु तेहन बल जोड़ी
अरि गौरव-गिरिकेँ चूर्ण चूर्ण कय फोड़ी

एहि तरहेँ तर्क वितर्क मध्यमे डूबल
भऽ रहल द्वन्द्व श्रम-जनित आत्मबल ऊबल
एकान्त-निष्ठ चाणक्य अटल प्रणधारी
छथि घूमि रहल आश्रममे स्वेच्छाचारी

किछु थिर कय निज मन्तव्य प्रबल नयबलसँ
भालस्थित श्रम-जल-विन्दु पोछि करतलसँ
एहि राष्ट्र समाजक नूतन जीवन द्रष्टा
आश्वस्त भेल छथि राष्ट्रक गौरव स्रष्टा

★

अष्टम सर्ग

रहथि कहने हमर गुरुवर महाशय जगत गुरु आर्यदेशक श्रेष्ठता जे
परम सौभाग्यसँ भऽ गेल दर्शन महा-संग्राममे वीरत्व रूपक

★

प्रखरतर रश्मिसँ क्षण पूर्व जगकेँ
बनौने जे रहथिसँ संतप्त अतिशय
प्रभाकर ओ अपन सम्पूर्ण आभा
सहित कूदय चलल छथि सिन्धु–जलमे

उदयगिरि-शिखर परसँ चन्द्र आभा
भुवन भरि सौम्यता बाँटय चलल अछि
प्रफुल्लित भेल छथि सज्जन कुमुदगण
हृदयसे हर्ष पारावार धयने

सरोवरमे विरह परितप्त नीरज,
कुमुदिनी हर्षसँ फुल्लित सुखाशी
रुदनमे लीन मधुकर चक्रबाकी
हँसै अछि प्रेम परिपूरित चकोरी

सदा रहि ऐल नहि क्यो एकरूपेँ
व्यवस्थित रूप अछि संसारकेर ई
सदा सुखमे बसल नर दुःख भोगय
दुखी जन होइछ कौखन सुखक भागी

उदित रवि अस्त, अस्तंगत उदयपर
पराभवमे विभव केर बीज रोपल
विजयकेर हारि अन्तिम रूप निश्चय
प्रवर्तित होइछ एहिना चक्र हरदम

शताधिक कोससँ आयल सिकन्दर
हृदयमे विश्व-विजयक स्वप्न धयने
पुरल की आश ? आर्यावर्तसँ ओ
फिरल स्मृति-चिह्न सङ्लय पूर्णरूपेँ

बढ़ल बल-दर्पसँ छल विश्व-जेता
अखिल संसार तृणवत् मानि मनमे
दमित बनि आर्यबीरक खड्गभासँ
झुकौलक माथ मनसँ तेजि गौरव

शिविरकेर मध्यमे सभ सैन्य सेनय
कलाविद् मंत्रविद् मंत्री महाशय
विराजित वीरबर-गण-शस्त्रधारी
सभा अछि किन्तु अतिशय शौकमग्ना

सिकन्दरकेर आसन रिक्त अछि की ?
तकर किछु हेतु नहि ककरो बुझाइछ
कतय छथि वीर पुंगब विश्व-जेता
उठल ई प्रश्न जनजनकेर हृदयमे

बिना करुआरि नैया के सम्हारय ?
चलय की काज विनु नेता समूहक ?
तरणि बिनु लोकमे जीवन भरतके ?
कि बाँचत औषधी बिनु बिधु-मयूखेँ

न ककरो बदनसँ फूटय बकारो
बनल सभ मूकवत् जड़वत् व्यथासँ
बुझाइछ चित्रवत् मानव सभा ई
प्रतिष्ठित भेल पाथर-मूर्ति किंवा

सशंक अछि दृष्टि सभ दिस मर्म–वेधी
सकय की ताकि क्यो ककरो सुथिरसँ
उठल दुख दाह जे अन्तः हृदयमे
शमन हित शून्यमे निश्वास छाड़य

सभामे वीरता केर वेष यद्यपि
विषादक किन्तु अछि छाया सदनमे
गमा निज मूल धन यथा व्याज लोभी
वणिक जन हो यथा मनहूस बैसल

रहल बहि धार करुणा-शोक-मिश्रित
सभासद गण विकल डूबैछ उभचुभ
यथा जल-राशिमे डूबल मनुजकेँ
न भेटय किछु कतहु क्षुद्रो सहारा

पड़ल सुनि दूर आगत शब्द तैखन
विपिनकेर बीचसँ किछु मोददायी
सुधासम कर्ण कुहरक तृप्तिदाता
नृपतिकेर आगमन - सूचक जयध्वनि

रहल छथि आबि विजयी विश्व-जेता
प्रफुल्लित भेल जन समुदाय हर्षे
प्रफुल्लित होइछ जहिना देखि जनता
विधुन्तुद ग्राससँ बाँचल निशाकर

बिगड़ि गेल अनुशासन सभाकेर
व्यवस्था रहि सकल नहि क्षण कतेको
रहल नहि शक्ति जे क्यो आनि राखत
नियंत्रित रूपमे एहिलोक सभकेँ

जयध्वनि भेल निकटहुँसँ निकटतम
शिविरकेर वीचमे नरयान आयल
सहायक वीरगणकेर कान्ह नयने
उतरि कऽ यानसँ बैसल सिकन्दर

करथ किछु प्रश्न यावत् मंत्रविद् गण
कथन प्रारंभ कयलक वीर अपनहिँ
सभासद गण ! हमर आघात देखू
महा - संग्रामसँ उपहार भेटल

अहाँ सभछी महा - रणवीर योद्धा
विकट संग्रामसँ नहि बाज अयलहुँ
जयध्वज ऐल हमरे हाथ रणमे
भेटल अछि किन्तु परिचय वीरताकेर

रहय मनमे वनब हम विश्व–जेता
अखिल भू चापि राखब पैर तरमे
उठायब खड्ग जँऽ हम ध्वंसकारी
रहल नहि ठाढ़ नर संसारमे क्यो

हमर सुनि नाम जग भरि होइछ कंपित
जय - ध्वज व्योममे फहरैछ निश्चय
झुकत नृप-मणि-मुकुट हमरहि चरणमे
बनत इतिहासकेर अध्याय नूतन

रहथि कहने हमर गुरुवर महाशय
जगत गुरु आर्य देशक श्रेष्ठता जँ
परम सौभाग्यसँ भऽ गेल दर्शन
महा - संग्राम वीरत्व रूपक

जकर सद्गुण प्रकाशेँ सूर्य भासित
निशाकर दैछ जगभरि सौम्य आभा
मलय गिरि शृङ्गसँ चलि प्राणदायी
पबन बाँटैछ सुखकर नित्य जीवन

प्रकृति शोभा जकर दासी स्वरूपा
विविध तरु - राजिमे अनुपम सुखश्री
सुधा सम जल जकर संतुष्ट दायी
अमृत सम फल विविध विधि तृप्तिदाता

विभूषित भालपर हिमवान उज्ज्वल
चरण-तल अगम सागर अर्घ्य धयने
विहग - कुल गावि सुन्दर कीर्ति–गाथा
अखिल संसारकेँ सन्देश सुनबय

प्रथम सभसँ जगतमे ज्ञान पौलक,
सिखौलक मनुजता संसारकेँ जे
कहब उत्कर्ष की ? एहि देशकेर हम
ऋणी अछि पूर्ण रूपेँ विश्वकेर जन

चमत्कृत माँटि अणु - कणसँ जतौका
विपुल धन - धान्य - पूर्णा उर्वरा ई
सगर नर - नारि देवोपम यशस्वी
विधाता सृष्टिमे सभसँ अनूपम

दनुजजित राम - कृत जलराशि बंधन
अगम जलसिन्धुमे औखन बनल जे
हजारो वर्षसँ अछि दैत साक्षी
तरंगक घात ओ प्रतिघात सहितहुँ

अचंभित भऽ रहल विज्ञान औखन
सकत जगमे तकर निर्माण कय के ?
युगल सुकुमार बन्धुक जय-पताका
अचल फहरैछ लंकामे समुज्ज्वल

परम - पटु राजनीतिक मार्ग शोधी
न कहु के कृष्णचन्द्रक काज जानय
पढ़ा नव पाठ गीता, कर्म - योगी
वजौलन्हि प्रेमसँ वंशी मुदित मन

युगनकेर मध्यपथ जय घोष गूँजल
जखन छल हिंस्र पशु मानव हृदयमे
दनुजता धारसँ सभकेँ बचौलक
अहिंसा - नाव सत्यक कर्ण कर लय

परम आनन्दसँ निज अस्थि पिंजर
स्वजीवन त्यागि परहित दान दयलनि
स्वदेहक मांस अतिशय क्षुद्रखगकेँ
रहथि कयने समर्पित, कहु करतके ?

करथि जे सत्य – पालन - हेतु अर्पित
स्वसुत – दारा - धरा - सर्वस्व-जीवन
स्वयं बनि दास मरघटमे बसथि ओ
भुवन भरि ख्यात जनिकर कीर्तिगाथा

स्वदेहक चाम परहित दैत छथि जे
करय ओ याचना यदि नम्र बनि कय
मरणकेर मार्ग अति सुस्पष्ट रूपेँ
प्रकट कय दैत छथि निर्भीक अपनहि

सहथि नहि किन्तु अरि ललकार स्वल्पो
न सूची ग्राह्य भू-अधिकार छोड़थि
मचल छल युद्ध एहि अधिकार कारण
जकर साक्षी वनल अछि क्षेत्र कुरुक्षेत्र

यदपि-ईर्ष्या - कलह - अभिभूत भारत
परस्पर वैमनस्यक भाव सभमे
न क्यो ककरो कहल बूझय विचारय
विसरि सभ पूर्व पुरुषक प्राप्त गौरव

जरल मिथ्याभिमानक उग्र - ज्वाला
जखन एहि राष्ट्रमे संदाहकारी
समाजक शत्रु बनि सभकें जरौलक
प्रकृतिसँ प्राप्त मानव-स्नेह-बन्धन

तदपि अवशेष किछु आर्यत्व गौरव
प्रवाहित भऽ रहल अछि बिन्दु मात्रो
अतीतक चिह्न अछि रखने सुरक्षित
महानिर्बल बनल ई आर्य-वंशज

सकत कय पद-दलित क्यो वीरमानी
असंभव अछि एखन संसारमे ई
पराश्रित जीवनक कट्टर विरोधी
कतेको वीर छथि बाँचल जखन धरि

बिसरि हम नहि सकब अछि देह जावत
उपस्थित भेल काल्हुक युद्ध-वार्ता
बनल बंदी रहय पुरुवीर तँ की ?
रहय परिपूर्ण गौरवसँ मनस्वी

हमर छल प्रश्न ओ बन्दी ! अहाँसँ
करी व्यवहार कहु तँ कोन तरहेँ
'जेहन नृपसँ करय व्यवहार क्यो नृप'
सुनौलक उक्ति ई निर्भय हृदयसँ

सुदृढ़तम गौरवान्वित वाक्य वीरक
हृदयमे चोट कयलक मर्मघाती
बुझायल क्षुद्रतम हमरा स्वपौरुष
न रुकलहुँ ताकि अरि–मुख लाजसँ हम

विजित रहितहुँ एहन मुस्कान मुँहपर
कि व्यापल देखि अति आतङ्क मनमे
झुकल ई माथ अपनहिँ शत्रु–सम्मुख
पराजय मानि मन मन, हाय ! तत्क्षण

जकर वीरत्व अछि निर्मित तेहन दृढ़
जेहन इस्पात हो आश्चर्यकारी
अचल सम रहि अचल सिद्धान्त पथपर
झुकत नहि टूटि जायत खंडशः बरु

सुनै छी हम कि क्यौ चाणक्य नामक
महा – नीतिज्ञ ब्राह्मण क्रूर–कर्मी
वनौने संगठन दृढ़ युद्ध हेतुक
कतहु बैसल प्रतीक्षामे हमर अछि

सभाकेर बीचमे हमरा सभक जे
युबक कय गेल एकसर मान–मर्दन
तेहन निर्भय कि रहितहुँ वीर लाखो
न क्यो बढ़ि धैर्यसँ बन्दी बनौलक

युवक ओ शिष्य ओहि नीतिज्ञ द्विजकेर
रहय आयल हमर किछु भेद लेबय
न जानी कोन तरहक भेद पौलक
शिविरसँ गेल असफल वा सफल बनि

जकर सीमान्त नृपसँ युद्ध थलमे
सकल योद्धा निरुत्साहित बनल छी
अमित बल-वीर्यसँ परिपूर्ण मागध
लड़ब ओहि वीरसँ हम कोन तरहेँ

रहल रण हेतु नहि उत्साह स्वल्पो
उचित अछि फिरि चली निजदेश हमसभ
सगर सैनिक हमर आदेश मानू
कि झट दय कूचकेर डंका बजाबू

रात्रि शेष भेल जानि जागरूक लोक-वेद
दिव्य-लोक-वासिनी सहासिनी उषापरी
लाल-लाल घोघट पट ओटसँ तकैत व्यग्र
बल्लभकेँ अयबामे आब अछि बिलंब की

रात्रि-शेष भेल जानि पीत भेल तारिका
राखि दुःख अंतरमे बल्लभ वियोग जन्य
लोचनसँ मुक्त अश्रु अर्घ्यसँ करैत अछि
प्राणोसँ पैघ प्रेम – देवकेर उपासना

रात्रि-शेष भेल जानि खग-समूह मोद-पूर्ण
अछि करैत कलरवसँ भव्य श्रव्य व्यक्त स्वर
अंतरकेर सौम्यभाव कर्ण मधुर लोकमे
नूतन उत्साह-युक्त जागरण-सनेस दैछ

रात्रि-शेष भेल जानि द्विज समूह ब्रह्मनिष्ठ
ऐल देखि ब्रह्मकाल स्नान–ध्यान-वन्दनमे
अर्चन ओ पूजनमे नित्य नियम कार्यलीन
जगतीसँ मुक्ति हेतु भेल छथि सुभावसँ

रात्रि शेष भेल जानि
तुच्छबूझि गौरव निज तन-मनसँ श्रान्त भेल
सेना चतुरंगिनिकेँ साजि फिरल देश दिस
झेलमकेर जलपथसँ बीरवर सिकन्दरो

योजन भरि लंबमान
शत-शहस्र नौकामे विस्मृत-बल, श्री-विहीन
अस्त्र-शस्त्र छोड़ि-छाड़ि दक्ष लक्ष युद्ध-वीर
वैसल छथि गुम्म सुम्म पाथर केर मूर्ति सम

ज्ञात होइछ शान्त सिन्धु
कृष्ण-पक्ष, पूर्णा-तिथि, रात्रि चन्द्रसँ विहीन
ऐल देखि क्लान्त मने खिन्न भावसँ समस्त
चंचलता–हीन बीचिसँ सुनैछ बन्दना

देखि देखि सैनिकगण
आननपर स्वेदपूर्ण खिन्नताक कालिमा
ग्रीकराज पीड़ासँ कहि उठैछ आहि आहि
अन्तरकेर भाव किन्तु बूझि के सकैछ हाय !

वेदना की युद्ध-जन्य
शत्रुपक्षसँ स्वकीय प्राप्त शस्त्र घातकेँ ?
अस्त्र-शस्त्रसँ खेलाइछ विश्वमे महान वीर
दलि स्वकीय दर्प निःस्व किन्तु की बचैछ ओ ?

देखि शौर्य-वीर्य-पूर्ण

शक्तियुक्त आर्यरक्त छल जतेक जोश-होश
पिघलि पानि भेल हाय जीत ऐल हाथ
किन्तु अन्तरसँ हारि दाव

जीतजन्य मोदसिन्धु

मे जरैछ उग्र एक चिन्ताकेर वाड़वाग्नि
मानस उद्‌गारपूर्ण सुख-तरङ्ग-वाहिनीक
नोर शत्रु-रक्तयुक्त सोखि जे समस्त लैछ

चिन्तनमे एहि प्रकार

लीन-मुग्ध ग्रीकराज भेल श्रान्त-क्लान्त-भ्रान्त
क्षणक्षण निश्वास लैछ बेदनासँ तप्त भेल
नाव छोड़ि धार बीच हीन पतवारिसँ

तैखन नभ प्राचीकेर

भेल स्वर्ण चक्रयुक्त पूर्वोदित ज्योति-पुञ्ज-
सँ समस्त भासमान चेतन जड़—जीव-मात्र
स्वप्निल जग जागि जागि कार्यक्रम युक्त भेल

झेलम तटमे सुदूर

पद्‌मासन ध्यानमग्न अन्य सूर्य सम स्वकीय
आभासँ दीप्तिमान बैसल अछि के मनुष्य ?
अपलक टक देखि रहल ग्रीकराज मंत्रमुग्ध

स्मश्रु कूर्च केशयुक्त

आनन अति तेजयुक्त भालपर त्रिपुण्ड रेख
भस्मक अति श्वेत-श्वेत, अन्तरकेर ज्योतियुक्त
ज्ञात होइछ अर्थ-धर्म-कामनाक देनिहार

देखि देखि भूपति

मुखमण्डलकेर भावव्यूह मानवकेर शत्रु पक्ष
संशय उच्छेदनार्थ शब्दवाण साधि लक्ष्य
हेतु हाथ जोड़ि शीघ्र बाजि उठल सेल्यूकस

वैह देखू विप्र-श्रेष्ठ

विष्णुशर्मनामधेय राजनीति, धर्मनीति,
अर्थशास्त्रमे मतान् शुक्र सम अन्य शास्त्रमे
अगाध ज्ञानवान बैसल छथि ध्याननिष्ठ

वैह विप्र बुद्धिधाम ?

आर्यध्वज रश्मिग्राह अछि जनिक अखण्ड नीति
सँ बनल परास्त छी ? युद्धखेत जितिओ कऽ
सत्ये ई पूज्य-वन्द्य-दर्शनीय व्यक्ति छथि

एहि तरहें ग्रीकराज

आश्चर्यित भेल बाजि नावक तरुआरि मोड़ि
शीघ्र फिरल घाटक दिस पाँछासँ लोकवेद
उत्सुक बनि बनि स्वकीय मनमे पुनि संग भेल

लागि गेल घाटपर

नावकेरअपारठट्ठुसेनापतिसंगग्रीकराजनावछोड़िकय
नम्र भेल, जाय झुकल विप्र-पाद-पद्ममे
जहिना झुकैछ भक्त श्रद्धासँ मन्दिरमे

जनरव सुनि आँखि फोलि

शान्तिः ओं शान्तिः कहि, नव घनरव मंद्रस्वर बजला आ विप्र
ग्रीकराज विश्वजेताकेर झुकि रहल समस्त माथ
आर्यभूमि सीमहिंपर आश्चर्यक वस्तु ई

बाजि उठल गीकराज

चिन्तातुर व्यग्र होइत अश्रुसिक्त आननपर
अन्तरकेर वेदना-प्रयुक्त पूर्ण भाव दैत
हाय देव ! लज्जित छी हम स्वकीय काजसँ

ज्ञात छल न युद्धोत्तर

बिजयक उन्माद वृक्ष सिंचित अछि होइत दुःख
वेदनाक नीरसँ, तृष्णा प्रिय खाद देल
ककरो नहि शान्ति सुख दऽ सकैछ विश्वमे

ज्ञात छल न तुच्छ दर्भ

अछि एतेक शक्तिमान, क्षणभरिमे मोड़ि जे सकैछ
तीक्ष्ण खड्गधार ज्वालाकेर तृण गोटेक
पूर्ण शान्त कय सकैछ आश्चर्यक वस्तु ई

ज्ञात छल न आर्यरक्त–

मे एतेक उष्णता, ज्ञात छल न नी-निष्ठव्यक्तिकेर
महान् नीति कोटि-कोटि, खड्गधारसँ अखंड होइछ
जे कि, विश्वमे अजेय श्रेय

दे आब ज्ञात भेल

व्यर्थ रक्तपात-जन्य पातक समस्त भेल
दोष-हीन लक्ष लक्ष जीवक उत्तापना
हा ! स्वकीय कृत्यसँ छी अन्तरसँ तप्त हम

देव ! आब ज्ञात भेल

पूर्वक सभ गौरव छल कल्पना असत्यमात्र
निद्रित केर स्वप्नसभ नित्यता-विहीन कल्प
सन्निपात पीड़ितकेर किंवा छल जल्पना

ग्रीकराज आननपर

अन्तरसँ प्रकट होइत पछतावक पूर्ण रेख
देखि बजलाह विप्र किंचित् मुस्कान युक्त
ग्रीकराज विश्वमे महान मात्र ईश छथि

सोऽहं छथि वैह एक

नहि तँ गतमान मोह विश्वसँ निरीह भेल
स्वानुभूत - ब्रह्म - ज्ञान - लीन छथि सदैव जे
समदर्शी योगीजन सोऽहंकेर ज्ञानवाद

जाउ ग्रीकराज फीरि

जँऽ स्वकीय चित्तमध्य सत्ये पछताव भेल
ताकू बनि शान्तचित्त सोऽहंकेर तत्वज्ञान
प्राणिमात्रमे विकीर्ण ईशक विस्तार रूप

नहि तँऽ निज सैन्य साजि

ऐब पुनः युद्ध हेतु कालान्तरमे समस्त
तृप्त भेल हो न जँऽ कि युद्धजन्य लालसा
प्रस्तुत सभकाल रहत आर्यक सन्तान ई

★ ★

नवम सर्ग

'ई कटार, शकटारक जा धरि नन्द-करेजक
शोणित पीबि न तृप्त हैत परिपूर्ण रूपसँ
किछु हो तावत पाबि सकत विश्राम न कौखन
हा ! औखन ई जागि रहल युग-युगसँ प्यासल

★

प्रतिशोधक अंगार जरि रहल हृदय देशमे
चिर-संचित एहि नन्द-वंशपर महाभयानक
तुष्टभऽसकतकीअरिकुल-तृणपरबिनु पड़ने?
मिझा सकत नहि शत्रुवंशशोणितविनुचखन

हाय ! अविकसित कुसुम-कांत-कमनीय-कलेवर
सात सुतक बलिदान सकत की विसरि हृदयसँ ?
अन्धकूपमे अन्न-पानि बिनु तलफि-तलफि कऽ
पाबि अकालक मृत्यु स्वर्गमे पहुँचलाह जे

एहि दुख पुत्र-वधोद्भव हत्या पाप परक कय
पुत्र-अस्थिसँ खूनि नरक सम अन्ध-कूप-गृह
बहरायल जे राख हृदयमे भीषण ज्वाला
कठिन हृदय शकटार मात्र अछि बाँचल औखन

नहि नहि ओ शकटार न जीवित धरा-धाममे
अछि जीवित क्यो नन्द-कुलक संहारक पन्नग
अछि जीवित तूफान ध्वंसकेर राग प्रचारक
अछि जीवित ई महाप्रलय सूत्रक संचालक

पुत्र, पुत्र ओ ! शान्त आइ, हम मुक्त भेल छी
नन्द-रक्तसँ करब तिलांजलि आब शीघ्र हम
मुक्त हैत ई देश शीघ्र अत्याचारीसँ
पूर्ण मुक्त भऽ सकब अहूँ सभ पैतृक ऋणसँ

जन्मजात छी विप्र, किन्तु एहि कुटिल काजसँ
बरुजगमरि चाण्डाल कहय, किछु क्लेश न हमरा
निरपराध रहितहुँ जे गति अछि दुःशासनसँ
की प्रति-हिंसा-जनित पाप किछु व्यापत हमरा

ककरासँ हम प्रश्न करी, क्यौ देत कि उत्तर
निर्जन वनमे,, सघन तिमिरमे क्यौ भेटत की ?
चीन्हत की क्यौ लोक जटिल एहि मलिन वेषमे
हाय ! कहत की कुटिल क्रूर नन्दक संवादो

सात बरख धरि अंधकूपमे रहइत सदिखन
दिवा–निशा, तिथि पक्ष-भेदसँ बनल अज्ञ हम
अंधकार अछि ओखन हमरा नेत्रक आगाँ
हाय ! विधाता नेत्र–ज्योति की मंद भेल अछि ?

की रातुक साम्राज्य एखन अछि व्याप्त भुवनमे?
नभमे तारक बृन्द क्षीण-प्रभ छथि तेँ ऊगल
आश्वासित भऽ गेलहुँ जानि दृढ़ रजनी वेला
चली कतहुछिपि नगर बीच निज काज करी हम

किन्तु कतऽ जा रही, हमर अछि के विश्वासी
राज शक्ति भयसँ क्यौ हैत की आश्रय-दाता
सहपाठी क्यौ चणक बिप्र छल अदि दृढ़ कर्मा
राज-द्रोह अपराधेँ बाँचल अछि नहि किंवा ?

पुत्र, पुत्र ओ ! शान्त आइ, हम मुक्त भेल छी
नन्द-रक्तसँ करब तिलांजलि आब शीघ्र हम
मुक्त हैत ई देश शीघ्र अत्याचारीसँ
पूर्ण मुक्त भऽ सकब अहूँ सभ पैतृक ऋणसँ

जन्मजात छी विप्र, किन्तु एहि कुटिल काजसँ
वरुजगमरि चाण्डाल कहय. किछु क्लेश न हमरा
निरपराध रहितहुँ जे गति अछि दुःशासनसँ
की प्रति-हिंसा-जनित पाप किछु व्यापत हमरा

ककरासँ हम प्रश्न करी, क्यौ देत कि उत्तर
निर्जन वनमे,, सघन तिमिरमे क्यौ भेटत की ?
चीन्हत की क्यौ लोक जटिल एहि मलिन वेषमे
हाय ! कहत की कुटिल क्रूर नन्दक संवादो

सात बरख धरि अंधकूपमे रहइत सदिखन
दिवा–निशा, तिथि पक्ष-भेदसँ बनल अज्ञ हम
अंधकार अछि ओखन हमरा नेत्रक आगाँ
हाय ! विधाता नेत्र–ज्योति की मंद भेल अछि ?

की रातुक साम्राज्य एखन अछि व्याप्त भुवनमे?
नभमे तारक वृन्द क्षीण-प्रभ छथि तेँ ऊगल
आश्वासित भऽ गेलहुँ जानि दृढ़ रजनी वेला
चली कतहुछिपि नगर बीच निज काज करी हम

किन्तु कतऽ जा रही, हमर अछि के विश्वासी
राज शक्ति भयसँ क्यौ हैत की आश्रय-दाता
सहपाठी क्यौ चणक बिप्र छल अदि दृढ़ कर्मा
राज-द्रोह अपराधेँ बाँचल अछि नहि किंवा ?

ई कटार शकटारक जा धरि नन्द-करेजक
शोणित पीबि न तृप्त हैत परिपूर्ण रूपसँ
किछु हो तावत पाबि सकत विश्राम न कौखन
हा ! औखन ई जागि रहल युग-युगसँ प्यासल

चन्द्र-सूर्य बरु चलथु अपन विपरीत मार्ग सँ
बरु हिमगिरि धँसि जाय बहथु गंगा पश्चिममुँह
दृढ़प्रतिज्ञ शकटारक दृढ़-प्रण टरत किन्तु नहि
जावत तिल भरि प्राण रहत एहि तुच्छ देहमे

नन्दक प्रति विद्वेष अग्निसँ धू-धू जरइत
एहि प्रकारेँ बाजि पूर्णतः उत्तेजित बनि
देह तानि कय चलइत अतिशय निर्बलता सँ
मूर्च्छित बनि खसलाह, रहल नहि देहक सुधिबुधि

गुप्त रूपसँ सूक्ष्म वस्तु परिशोधनमे पटु
भूगर्भ-स्थित ध्वनि सुनि किछु संदेह जकाँ बुझि
रहि घूमैत कतिपय दिनस जन-हीन प्रान्तमे
जटिल, मलिन, अज्ञात व्यक्ति केर देखि अवस्था

वृक्ष ओटसँ सुनि अज्ञातक कथन पूर्णतः
राजनीति-निष्णात क्रांति-पथ-रथ संचालक
स्वर्ण-प्रभातक जन-जनमे सन्देश प्रचारक
मूर्च्छित लग अयलाह दौड़ि चाणक्य शीघ्र अति

प्रथम अङौछासँ बसात किछु कय संचारण
कमंडलुक निर्मल जलसँ मस्तक - प्रक्षालन
अन्य विविध उपचारक माध्यमसँ अति सत्वर
निद्रितकेर जाग्रत सममूर्छा दूर भगौलन्हि

गत-मूर्छा अति विकलपरम विक्षिप्त जकाँ बनि
बजला झट शकटारहाय ! हम एखन कतय छी ?
भेल मगध की मुक्त दुष्ट स्वेच्छाचारीसँ
अछि जीवित की दुष्ट क्रूर ओ जारज औखन

वंश आव की बाँचत एहि शकटारक करसँ
साक्षी रहु शशि सूर्य, गगन-पथ-गत ग्रह मंडल
अछि तत्पर शकटार नन्दवध हेतु एखन धरि
बाँचत नहि कुल भरिमे अञ्जलि भरि जलदाता।

एहि तरहेँ विक्षिप्त जकाँ बहुविधि प्रलाप कय
ध्यानसहित सुनि किछु गुनिधुनि कय अपनेमनमे
नम्र स्वरेँ चाणक्य कहलथिन्ह 'महामंत्रिवर'
रहू शान्त, किछु दिन धरि धैर्यक अबलम्बनकय'

धैर्य ? हाय के धरत धैर्य हमरा सँ वेशी ?
सात पुत्र परिवार सहित दय मृत्यु–कोरमे
राखि कठिन पाथर करेज पर सात वर्ष धरि
छी जीवित औखन हम धैर्यक धारण कयने

सातो सुत निज भोज्य-अंश भेटल राजासँ
नहि खा हमरे देथि स्वयं सभ अनशन कयने
हा ! हमरा देखितहि गत जीवन बनल रहथि ओ
किन्तु न छूटल धैर्य क्रूर शकटारक मन सँ

टूटि चुकल अछि बान्ह किन्तु के आब सम्हारत
प्रखर धारमे पड़ि के जीवन, प्राण खँघारत
की कालक अधिकार विश्वमे छीन सकत क्यो ?
ज्वालामुखी-समुद्यत-ज्वाला रोकि सकत क्यो ?

युवक ओ शिष्य ओहि नीतिज्ञ द्विजकेर
रहय आयल हमर किछु भेद लेबय
न जानी कोन तरहक भेद पौलक
शिविरसँ गेल असफल वा सफल बनि

जकर सीमान्त नृपसँ युद्ध थलमे
सकल योद्धा निरुत्साहित बनल छी
अमित बल-वीर्यसँ परिपूर्ण मागध
लड़ब ओहि वीरसँ हम कोन तरहेँ

रहल रण हेतु नहि उत्साह स्वल्पो
उचित अछि फिरि चली निजदेश हमसभ
सगर सैनिक हमर आदेश मानू
कि झट दय कूचकेर डंका बजाबू

रात्रि शेष भेल जानि जागरूक लोक-वेद
दिव्य-लोक-वासिनी सहासिनी उषापरी
लाल-लाल घोघट पट ओटसँ तकैत व्यग्र
बल्लभकेँ अयबामे आब अछि विलंब की

रात्रि-शेष भेल जानि पीत भेल तारिका
राखि दुःख अंतरमे बल्लभ वियोग जन्य
लोचनसँ मुक्त अश्रु अर्घ्यसँ करैत अछि
प्राणोसँ पैघ प्रेम - देवकेर उपासना

रात्रि-शेष भेल जानि खग-समूह मोद-पूर्ण
अछि करैत कलरवसँ भव्य श्रव्य व्यक्त स्वर
अंतरकेर सौम्यभाव कर्ण मधुर लोकमे
नूतन उत्साह-युक्त जागरण-सनेस दैछ

जाग्रत-जीवन जन-समाज अपनाओत सत्वर
खण्ड राष्ट्रकेर अंग-अंगमे जागत जीबन
एक-राष्ट्रकेर महामन्त्र फूकत जे नूतन
राष्ट्र-पताका उच्च-व्योममे हैत सुशोभित
शंख चुकल अछि बाजि, नीति नव बलसँ प्रेरित
विजय जयो रथपर चढ़ि आगाँ ठाढ़ भेल अछि
आर्यावर्त्तक परम-पूज्य ई भूमि विश्वमे
एक-सूत्र-शासनसँ गुम्फित हैत शीघ्रतः
एहि तरहेँ द्वयविप्र आर्यकुल-गौरव-ज्ञानी
परिचित बनि देशक सुभागसँ नीति निधाता
हर्ष-शोक-विस्मय - विषाद प्रियमिलन-विरहसँ
रोमांचित छथि भेटि परस्पर आनन्दित मन
रजनी बीतल तम तोम हरल, पश्चिम समुद्रमे जाय खसल
प्राची नभ मण्डल भेल लाल, पसरल जगतीमे स्वर्ण-जाल
खगकुल कलरवसँ भुवन व्याप्त करइछ स्वागत रविजानिआप्त
सर गे सरोज संताप-हीन, आनन्द लोकमे भेल लीन।
मधुकर-गण मधुमदसँ प्रमत्त, सजनी-घर नहि रजनी समस्त।
प्रेमक बन्धन किछु जानि क्षीण, उड़ि चलल व्योममे बन्धहीन।
हर्षातिरेकसँ वृक्षराजि, निज पत्र-पुष्प-फल साजि-साजि।
आन्तरिक प्रेम भरि-भरि प्रगाढ़ स्वागतहितअछि क्रमवद्धठाढ़।
जग पसरल आलस भागि गेल, जन-कार्य भावना जागि गेल।
भूतल पर आयल नव विहान लय नव उत्सुकता नवल ज्ञान।
पाटलिपुत्रक जनगण विभोर, अछि औखन सूतल निन्न भोर
छल दूर एखन भिनसर सबहक, मूनल अछि घर परिसर सबहक
मदिराक खुमारी नहि टूटल, जागरण जन्य भ्रक नहि छूटल ?
नहि भेल बेर छल जागत के ? व्यर्थहि खखुचमे जागत के ?

घर-घर-गणिका-गत-अंक लोक, अछि सूतल बनिक्रय विगत शोक।
नहि ककरो चिन्ता लेशमात्र, बिसरल अछि सुधि-बुधि सभक गात्र।
क्यो उठल निन्न मदमे मातल, नहि छल उघाड़ने मुँह झाँपल।
क्यो स्वप्न लोकमे छल डूबल, एहि जाग्रत जीवनसँ ऊबल।
ई तँऽ साधारण जनाचार. सुनु शासकवर्गक समाचार।
सभ अछि निद्रामे लीन भेल जगसँ सम्बन्ध–विहीन भेल।
सभ सैनिक सेनय, दुर्गपाल, नागरिक सभ्यजन, नगरपाल।
नन्दक चर, अन्तः पुरबासी, राजक प्रधानजन-विश्वासी।
अस्त्रागारक जे अधिकारी, हय गज – पशु - मण्डल – सचारी।
प्रहरी, परिचारक, धनाध्यक्ष, सभहिक नहि फूजल स्वप्न कक्ष।
सभ लोक वेद रातुक जागल, मगधेशक सुखमे छल लागल।
मद घूणित नेत्र न फूजि रहल ककरो मानस नहि कूजि रहल।
अछि पड़ल खसल जे जाहि ठाम, बिसरल पौरुष-बल टीम-टाम।
सभ क्यौ सूतल निद्राह भेल, आलस्य सिन्धु अवगाह भेल।
ता-धिन तबला पर ताल दैत, संगीतक स्वर–मात्रा गनैत।
धयने निज करमे विविध साज, सूतल अछि सभ गायक समाज।
नर्तकी नृत्य-रस-लीन भेलि, शृङ्गारयुक्त छविसँ नवेलि।
नृत्यक निमित्त पहिरल पटोर-सँ भेल निन्न मे ओर-बोर।
तँखन जन-पथ-बीथी–चत्वर, जन कोलाहलसँ भेल मुखर।
अज्ञात वीरगण होइत प्रात, आयल सभ दिससँ अकस्मात
भरि गेल नगर भरि भूमि भाग, भरि गेल नन्द–कुल–घट अभाग।
घटि गेल प्रजा-जन-पाप-ताप, घटि गेल घरे घरसँ विलाप।
धन-अस्त्र शस्त्र–हय-गज-पदाति, रथ-चर, रथ-सैनिक विविध भाँति।
सिंहासन, शासन, सभागार, कयलक समग्र पर स्वाधिकार।
नन्दक जे छल निज स्वप्न-सदन, बंदी–गृह अछि बनि गेल एखन।
घेड़लक सभ दिससँ सैनिक जन, राजक सत्ता-उद्धारक-गण।

सभ पूर्व नियोजित नीति-पूर्ण, अति गुप्त रूपसँ भेल तूर्ण।
नहि जानि सकत जन-साधारण, कौटिल्य नीति पथ निर्धारण।
जागल प्रहरी सैनिक समस्त शासकगण जागल भेल ब्यस्त।
जागल मंत्री भय-पस्त भेल, नन्दो जागल मद-अस्त भेल।
भय गेल किन्तु सभ परिवर्तन, जीबन नभ-मण्डल आवर्तन।
सभ विगड़ल नन्दक बनल साइत, दुख-सुखकेर माध्यम एकराति
जे कालिह रहय सिंहासन पर, तकरेसँ शोभित बन्दी-घर।
छल जकरा करमे बागडोर अछि बनल एखन नर वैह चोर।
जकरा इंगित पर लक्ष-बीर, अर्पित करइत छल निज शरीर।
ओ जन समुद्र मे निराधार, बनि डूबि रहल अछि माँझ धार।
जकरा होइतहिँ किछु भृकुटि भंग, थर-थर कँपैत छल अंग-अंग।
मालव, गांधारक कोन हाल, छल झुका लैत निज उच्च भाल।
ओ भू-मुख अपनहिँ भेल हाय, सभ दिससँ बनि कय निस्सहाय।
काल्हुक राजा बनि गेल रंक, लदने जीवन पर पाप-पंक।
दसमे बसैछ प्रभु शक्तिमान, नर होय अज्ञ बा ज्ञान वान।
दसद्रोही नहि सुख पावि सकय, आपत्ति-गालसँ बांचि सकय।
क्षण भरिमे तूर्ण निनाद भेल, परिषद सूचक ध्वनि बाद भेल
प्रतिनिधि मण्डलकेँ ज्ञान भेल, जन साधारणकेँ मान भेल
लागल जूटय प्रतिनिधि समाज, प्रारम्भ भेल भय राज-काज
अछि परिवर्तन नृप-कक्ष बीच, ओ शासक लज्जित बनल नीच
अछि रिक्त मगधकेर सिंहासन, राज्यक शासन प्रिय-उच्चासन
उठि कय बजला चाणक्य जखन, सभलोक व्यवस्थित भेल तखन
सुनु मागधजन प्रतिनिधि समाज ! अछि एखन मगधमे जँ दुराज
बढ़ि गेल राज्यमे अनाचार, आनन्दित लम्पट-धर्त-जार
जर्जरतन, जीवन श्री-विहीन, सभ तरहेँ बनि अति हीन क्षीण
निज जानि अरक्षित विभव प्राण, निज प्रजाबर्ग अति शोकमान

क्यो रहल न ककरो विश्वासी सभ मानि समय सत्यनाशी
अनुभव कय अतिशय दुसह क्लेश अछि पड़ा रहल सभ छाड़ि देश
अवसरपर जागल किन्तु लोक नहि ऐल राष्ट्रपर महा-शोक
फिरि गेल सिकन्दर युद्ध-वीर एहि आर्य-भूमिसँ क्षत-शरीर

नहि जन्म-भूमि परतंत्र बनल घरमे पैसल अरि दूर हँटल
टरि गेल बाह्य आपत्ति व्यूह अंतर-गत अछि शासन दुरूह
की हेतु, एकर कहु के दोषी ? के जन संकटकेर परितोषी ?
सभ क्यो मिलि उचित विचारकरू राष्ट्रक संकट निस्तार करू

छी जुटल राज-प्रतिनिधि समाज करु उचित-विहित जे होय काज
बनि मगध एखन अतिनिस्सहाय अछि माङ्गि रहल निज उचित न्याय
क्यो बाजि उठल तैखन सक्रोध प्रतिनिधि मंडलसँ निर्विरोध
सभ अन्यायक थिक मल नन्द पापी — पाखण्डी — परम — मन्द

चाही पापीकेँ उचित दंड, रहितहुँ शासक जे अछि अबंड
अन्यायी नृप–मद करब चूर्ण अछि, हमर सभक अधिकार पूर्ण
हमरहि शोणितपर थम्हल राज, ई उच्च अटारी, सगर साज
सिंहासन, शासन, विपुल, कोष हमरे कमाइसँ बनल ठोस

हमहीं शासक निर्माता छी, सत्ता — पद — मान – प्रदाता छी
हमही शासन निर्माण करी शासन–हित, अर्पित प्राण करी
शासक जँऽ अत्याचार करय, नहि राज प्रजा हितकार रहय
तँऽ आवश्यक जन - क्रान्ति हैब, परिवर्तन सुखकर शान्ति हैब

उठि ठाढ़ भेल क्यो अनचिन्हार, तैखन समाजसँ साधिकार
बाजल - हम मन्त्री भूतपूर्व, न्यायक अधिकारी छी अपूर्व
सभक्योमिलिजँऽ अधिकार देथि, जनप्रतिनिधि-मण्डल भार देथि
तँऽ महानन्दकेर करी न्याय देशोद्धारक समुचित उपाय

यद्यपि अति जटिल–मलिन–वेषी शकटार मंत्रिवर छथि देशी
बाजवसँ परिचित लोक–वेद सभ भेल रहल, नहि व्यथा खेद
सभ दिनसँ आयल साधुवाद शकटार मंत्रिवर निर्विवाद
व्यापक अधिकारी छथि विशेष जे करथि न ककरो मीनमेष

प्रतिनिधि गणसँ अधिकार पाबि शकटार नंदकेर निकट आबि
कय स्मरण स्वजीवन दुसह क्लेश जेहि हेतु बनल तन-अस्थि-शेष
कहि उठला---रे पापी महान ! औखन छें तनसँ प्राणवान
ले निज पापक फल भोग-भोग जीवन हो तेहने जेहन रोग

ई कहि अंगातरसँ कटार झटपट बहार कय तीक्ष्ण धार
नन्दक करेजकेर साधि लक्ष्य जन-प्रतिनिधि-मंडलकेर समक्ष
फेकलनि संचित कय पूर्ण क्रोध मनमे रखने प्रतिशोध बोध
नहि छल ककरो विश्वास एहन भय गेल अचंभित काज तेहन

जावत सभ हाहाकार करय किछु दया-भाव संचार करय
तावत शोणित प्यासल कटार धसि गेल वक्षमे आरपार

भूसँ उखड़ल भूरुह समान ससरल नभसँ उल्का प्रमाण
खसि पड़ल नन्द गत प्राण भेल, शोणित-लथ-पथ मुरझान भेल

* *

दशम सर्ग

राजनीति पथ खड्गक धारा विकट भयावह भारी
चूकि जाय तँ जाय रसातल, नहि तँ अति सुखकारी'

*

व्योम निर्गत – मेघ शारद हासिनी
दिव्य - वस्त्रालंकृता श्यामा मही
देखि नभमे पूर्णचन्द्रक पूर्णभा
अछि बनल तनसँ, सुमनसँ मोदिता

जन-कुमुद सुख - शान्तिमय उल्लाससँ
हँसि प्रफुल्लित मन फुलायल मोदमे
पूर्णचन्द्रक नीतिपूर्ण चन्द्रिका
लय अभय वरदान व्यापल भूमिपर

घन - रहित नभमे उदित पूर्णशकेर
देखि विमल प्रशंसनीय प्रसन्नता
जन - समाजक सिन्धु - मोद - तरंगमे
भय रहल अतिशय तरङ्गित सौख्यसँ

भेल अपगत मैल, निर्मल बारि लय
वहि रहल सरिता अचञ्चल रूपमे
लोक उन्मुख सुखद विजयानन्दसँ
पाबि परमानन्द धार्मिक काजमे

पहिरि नव-परिधान नव-नव रंगकेर
राखि आँचरमे शरदकेर धान्य ओ
अन्नपूर्णा रूप ई धीराधरा
भेल अछि जन-जन हृदय - सुखवर्द्धिनी

कृषकबाला धान्य - शोभित - खेतमे
घूमि मधुमय कल्पना साकार कय
उमगि नव अनुराग - पूर्ण - रागिणी
गावि दूर करैछ मनक विषादकें

शरद सुखकर ऐल भूपर देखि कय
सुमन जनगण हंस मानस छोड़ि प्रिय
आबि निर्भय नीर - क्षीर विवेकमे
लग्न सुखसँ भय रहल अछि मोदसँ

देखि आनक सुख शिखण्डी द्वेषसँ
जरि शरीरक पाँखि फेकय नोचि कय
किन्तु ककरो क्रन्दने किछु होइछ की ?
काल अछि बलवान अति संसारमे

रहय जे स्रोतस्विनी उन्मादिनी
घन-पटल निज पृष्टपोषक देखि नहि
अपन मायाजाल सकल समेटि कय
भेल निर्मल वारि लय पथगामिनी

अखिल पाटलिपुत्र अछि वासी सुखी
मुक्त देशक आपदासँ मोदमे
राहु - मुखसँ मुक्त - चन्द्रक ज्योतिमे
प्रेमसँ मनबैछ उत्सव कौमुदी

मुखर सुमधुर नूपुरक स्वरघातसँ
राजपथ - बीथी - गली - अट्टालिका
श्रवण कय आदर्श रूपक रागिणी
मुदित जनसमुदाय परमानन्दमे

अगर–चंदन – सुरभि-सिक्ता - मेदिनी
अति सुसज्जित अखिल जन-आवासमे
माल्य–पूरित हरित–कदली–स्तम्भसँ
द्वार बंदरवार पल्लव बंधसँ

एम्हर जन समुदाय हास–विलासमे
मग्न अछि सर्वांशतः परिपूर्ण बनि
किन्तु मोदक जन्मजाता विप्र क्यो
छथि कतहु बैसल परस एकान्तमे

सघन वनमे, दूर जनपद नामसँ
गगन - चुम्बी पीपरक तरु छाँहमे
पाथरक चट्टान – निर्मित पीठपर
पूर्ण त्यागक रूप धयने वस्तुतः

निबिड़तम तम – तोममे आसीन भय
देखि पाटलिपुत्रकेर सुख - सम्पदा
बेर - बेर तकैत छथि जन–मार्ग दिस.
बदनपर अछि दृश्य घोर गंभीरता

किछु क्षणान्तर राजकीय सुवेषमे
अति सुसज्जित राज-परिकर संग लय
सेल्युकस सकलत्रके बन्दी बना
आबि पहुँचल चन्द्रगुप्त महामना

देखि गुरुमुख-मण्डलक गम्भीरता
चन्द्रगुप्त हृदय कम्पित भेल किछु
ऐल हर्षक काल अति सौभाग्यसँ
किन्तु गुरु छथि लीन कोन विचारमे ?

कोन भावी योजनापर चिन्तना
कय रहल छथि आर्य चिन्तित वेषमे ?
सोचि मन-मन म्लान-मुख पद-पद्ममे
जा झुकल अति नम्रता-श्रद्धा-सहित

देखि सभ दिस मर्मवेधी दृष्टिसँ
सभक बैसक हेतु कहि संकेतसँ
शून्यनभमे तीक्ष्ण दृष्टि-क्षेप कय
वाजि उठला नीतिमय वचनावली

मागध ! राज-सिंहासन यद्यपि विविध विभव सुखदाता
गौरव-निष्ठ अतुल्य लोकमे जीवन-भाग्य - विधाता
सभसँ पूज्य श्रेष्ठपद सभसँ सभक उच्च अधिकारी
जन-जीवन-सर्वस्व विश्वमे लोक-द्वय हितकारी
हितहु किन्तु सर्वगुण-भूषित कंटक-युत पथ वाला
जतय दुःख पग-पगपर भयकर, विघ्नक वारिद माला
राजधर्म अति विकट विश्वमे पालन करथि विवेकी
रहय नाम युग-युग धरि जगमे करथि काज जँ नेकी
चाहय राजसिंहासन सुरपुर – सिंहासन वैसावय
चाहय रौरव नरक लोकमे नरकें शीघ्र पठावय
शासक होइछ न जन्म-जात क्यो, नहि अदृष्ट फल-भोगी
राज - नीति - दृढ़-पथ - अनुगामी सतत कर्म कर योगी
जनतासँ विश्वास-प्राप्त - नर शासन-सूत्र सम्हारय
जन - हितकारक-कार्य - ब्यूहसँ जतमर्यादा पालय
पुत्र-प्रजामे भेद न मानग, देशक भाग्य-विधाता
मेघ गगनसँ ऊँच नीचपर हो समान रस-दाता
शिर-सम सभसँ ऊँच बैसि, सभकें समान कय मानय
जन-समाजकेर अंग-अंगकें निज सम्बन्धी जानय

मुँह-सम सभसँ ग्रहण करय फल, उचित भाग कय बाँटय
नहि ककरो किछु राग द्वेष वा काट-छाँटसँ छाँटय
चर्म-चक्षु रहितहुँ शासक नित चार-चक्षु बनि देखय
षड् गुण, तीन शक्तिसँ पूरित राज्योन्नति अवलोकय
दृढ़ कय निज पंचाग, स्वार्थ तजि, बनय प्रजा-हितकारी
शास्त्र, शस्त्र, नय-पथ-अनुगामी अरिपक्षक संहारी
ग्रहण करय कर नृपति प्रजासँ प्रजा - वर्ग सुखकारी
यथा सूर्य जल खीचि धरासँ बरिसाबय सुखकारी
राजकर्मचारीसँ सदिखन बनय प्रकट विश्वासी
गुप्त रूपसँ, किन्तु सभक गतिसँ नहि बनय उदासी
सभसँ सुनय धैर्य—पूर्वक नृप, करय उचित निजमनसँ
मुनय मंत्रणा धचित रूपसँ मंत्री श्रेष्ठ सुजनसँ
इष्ट - मित्र - अरि - प्रिय सम्मानी, साधु-असाधुक ज्ञानी
अहंभावसँ दूर, अतिथि-प्रिय, निज पौरुष-बल-मानी
शत्रु - पक्षसँ सावधान रहि, निज बल-वीर्य बढ़ाबय
पाबि सुअवसर गुप्त प्रकट वा घातसँ बाज न आबय
अरि क्यो रहय पैघ, लघु, सभ वा सभ समान कय मानय
पठा गुप्तचर गुप्त - रूपसँ बल-बैभव अनुमानय
साम, दाम ओ दंड-नीतिसँ भेद करय अरि दलकेँ
रहय मुदित जे जाहि प्रकारेँ करय मुदित निज बलकेँ
ईति-भीतिसँ प्रजा-वर्ग हो जाहि राज्यमे रक्षित
सुख-सम्पन्न, समुन्नत, निर्भय, फल पबैत हो बांछित
देहिक-दैविक-भौतिल-ताप न प्रजा-वर्गमे व्यापय
सभ राहि निज मरजादक सीमा, निज उन्नति पथ नापय
सभ क्यो रटय सगुण गुण-भूषित, सभ समृद्ध, सभ ज्ञानी
अनुशासन-अनुबद्ध सकल जन, करय न क्यो मनमानी

बलसँ इन्द्र, प्रभासँ दिनकर, वज्र समान सुदृढ़ता
सुनि शासककेर धैर्य पराक्रम, छोड़य अरिगण दृढ़ता
कालायस–कर्कश, अतिशय मृदु कुटिल करेज जकर हो
राजनीतिकेर अधिकारी ओ पौरुष जकर प्रखर हो
राजनीति-पथ खड्गक धारा विकट भयावह भारी
चूकि जाय तऽ जाय रसातल नहि तँऽ अछि सुखकारी
राजनीति-तरु शोणित-जलसँ सिंचित होइछ सदिखन
बलिदानक उर्वरक प्राप्त कय फड़य फुलाय विलक्षण
शासक जनतासँ निर्वाचित हो यदि स्वेच्छाचारी
नहि सुख-दुख देखय जनताकेर करय उपद्रव भारी
सहन-शक्तिसँ बाहर जैखन पड़य अनीति प्रजापर
पजरय क्रोधानलकेर ज्वाला प्रजा-हृदय-वसुधा पर
तखन होइछ दुर्गति जे भूपक, वर्णन तकर करत के ?
महानन्द-कुल पितर-प्रेतकेर तर्पण श्राद्ध करत के ?
चन्द्रगुप्त ! हम कहलहुँ जे किछु अनुचित-उचित विचारू
मनमे राखि सदैव शांतिसँ शासन - सूत्र सम्हारू
बन्धनसँ निर्मुक्त सेल्युकसकेँ कय द्विज निज करसँ
बजला–सुनू मगधेश एखन करु कर्ष-त्याग अन्तरसँ
एकबेर अपराध क्षमा कय, मुक्त करू अपराधी
दय परिचय आर्यत्वक नरपति छाड़ू द्वेष उपाधी
शरणागत जनकेर सुरक्षा सभ दिन कयलक भारत
तँऽ औखन फिरि जाथु सेल्युकस नहि क्यो दोष उचारत

भेल प्रतिज्ञापूर्ण हमर ओ
फूजल शिखा बन्है छी
ई कहि बान्हि शिखा निज मत्ये
कहलनि आब चलैछी'

★

एगारहम सर्ग

छीनि नन्दसँ राजसिंहासन प्रजा-वर्ग-भयकारी
मौर्यवंश-अवतंस चन्द्रकेँ बना राज्य-अधिकारी
जे निज नीति-मार्गसँ कयलनि सभ अशक्यकेँ शक्य
दृढ़-प्रतिज्ञ जगसँ पूजित-पद धन्य-धन्य चाणक्य

✱

जय हो प्रबल-पराक्रम-प्रेरित शक्तिमान जन-बलकेर
कर्मवीर, दृढ़-पथ-अनुगामी दुर्जन, यशी सबलकेर
देश-धर्म-रक्षाहित मरणक करथि सतत सत्कार
कुटिल-कटारक तीक्ष्णधार चढ़ि, हँसि-हँसि उतरथि पार

पद-गौरव, मद–लेश मात्र नहि हृदय-मूलमे जनिका
करथि काज कर्त्तव्य जानि निज हेरथि नहि फलकणिका
रहितहुँ माया बीच, जगतसँ रहथि सदा निर्लेप
तप्त विश्वकेँ बचन सुधासँ सदिखन देथि प्रलेप

परिवर्तित हो विश्व, धरातल धसय. न कनिको क्षोभी
स्वर्ण-राशि पदतल हो शुंठित, किन्तु सदा निर्लोभी
विघ्न–व्यूह-गढ़ पर साहससँ बढ़थि वीर निर्भीक
कोटि यत्न अवरुद्ध नीति–बल चलबथि लक्ष्य सटीक

करमे राखि असीम शक्ति, जानथि ससीम जे भूतल
जनिका भयसँ होइछ प्रकंपित निशिवासर दिग्गजदल
बाधा पदतल चूमि प्रणतिसँ जनिका दैछ गुमान
धन्य धीर ओ धराधामकेर सत्य श्रेष्ठ वरदान

जे समर्थ रहितहु शासनमे छथि शासक निर्माता
लड़ि निर्भय आपत्ति-जालसँ बनथि आनकेर त्राता
भृकुटि भंगिमा देखि कालगति होइछ ठाढ़ कर-जोड़ि
जे निज पौरुषसँ सकैत अछि सृष्टि-चक्रकेँ मोड़ि

देथि अकिंचनकेँ सिंहासन, शासक करथि भिखारी
वाणी जनिकर महाक्रांतिकेर एकर उग्र चिनगारी
जनिकासँ पाबय मानवता नित्य नवल-आलोक
मानि जनिक नैतिक मर्यादा सुखमय होइछ त्रिलोक

छीनि नन्दसँ राज-सिंहासन प्रजा-वर्ग-भयकारी
मौर्यवंश अवतंस-चन्द्रकेँ बना राज्य अधिकारी
जे निज नीति-मार्गसँ कयलनि सभ अशक्यकेँ शक्य
दृढ़-प्रतिज्ञ जगसँ पूजित-पद धन्य-धन्य चाणक्य

कटि-तटमे कौपीन, काँखतर कृष्णसार मृगछाला
करमे दर्भ, कमण्डलु राजित, गर रुद्राक्षक माला
जटाजूट, चन्दनसँ चर्चित, भाल स्वयं-प्रभ वेश
एखन चलल छथि जन्मभूमिमे बितबय जीवन शेष

वैह विप्र, जे रहथि चालि धरि महा-क्रान्तिकेर नेता
जीर्ण शीर्ण जगतक संहारक, नूतन विश्व-प्रणेता
मगध चन्द्रकेँ काटि गगन-गत कुटिल राशि ग्रहकेतु
एखन चलल छथि अन्वेषक बनि शान्तिसुखार्थ सहेतु

गुरु-सम्पर्क विरहसँ विरहित, व्याकुल बनल हृदयसँ
ठाढ़ जोड़ि युगपाणि मगधपति सम्मुख विपुल विनयसँ
चाहय मनसँ जाथु न गुरुवर मिथिला जन्म-प्रदेश
सुरसरितट उपवनमे बनवथु साधन हेतु निवेश

छोड़ि कूटनीतिक मर्यादा शान्ति-सत्य-शुभ-कामी
बनि सम्बन्ध-विहीन सिरबसँ, सुगम-धर्म-पथ गामी
दृढ़प्रतिज्ञबनि, जखन चललछथि रोकि सकतके लोक
मनमे हो ककरो सुखदुख, क्यौ बनय सशोक, विशोक

सान्ध्य-गगन-गत अस्त होइतरवि रोकथि नहि निज रथकेँ
किछु घटना घटि जाय पलटि नहि ताकथि पाछाँ पथकेँ
सतत अग्रसर हैब जकर अछि निर्धारित पथ-लक्ष्य
छेकि सकय नहि बाट तकर बहु-बाधा, विघ्न अलक्ष्य

राहु-ग्रास बनितहुँ, रजनीपति आगत संकट जानि
छाड़ि बाट अन्यत्र जाथि नहि, निर्भयता मनःमानि
मरय मनस्वी बरु नहि छोड़य अपन अटल सिद्धान्त
बदलय विश्व, टरय धरणीधर, होइछ नहि उद्भ्रान्त

दिनकर–किरण ससरि अम्बरसँ पसरय जखन धरापर
बूझय नहि के हैत सुखी वा पड़त दुःख ककरापर
तहिना दृढ़–नर करथि काज जे सोचि नीक अथलाह
छोड़थि तन–मन–धन वैभव, नहि मोड़थि अपन प्रभाह

यात्रापर तत्पर छथि गुरुवर सुनि सभ व्यग्र हृदयसँ
दौड़ल दर्शन हेतु नागरिक भरल प्रेम संशयसँ
कखय जाइ छथि, कोन कारणेँ, एहि सभसँ अनजान
रहितहुँ करय ऐल छथि गुरुकेँ विदाहेतु सम्मान

कय पूजा, गुरु चरण-कमलमे शास्त्र विहित बहु-विधिसँ
भरल सभा बैसल अपूर्व ई जनता जन-प्रतिनिधिसँ
तैखन पहुँचल द्वारपाल, झुकि करइत उचित प्रणाम
जय–जय जय हो मगध नृपतिकेर पढ़इत सूक्ति ललाम

सिंहद्वार पर ठाढ़ दूत अछि किछु उपहार सजौने
ग्रीक–राज-सेनापति प्रेषित मन सद्भाव बनौने
फिरय देश दिस मुँह बिचकौने करय कि सभा-प्रवेश
दर्शनकेर अवसर दी की नहि? जे भेटय आदेश

गुरु-मुख उन्मुख होइत मगधपति बजला विपुल विनयसँ
यद्यपि दूतक गति अबाध अछि सम्मत शास्त्र सुनयसँ
तदपि बुझथि गुरुदेव उचित यदि दूतक सभा-प्रवेश
तँ आबय ओ दूत सभामे सुनबय निज सन्देश

चन्द्रगुप्त सभ तरहेँ यद्यपि कुशल राज्य-अधिकारी
शास्त्र-शस्त्र-धन-जनसँ पूरित, नीति-निपुण-व्यवहारी
तदपि सभामे उचित विहित ई देखि अपन मर्याद
बजल अति हर्षित मन गुरुवर करइत दूत विवाद

सत्ये दूतक गति अबाध, अछि रहय मित्र अरि सभ क्यो
चाही सुनक समाद पूर्णतः इष्ट, अनिष्ट, विषम क्यो
ज्ञात हैत दूतहिँसँ अरि-दल-मानसकेर जे भाव
लय मैत्री-सन्देश ऐल की पूर्ण शत्रुता-भाव

पहुँचल तखन सभामे विस्मित, उत्सुक ग्रीक-निवासी
अति अनुशासन-शील-वन्दना करइत विनत प्रवासी
छल विचित्र परिधान पहिरने अति विचित्र परिवेश
चकित भेल किछु देखि सभाकेर अनुपम विभव निवेश

मध्यासनपर सुरपति बैसल छथि की साज सजौने?
उच्च मंचपर दहिन कातमे सुरगुरु पूज्य बनौने?
बैसल छथि सुरराज-निमन्त्रित की सभ देव समाज!
जुटल सुधर्मा अतिशय हर्षित करय मंत्रणा काज?

नभ मंडलकेर मध्यभागमे की मृगांक शुभ लक्षण?
छथि नक्षत्र समाजक सगहिँ बैसल परम विलक्षण
पूज्य वशिष्ठ वरासन शोभित तेजस्वी गुणवान
पूजा पावि शान्तमन बैसल छथि की सन्त महान?

ग्रीकराज - सेनापति-प्रेषित साजल सोनक थारी
हरितवर्ण बहुमूल्य बस्त्र सँ झाँपल नव उपहारी
देखि सभासद उत्सुकतावश व्याकुल भेल समग्र
बनल मगधपतिओ मनमनसँ किछु शंकित किछु व्यग्र

राखि दूतवर थारी करसँ बाजल बाध्य विनयसँ
सभहक काटि हृदयगत संशय भरम चातुरीनयसँ
राजन! द्वेष बिसरि पहिलुक सभ, ग्रहण करू उपहार
दुहू व्यक्ति अतिशय आनंदित राखि स्नेह व्यवहार

युद्ध-भूमिमे युद्ध-कला, पौरुष, बल, निर्भयतासँ
संचालन निज सैन्य व्यूह ओ जाग्रत तन्मयतासँ
देखि अहाँकेर धैर्य सम्पदा बाहुल मंत्र प्रमाण
मुग्ध भेल छथि पूर्ण रूपसँ सत्ये हमर प्रधान

एहन व्यक्तिसँ थिर कय राखल उचित स्नेह अनुबन्धन
सोचि अहाँकेर भाग्य सम्पदा, कय मनसँ अभिनन्दन
कन्यादानक हेतु समर्पित छथि कयने उपहार
ग्रहण करू सभ छोड़ि शत्रुता, कय द्वेषक निस्तार

क्षण भरि स्तब्ध सभासद बैसल रहल भरल बिस्मयसँ
उचित, विहित क्यो बाजि सकल नहि मन शंकित संशयसँ
पहिल शत्रु, दोसर परदेशी, तेसर प्रकट बिजाति
ग्रहण हैत सम्बन्ध कोना ई फिरय विवाहक पाँति

बूझि सभक मनभाव, विवादक छाया देखि सदनमे
बजला गुरु चाणक्य सोचि किछु दृढ़ता दैत वचनमे
करथि नाश रवि तिमिर पुंजकेँ जहिना प्रात:काल
शंका-संशय छेदि समाजक ज्ञान दैत तत्काल

सुन औ सज्जनवृन्द ! सूचित बनि समयोचित ई निश्चय
ग्रहण करथु उपहार महीपति छोड़ि-द्वेष-संशय-भय
ई अपूर्व संयोग प्राप्त अछि, हैत राष्ट्र उपकार
नव्य-भव्य भवितव्य रहल कहि पूर्वहि उपसंहार

प्राप्त भेल अछि स्वर्ण सुअवसर उभय राष्ट्र जनता हित
ईशक आशीर्वाद भेटल अछि जगसे मानवता हित
छोड़ि संकुचित भाव, हृदयकेँ वना उदार महान
सकल सभासद प्रेम-भावसँ आज्ञा करथु प्रदान

युगल सभ्यता, युगल सुसंस्कृति, युगल समाजक मिश्रण
युगल देश वासी जनताकेर प्रेम-पूर्ण अनुबन्धन
भाषा, भाव, प्रभाव परस्पर कय आदान-प्रदान
उन्नपत-शील बनत शीघ्रहिँ ई भारत ओ यूनान

युगल वक्षकेर निर्बल शाखा जखन सटैछ परस्पर
लय नवीनता, किछु विशेषता बृक्ष होइछ ओ तेसर
दुहू देश तहिना यदि मिलिकय करय प्रेम-विस्तार
रहत दुहू अतिशय आनन्दित, हैत राष्ट्र-उद्धार

एहि तरहेँ संसार अखिल यदि आगू पैर बढ़ाबय
छोड़ि कर्ष निज-निज अंतरसँ प्रेमक ज्योति जगाबय
तैखन प्राप्त करत जगतीतल जन-जीवन-कल्याण
निखिल-विश्व-बन्धुत्व—भावना पसरल दिव्य-महान

सीखय किछु यूनान आर्यसँ, किछु सिखबय यूनानी
नहि सभकिछु सभक्यो जनैछनर, रहितहुँ अनिशयज्ञानी
सहयोगी बनि एक-एककेर करय राष्ट्र निर्माण
उभय परस्पर सहृदयतासँ पाबय अति सम्मान

जाति कुजाति विजाति युगक अनुरूप बनैछ विलक्षण
सभ दिनसँ होइत आयल ई जगतीमे परिवर्त्तन
विबिध जाति पचि गेल आर्यमे, साक्षी अछि इतिहास
एहि सम्मिश्रणसँ समाजमे नूतन होइछ विकास

आर्य-सभ्यताकेँ महान ऋषिगण छथि पूज्य बनौने
गञ्य न कुम्हरकेर बतिया सम आङुर मात्र धुऔने
अछि विशालता जकर विश्वमे विस्तृत व्योम समान
दाबि सकत मरजाद तकर की क्यो लघु पैघ महान

तँ निश्शंक भावसँ नरपति-परिणय हेतु सुलक्षण
लग्न ताकि पठबथु अति शीघ्रे, करथु न खण्डन-मंडन
मगधराजकेर नीब सुदृढ़ बनि, चलत एखन पाताल
देखि रहल छी हम अदृष्टमे राष्ट्रक उन्नत-भाल

वेस, आब हम चली, हर्षसँ शासन सूत्र सम्हारू
निष्कटक बनि शत्रु-पक्षसँ जनहित काज विचारू
प्रजा-वर्ग संतुष्ट, समुन्नत रहय करब ओ काज
होइछ नृपति-अनुल संचलित सतत सुराज-कुराज

हाथ जोड़ि, अतिशय विनीत बनि, बजला मगध-नियंता
बनल सुखी छी हमसभ मनमे, रहल न आब सिहन्ता
युग-युग रहत ऋणी अपनेसँ स्थापित मगधक राज
मुक्त सकत भय नहि त्रिकालमे मागध प्रजा समाज

मानवताकेर चीर चिरतर बाँचल निष्कासनसँ
मुक्त भेल छथि राष्ट्र-द्रौपदी जारज दुश्शासनसँ
रहल न पाप-ताप जनतामे, ससरल विषम विलाप
पसरि रहछ प्रतिक्षण घर घरमे सुख सोहाग संलाप

यद्यपि भेल असंभव संभव नाश भेल अन्यायी
स्थापित भेल मगधमे शासन प्रजा-बर्ग-सुखदायी
विस्तृत हैत एतहिँसँ जगमे नूतन-ज्योति-वितान
किन्तु विश्व चाहय अपनेसँ किछु उपकार महान्

धन-वैभव, सुखधाम-धरा जगतीतलमे क्षण-भंगुर
चाही एहन वस्तु जे जगमे युगयुग रहय अभंगुर
जन साधारण रहय सुखी नित, पाबय नूतन ज्ञान
एहन वस्तु भेटय अपनेसँ हो जन-जन कल्यान

किछु क्षण सोचि मनहिमन थिर कय, कहलनि गुरु उन्मतसँ
सुनु मगधेश ! एखन छी हम किछु क्लान्त भ्रान्त तनमनसँ
किछु दिन करब शान्त-मिथिलामे, शान्ति-पूर्ण विश्राम
बनि सम्बन्ध-विहीन विश्वसँ, ईस-लग्न निष्काम

किन्तु समस्या जटिल एक अछि व्याप्त सकल जनमनमे
अर्थ व्यवस्था विषम विश्वकेर पसरल जन-जीवनमे
जाधरि नहि ई हैत नियंत्रित नियमितराज प्रमाण
दूर रहत ताधरि जनताकेर जीवनसँ कल्याण

न्याय, अर्थं सम्मान, सुरक्षा, निर्भयता जनताकेर
जगतीमे कल्याण-राज्य ई सुखकर मानवताकेर
तँ अर्थक सम्बन्ध राज्यसँ चाही युग-अनुरूप
सर्व-सुलभ, जन-जन उन्नायक, अति-दृढ़ विमल, अनूप

राजनीति ओ अर्थ - शास्त्रमे अछि सम्बन्ध परस्पर
अर्थ-व्यवस्था-अंकुश वश नृप होइछ नित्य जन-हितकर
घमि रहल ई वस्तु चित्तमे कय किछु अनुसंधान
सोचि रहल छो, करब-लोकहित अर्थशास्त्र-निर्माण

मानि ईश-आदेश नियंत्रित-शासन सूत्र निर्माण
संचालन: करु प्रेम भाव ओ प्रबल आत्म-संयमसँ
देखु सफलता प्रभु सर्वेश्वर हो जनसँ जयनाद
निशिदिन हो कल्याण हमर अछि ई शुभ आशीर्वाद

एहि तरहेँ गुरुदेव बाजि उठि धयलनि बाट विजनकेर
उठल सभासद होइत व्यग्रअति सफल करय लोचनकेर
अनियंत्रित बनि गेल क्षणहिमे लोकक व्यूह अपार
देखि पूर्ण-विधु होइछ तरंगीत जहिना पारावार

शोक-मग्न सभलोक नोरसँ भीजल कोर नयनकेर
अछि जिह्वा असमर्थ रहल नहि संभव शब्द चयनकेर
अन्तर्हृदय विरहसँ विगलित, बाहर प्रेम प्रवाह
मंचल द्वन्द्व अछि मन मन्दिरमे ऊपरसँ उत्साह

छथि आगाँ गुरुदेव शान्त-मन, पाछाँ नगर-निवासी
बढ़ल जा रहल जन-समाज अछि गुरुकेँ करय प्रवासी
बुझि पड़ैछ शान्त-रस संगहि बहल करुण रसधार
किंवा श्वेत सरोरुह चौदिस बरिसल शुभ्र तुषार

ठाढ़ होइत फिरिकय जन-सम्मुख परम प्रफुल्लित मनसँ
कहलनि गुरुवर दैत सान्त्वना नगर निवासी जनसँ
मानि हमर आदेश अहाँ सभ करु नगर प्रस्थान
करब काज ओ जाहि प्रकारेँ बाँचि सकय सम्मान

नृपति-प्रजामे पिता-पुत्र-सम चाही प्रेम परस्पर
सभ क्यो रहय सुखी सम्मानित मर्यादाक अभ्यन्तर
मातृ-भूमि-सम्मान - सुरक्षाकेर राखि समभार
छोड़ब तन बरु, नहि छोड़ब ई जन्म-सिद्ध-अधिकार

झुकल माथ गुरु-चरण-कमलमे चन्द्रगुप्तकेर सत्वर
सुनि गुरुवर आदेश लोककेर थम्हल पैर-गति गत्वर
बार-बार आशीष दैत गुरु कयलनि बिजन प्रवेश
मन मसोसि कय रहल लोक सभ, जनता सहित जनेश

रहल मूर्ति गुरुदेवक सम्मुख लोक नयनकेर जाधरि
अपलक टक सभ रहल देखितहिँ श्वाससाधि कय ताधरि
चन्द्रगुप्त अतिआर्त्त हृदयसँ बनल विगत-उत्साह
बाजि उठल संतप्त होइत अति, नोरक रोकि प्रवाह

छोड़ि मगध, गुरुदेव गेल छथि जन्मभूमि पावनहित
छोड़ि गेल छथि नव्य-भव्य-पथ किन्तु लोक-जीवनहित
हुनक पजारल अछिजे अति-लघु जगमग ज्योति मशाल
हमर सभक कर्त्तव्य कि सभ दिन करय प्रकाश विशाल

सीखि गुरुसम लोह - पुरुष - दृढ़ता हम जीवनमे
रहितहुँ विघ्न हजार माथपर भय लाबी नहि मनमे
करी स्वपौरुष-बलसँ हँसि-हँसि बाधा केर आह्वान
मसलि विकट कंटकके नित-प्रति नूतन-पथ-निर्माण

चाही यदि गुरुवरक प्रतिष्ठा जगमे रहय प्रतिष्ठित
आर्य-राष्ट्र-धर्मक ई गौरव सभदिन रहय अखंडित
तेँ सभ मिलि श्रद्धा समेत नित गुरुदेवक आदेश
पालन करु, निज तन-मन-धनसँ अछि ई हमर निदेश

नृपनि प्रजा परिजन पुरवासी बान्हि प्रेम बन्धनमे
छाड़ि द्वेष ईर्ष्या कटु भाषण दृढ़तम करी गठनमे
मानवताक करी मर्यादा, मनमे राखि ममत्व
श्रेय-प्रेय पाबी नित जगमे, बिश्वक बढ़य महत्व

मेटय दंभ द्वेष-पाखण्डी भेटय नहि अज्ञानी
अत्याचारक सर्बनाशहो बढ़थि सुभग जनज्ञानी
सभ क्यो रहय सुखी तन-मनसँ सतत समुन्नत लोक
करथु ईश कल्याण विश्वकेर जन-जन बनय अशोक

★★

मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra,

Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was often felt that books in Maithili are not widely available despite huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu Keshi Mishra, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Mahamahopadhyaya Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy, dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society that was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com

९

॥ श्री ॥

॥ विज्ञापन ॥

मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक–

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय. एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो. तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो। (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय। एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि। ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहेबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि। बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासद्गणमें छथि।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा।